सस्ता साहित्य प्रकाशन

प्रकाशकीय

इस पुस्तक की लेखिका श्रीमती कृष्णा मेहता मुजफ्फराबाद के तत्कालीन जिलाधीश स्व० दुनीचन्द मेहता की पत्नी है। मेहता साहब ने काश्मीर पर कवाइलियो द्वारा आक्रमण के समय वीरतापूर्वक अपना कर्त्तव्य पूरा करते हुए मौत को गले लगाया था और तब उनकी पत्नी और बच्चो को जिस भीषण और मर्मस्पर्शी परिस्थितियो से गुजरना पडा था उसीका निष्पक्ष वर्णन लेखिका ने किया है। श्रीमती मेहता लेखिका नहीं है परन्तु घटनाओ की तीव्रता ने उनकी लेखनी मे वह शक्ति भर दी है कि शब्द स्वय बोल उठते है। उन्होने जहा मनुष्य के भीतर जागते हुए राक्षस को देखा है वहा शैतान के भीतर शिव के दर्शन भी किये है और दोनो का समान भाव से वर्णन किया है। यह लेखिका के निष्पक्ष दृष्टिकोण का प्रमाण है।

इस पुस्तक मे केवल रोमाचकारी घटनाओ का वर्णन ही नहीं है, बल्कि एक इतिहासकार के लिए तथा राजनीति के उस विद्यार्थी के लिए, जो काश्मीर के प्रश्न की निष्पक्ष जाच करना चाहता है, बहुमूल्य और प्रामाणिक सामग्री भी है।

सर्वश्री विष्णु प्रभाकर तथा शम्भूनाथ भट्ट ने इस पुस्तक के संशोधन और सम्पादन मे योग दिया है इसलिए हम उनके आभारी है।

दूसरा संस्करण

काश्मीर के सबध मे अबतक जितनी सामग्री प्रकाशित हुई है, उनमे यह पुस्तक सबसे अधिक लोकप्रिय हुई है। उर्दू मे भी इसका अनुवाद निकल गया है। पुस्तक का नया सस्करण पाठको के आगे उपस्थित करते हुए हम आशा करते है कि पाठक इसका अधिक-से-अधिक लाभ लेगे। पुस्तक के अत मे कुछ और सामग्री जोड़ दी गई है, जिससे यह प्रकाशन अब अधिक पूर्ण और उपयोगी बन गया है। मूल्य भी कम कर दिया गया है।

—मत्री

विषय-सूची

काश्मीर पर हमला

: १ :

तूफान से पहले

काश्मीर के पश्चिमोत्तर म सीमा के समीप मुज़फ्फरावाद का प्रदेश है। कबाइली हमले से पहिले यह रियासत काश्मीर का एक जिला था। यह छोटा-सा प्रदेश पर्वतो से घिरा हुआ और हरा-भरा है। इसके वीच से कृष्णगगा नदी वहती है। यहा के लोगो की वेश-भूषा पजावियो से मिलती-जुलती है। यहा के लोग मेहनती और सरल हैं—प्रकृति के नियम के अनुसार धनवान भी है और निर्धन भी। इस देश के लोग—अधिकतर—देखने मे सुन्दर और सुडौल हैं। यहा से एक रास्ता रावलपिडी को जाता है और दूसरा एवटावाद, ज़िला हजारे को। ये दोनो स्थान पाकिस्तान मे है। रियासत काश्मीर की ओर से यहा एक वजीर-वज़ारत (जिलाधीश) और कई अफसर—सवजज, असिस्टेट इन्स्पेक्टर पुलिस, इजीनियर, असिस्टेट सर्जन तथा जगलात का डिविजनल अफसर—हुआ करते थे।

मै जिन दिनो की वात लिख रही हू वह भारत विभाजन के वाद का समय था और उन दिनो शासन की ओर से यहा एक फौज का कर्नल और उसके साथ फौज की एक टुकडी भी थी।

जुलाई सन् १९४७ मे मेरे पति श्री दुनीचन्द मेहता को काश्मीर सरकार ने मुजफ्फरावाद वजीर-वज़ारत बनाकर भेजा। श्रीनगर मे वह असिस्टेट गवर्नर के पद पर थे। वह जुलाई मे ही अपना नया पद सम्हालने के लिए श्रीनगर से मुज़फ्फरावाद गये। मै उस समय साथ जा न सकी, क्योकि हमारे यहा वहुत से अतिथि आये हुए थे। एक मास पश्चात् वे किसी सरकारी काम से श्रीनगर आये और वापसी पर वच्चो को साथ लेते गये। मुझे दो-तीन दिन के परचात् आने को कह गये क्योकि

हमारे अतिथि भी दो-तीन दिन बाद जानेवाले थे। मुजफ्फराबाद पहुचते ही उन्होंने एक कर्मचारी को मुझे लेने के लिए भेजा, ताकि रास्ते मे मुझे कोई कष्ट न हो।

एक सप्ताह के पश्चात् मै भी मुजफ्फराबाद चली गई। मै वहा पहुची जरूर, किन्तु इस बार मुझे वहा कुछ अच्छा-सा न लगा। यह मै नही जानती थी कि बात क्या है। कोई अपरिचित जगह भी तो नही थी। हम वहा चौथी बार गये थे। परन्तु न जाने क्यो इस बार मुझे वहा हर चीज से डर-सा लग रहा था। मै हैरान थी कि बात क्या है। दिल इतना उदास रहा कि श्रीनगर से साथ लाया हुआ सामान तक भी मैने पूरा न खोला, कुछ आवश्यक चीजे ही खोलकर उपयोग मे लाती रही। शेष सब-बधी-की-बधी रखी रही। जी चाहता था कि कही दूर भाग जाऊ। बातो-ही-बातो मे मै उनसे (श्री मेहता से) अक्सर कह भी देती थी कि हमे कहीं जाना है, यहा नही रहना है। इस कारण मै सामान नही खोलूगी।

मेरे पति उन दिनो काम मे इतने व्यस्त थे कि उन्हे बात करने तक का अवसर नही मिलता था। कर्नल के साथ वे कभी एक सीमा पर और कभी दूसरी सीमा पर जाते, गाव-गाव फिरते परन्तु उन्होंने हमे यह कभी नही बताया कि यहा कुछ गडबड होनेवाली है। देखते-देखते हमारी कोठी के सामने वाली पहाडियो पर मोर्चे बनने आरम्भ हो गए। हमारी कोठी एक छोटी से टीले पर थी। उसके चारो ओर काफी खुली जगह थी। उसके बीच मे एक छोटा-सा मैदान और बाग था। बाग और कोठी के चारो ओर लकडी के तख्तो का जंगल लगा हुआ था। हमारी कोठी से थोडी दूर असिस्टेट इन्स्पेक्टर पुलिस की कोठी थी। उस जगह से लगभग दो फरलाग दूर हस्पताल और डाक्टर की कोठी थी। हमारी कोठी के एक ओर कुछ दूरी पर एक मस्जिद थी और दूसरी ओर साथ ही मुसलमानो की एक जियारतगाह के साथ घास और घने वृक्षो से आच्छादित घना जगल था। पहाडी के बीच मे से एक छोटी

सी पगडडी हमारी कोठी को इस ज़ियारतगह
राह से मनुष्यो का आना-जाना कम ही होता
वहा गिद्ध और उल्लू बोलते तो उनकी तलाश
से गुजरते देखे गये थे।

मेरे मुजफ्फराबाद जाने के तीन दिन बाद
आया। हम सबने घर मे व्रत रखा। शाम को मै
लिए मन्दिर मे गई। पूजा की सामग्री और
साथ था। लेकिन जैसे ही वह द्वार पर पहुचा
उसके हाथ से थाल गिर पडा। उसी समय
हो-न-हो कुछ होने वाला है। यह भगवान् ने ख
दिन तक उस घटना का असर मेरे मन पर रहा
कुछ भूल गई। पर उस महीने मे अजीब ही बाते
इतने निकलते थे कि हम उनकी वजह से बेहद
बच्चो के भूलो पर पाये गए तो कभी बैडमिटन
एक दिन तो हमारे यहा सोये हुए दो चपरासि
बडा साप गिर पडा। खैरियत यह हुई कि उस
लगता था कि काल हर तरफ से हमे निगलना
बच्चो सहित नित्य सायकाल को ध्यान से ईश्व
इतना आनन्द आता था कि हर समय भजन मे ही
रहती थी।

मै अपने घर को एक आदर्श गृहस्थी समझती
ऊची नही थी। हमे कितनी ही आर्थिक और दूस
पडी थी, परन्तु गृहस्वामी की सत्यनिष्ठा के कारण
रहते थे। हम जानते थे कि हमारे घर मे ऐसी व
जिसके कारण दूसरो के सामने शर्मिदा होना पड
एक अच्छे पद पर थे, परन्तु हमारा घरेलू-जी
था। हमारे घर मे कभी कोई चीज़ मुफ्त या

र
सारी जनता का होगा
कर्तव्य-पथ से गिरना
हो उठा और उनके
का उत्साह बढाते हुए
रा है। आपको अपने
सहायता करेगे।"
फ्फराबाद सीमा प्रदेश
असुरक्षित था। और
दि तक की व्यवस्था
डर के कारण शहर

लूम हुआ कि यहा
इस बारे मे सब कुछ
छिपाई थी। प्राय
पट मै जानती ही न
उनकी इच्छा या
ने की जरूरत नही
ही समझ जाते थे।
नेवाली तबीयत मे
से बाहर की बातो
थी। यही सोचकर
हो रहे है। परन्तु
ग मे सब्जिया और
था। वह घर की
ऐसी कई बातो

हमारे अतिथि भी दो-तीन दिन बाद जानेवाले थे। मुज़फ्फराबाद पहुचते ही उन्होने एक कर्मचारी को मुझे लेने के लिए भेजा, ताकि रास्ते मे मुझे कोई कष्ट न हो।

एक सप्ताह के पश्चात् मैं भी मुजफ्फराबाद चली गई। मै वहा पहुची जरूर, किन्तु इस बार मुझे वहा कुछ अच्छा-सा न लगा। यह मै नही जानती थी कि बात क्या है। कोई अपरिचित जगह भी तो नही थी। हम वहा चौथी बार गये थे। परन्तु न जाने क्यो इस बार मुझे वहा हर चीज़ से डर-सा लग रहा था। मै हैरान थी कि बात क्या है। दिल इतना उदास रहा कि श्रीनगर से साथ लाया हुआ सामान तक भी मैंने पूरा न खोला, कुछ आवश्यक चीजे ही खोलकर उपयोग मे लाती रही। शेष सब-बधी-की-बधी रखी रही। जी चाहता था कि कही दूर भाग जाऊ। बातो-ही-बातो मे मै उनसे (श्री मेहता से) अक्सर कह भी देती थी कि हमे कही जाना है, यहा नही रहना है। इस कारण मै सामान नही खोलूगी।

मेरे पति उन दिनो काम मे इतने व्यस्त थे कि उन्हे बात करने तक का अवसर नही मिलता था। कर्नल के साथ वे कभी एक सीमा पर और कभी दूसरी सीमा पर जाते, गाव-गाव फिरते परन्तु उन्होने हमे यह कभी नही बताया कि यहा कुछ गडबड होनेवाली है। देखते-देखते हमारी कोठी के सामने वाली पहाडियो पर मोर्चे बनने आरम्भ हो गए। हमारी कोठी एक छोटी से टीले पर थी। उसके चारो ओर काफी खुली जगह थी। उसके बीच मे एक छोटा-सा मैदान और बाग था। बाग और कोठी के चारो ओर लकडी के तख्तो का जगल लगा हुआ था। हमारी कोठी से थोडी दूर असिस्टेट इन्स्पेक्टर पुलिस की कोठी थी। उस जगह से लगभग दो फरलाग दूर हस्पताल और डाक्टर की कोठी थी। हमारी कोठी के एक ओर कुछ दूरी पर एक मस्जिद थी और दूसरी ओर साथ ही मुसलमानो की एक ज़ियारतगाह के साथ घास और घने वृक्षो से आच्छादित घना जगल था। पहाडी के बीच मे से एक छोटी

के आदेशानुसार यहा से बाहर न जाने दू और अपने परिवार को भेज दू। अगर कुछ गड़बड़ी हुई तो जो हाल सारी जनता का होगा वही मेरे बीवी-बच्चो का भी होगा। मै अपने कर्तव्य-पथ से गिरना नही चाहता।" यह सुन मेरा हृदय प्रफुल्लित हो उठा और उनके प्रति श्रद्धा से मेरा सिर झुक गया। मैने उनका उत्साह बढाते हुए कहा, "आपने जो कुछ कहा है, बिल्कुल सही कहा है। आपको अपने निश्चय पर दृढ रहना चाहिए। भगवान् आपकी सहायता करेगे।"

यहा पर एक बात स्पष्ट करने योग्य है कि मुज़फ्फराबाद सीमा प्रदेश होने पर भी शासकवर्ग की लापरवाही के कारण असुरक्षित था। और तो और, समय पर सूचना देने के साधन फोन आदि तक की व्यवस्था नही थी। हा, यह आदेश अवश्य था—लोगो को डर के कारण शहर छोडने नही दिया जाय।

इस समय की बातचीत से मुझे कुछ-कुछ मालूम हुआ कि यहा गडबड होनेवाली है, यह भी शक गुजरा कि वह इस बारे मे सब कुछ जानते है। उन्होने जीवन मे मुझसे कोई बात नही छिपाई थी। प्राय प्रत्येक बात पर वह मेरी राय लेते थे। घर की खटपट मै जानती ही न थी। कभी भी मैने ऐसा कोई काम नही किया जो उनकी इच्छा या आज्ञा के प्रतिकूल हो। उन्हे भी मुझे कभी कुछ कहने की जरूरत नही पडी थी। हम एक दूसरे की भावना इशारो-इशारो मे ही समझ जाते थे। लेकिन कुछ भी हो उन दिनो उनकी सदा शात रहनेवाली तबीयत मे कुछ झुझलाहट की झलक दिखाई पडती थी। वह मुझसे बाहर की बातो का भेद नही बताते थे। मै भी हैरान और परेशान थी। यही सोचकर चुप रहती थी कि काम की अधिकता के कारण वह ऐसे हो रहे है। परन्तु एक ओर तो यह हालत थी, दूसरी ओर वह अपने बाग मे सब्जिया और फूल लगवा रहे थे। उन्हे इन बातो का बडा शौक था। वह घर की खाने-पीने की चीजो मे बडी दिलचस्पी लेते थे। मुझे ऐसी कई बातो मे उनसे काफी सहायता मिलती थी।

२१ अक्तूबर, १९४७ को हमारे यहा रात के समय फौज के कर्नल और कैप्टिन आदि की दावत थी। उस दिन थोड़ी-थोड़ी वर्षा हो रही थी और इस कारण कुछ-कुछ सर्दी भी थी। रात के दस बज गये पर वे लोग खाने पर नही आये। सब पास ही की पुलिस सुपरिन्टेंडेंट की कोठी मे बैठे हुए थे। खाना मैंने खुद पकाया था। मैंने बुलावा भेजा। जवाब मिला कि कैप्टिन कही जीप पर गये है, उनके आने पर खाना होगा। ये जाति के मुसलमान थे और सीमा की गति विधि जानने के लिए गये थे। लौटकर उन्होने "सब ठीक है" की सूचना दी। खाना खाकर सभी अपने-अपने ठिकानो पर चले गये।

रात को साढे बारह बजे मेहता साहब अपने सोने के कमरे मे आये। सोये, पर उन्हे नींद नही आई। तब वे सब बच्चो को उठा लाए और लगे सबके साथ रमी (ताश का एक खेल) खेलने। मुझे भी मजबूर होकर खेल मे शामिल होना पडा। फिर उन्होने चाय मगवाई। मै हैरान थी कि ये आज क्या कर रहे है। मेरे न चाहने पर उस दिन उन्होने यह कहते हुए मुझे चाय पीने के लिए मजबूर किया, "देखो, आज मै तुम्हे चाय पीने के लिए कह रहा हू। कल से तुम्हे कोई नही कहेगा, सुना। पीछे पछताओगी।" यह सुनते ही मेरे कलेजे में धक-धक होने लगी। मैंने चाय ली, परन्तु न जाने प्याली मे क्या गिर पडा। मैंने उसे झट फेक दिया और वहमी मनुष्य की तरह उनसे बार-बार पूछने लगी, "आपने अभी यह क्या कहा था।" वे कहने लगे, "कुछ नही, मुह से ऐसी ही बात निकल गई।" थी तो बात साधारण सी और कही भी उन्होने मजाक मे ही थी, परन्तु उसने मेरे हृदय मे तीव्र वेदना पैदा कर दी। मैंने खेल बन्द कर दिया, सबको बद करना पडा। रात काफी हो चुकी थी। सब सोने के लिए अपने-अपने कमरो मे चले गए। कुछ क्षण बाद उन्होने मुझे आवाज दी कि बच्चो को कमरे मे सुलाकर बेबी को मेरे पास ले आओ (बेबी मेरा सब से छोटा लडका है, उसकी आयु उस समय ७ वर्ष की थी)। वह उसे बहुत चाहते थे। मै उसे उठाकर ले

आई और उसे उनकी चारपाई पर सुला दिया। वह सोये हुए बेबी को देखकर कहने लगे, "देखो यह कैसा मस्त सोया पड़ा है।" मैंने इस बात का उत्तर नही दिया। मै उनके उस दिन के विलक्षण व्यवहार को देखकर सोच मे पड़ गई थी कि आखिर ये कर क्या रहे है। कुछ देर बाद देखते-ही देखते वह भी गहरी नीद मे सो गये।

: २ :

तूफान आगया

सवेरे के ५ बजे होगे, अचानक मेरी आख खुली। मैंने सुना गोलियो की भयानक आवाज़ पर्वत की ओर से चट्टानो से टकरा-टकरा कर आरही है। मै झट उनकी चारपाई के पास जाकर उन्हे जगाने लगी, किन्तु वे इतनी गहरी नीद मे थे कि कई आवाजो के बाद जागे। मेरे मुह से अचानक ये शब्द निकले, "हमला होगया, आप उठते क्यो नही" (हालाकि मुझे कुछ खबर नही थी)। उन्होने करवट बदलते हुए कहा, "यह हमला नहीं है। हमारी फौज चादमारी कर रही होगी।" मैंने जल्दी से उनसे पूछा, "क्या रात को कर्नल ने चादमारी के विषय मे आपसे कुछ कहा था?" उन्होने उत्तर दिया, "नही तो।" मैंने हड़बड़ाकर कहा, "तब तो हमला हुआ है। आप उठिए, क्या सोच रहे है?" उन्हे फिर भी यकीन नही आ रहा था। मेरे अनुरोध पर वे उठे और उन्होने बाहर जाकर मैदान मे जो कुछ देखा उससे मालूम हुआ कि गोलिया दनादन हमारी ही कोठी की तरफ आ रही है और लकड़ी के जगले मे टकरा रही है। वह तेजी से आगे बढे। मैंने कहा "आप ज़रा बचकर जाइए, ऐसा न हो कि कही गोली लग जाये।" उन्होने जल्दी मे सक्षिप्त-सा उत्तर दिया, "मुझे गोली नही लगती।" इतना कह कर वह कपड़े पहन बाहर निकल आये।

मै बच्चो को साथ लेकर बरामदे मे आई और गोलियो के आने

वाली दिशा की ओर देखने लगी। हमे कोई आदमी नज़र नही आ रहा था परन्तु गोलियो की बौछार निरन्तर आती दिखाई दे रही थी। कुछ गोलिया जगले के तख्तो को चीरकर भीतर तक आती थी, किन्तु बच्चो के दिल मे जरा भी भय नही था। वे जोर-जोर से हस रहे थे। मैने बच्चो से कहा, "जाकर कपडे पहन आओ, सर्दी लगने का डर है।" रात को कुछ वर्षा हो जाने के कारण सर्दी होगई थी। मेरे दोनो लडके, जिनमे से एक की आयु सात वर्ष और दूसरे की साढे आठ वर्ष की थी, जाकर थोडी ही देर मे कपडे पहन आये। बडे ने बुश शर्ट पहन रखी थी। छोटे ने एक स्वेटर भी पहना हुआ था। नगे पैर वे फिर दौडे-दौडे बरामदे में आये। चारो लडकिया भी पुराने 'पुल ओवर' पहन कर नगे पैर ही तमाशा देखने आई। इनमे एक मेरे जेठ की लडकी थी, जो कुछ समय पहले मेरे पास श्रीनगर आई थी और हमारा तबादला होने पर मेरे साथ यहा चली आई थी। इस चौदह वर्षीय लडकी का नाम स्वदेश था। मेरी बडी लडकी वीना साढे चौदह साल की थी, मझली शीला साढे दस साल की और सबसे छोटी कमलेश साढे नौ साल की थी। ये सब अबोध बालक गोलियो की आवाज पर हस-हस कर लोट पोट हो रहे थे। न जाने क्यो मेरे मन मे भी उस समय अधिक घबराहट नही थी। मैं भी बच्चो के साथ वह दृश्य देखती रही। जब गोलियो का वेग अधिक बढा तब मैने बच्चो से भीतर जाने के लिए कहा पर वे एक न माने, उल्टे मुझे ही डरपोक बताने लगे।

इधर हम इन बातो मे लगे थे, उधर ग्राउन्ड के बाहर सब-इन्सपेक्टर पुलिस तेईस सिपाहियो को साथ लिये मेहता साहब से आ मिला। इन सिपाहियो मे बीस मुसलमान थे और तीन हिन्दू। सब-इन्सपेक्टर स्वय हिन्दू राजपूत था। वजीर साहब को उन्होने बताया कि हमला हो गया है और शत्रु कृष्णगगा का पुल पारकर नगर के समीप आ रहे है। इतने मे वह भीतर आये। मैने उनसे पूछा, "आप दोमेल जाकर फौज क्यो नही बुला रहे है?" वह बोले, "गोलिया

तेजी से चल रही है, कुछ थम जाय तो दोमेल जाऊ। तुम बच्चो का चाय वगैरा तो दो।" इतना कहकर वह फिर तेजी से बाहर निकल गए और उसके बाद वापस नही लौटे। मेरी और उनकी यह अन्तिम मुलाकात और अन्तिम बातचीत थी। हा, बाहर जाते-जाते बच्चो को देखकर बडे जोर से हसे और बोले, "देखो! मेरे बच्चे गोलियो की आवाज सुनकर ज़रा भी नही घबराते, निर्भय होकर हस रहे है। इन्हे ऐसा ही होना चाहिए।"

इस भयानक विपत्ति के समय कोठी के सब कर्मचारी तितर-बितर हो गये थे। मेरे पास केवल मेरा एक नौकर ओमप्रकाश रहा। वह हमारे ही इलाके का था और बडा विश्वासपात्र सेवक था।

हम अब परेशान थे कि क्या करे। नगर मे चारो ओर भगदड मची हुई थी। गोलियो की बौछार, लोगो के चीत्कार और हाहाकार से दिल दहल रहा था। इतने मे बाहर से किसी व्यक्ति ने आकर कहा, "हमलावर हस्पताल तक पहुच गये है। वे जहा जाते है आग लगाते है। हस्पताल मे आग लगा दी गई है, बेचारे असहाय रोगी भीतर ही जल रहे है।" यह सुनकर मै सहमी। हस्पताल बिलकुल करीब था। मैने बच्चो को अदर कमरे मे कर लिया। हमारी कोठी एक-मजिली था। दोनो ओर बरामदे थे। रसोई पीछे की ओर थी और उसी तरफ से पूजा के कमरे मे से होकर पीछे जियारतगाह वाली पगदडी के सामने एक दरवाज़ा खुलता था। मैने जल्दी मे न जाने क्या सोचकर जेवर उतारे और एक पोटली मे बाध लिये। उस समय मेरे तन पर सबसे पुराने और हल्के कपडे थे। मैने तब यह सोचा तक नही कि कोई मजबूत कपडा पहनू।

मै अभी मुश्किल से अन्दर गई थी कि आवाज आई, "सुपरिन्टेडेट की कोठी जल रही है।" अब मेरे होश उडे कि क्या किया जाय। कुछ समझ मे नही आ रहा था कि पिछले दर्वाजे से हमारे एक मुसलमान चपरासी ने द्वार खटखटाकर कहा, "आप यहा क्या कर रही है? हमलावार आपके सोने के कमरे का द्वार तोड रहे है। वे लगभग ६० आदमी है। आप कृपा

कर बच्चो समेत बाहर आ जाइये। हम जियारतगाह वाली पगदडी पर कहीं इन बच्चो को छिपा देगे।" घबराहट मे मैने उससे पूछा, "मेहता साहब कहा है ?" वह कहने लगा, "वे मोर्चे पर गये है और महफूज़ है। आप जल्दी आ जाइये।" मैं किंकर्त्तव्य विमूढ-सी हो रही थी। एक ओर तो मैंने सोचा कि वे अपना कर्त्तव्य निभा रहे हैं। मेरे ऊपर बच्चो की रक्षा का भार है। किसी भी प्रकार उनकी रक्षा करके मुझे यह कर्त्तव्य पूरा करना चाहिए। दूसरी ओर मेरे मन मे यह खटका था कि उनकी गैरहाज़िरी मे घर छोडना अच्छा नही है। आखिर मैं भारतीय नारी थी। मै इसी दुविधा मे थी कि बाहर से वह फिर हडबडाकर बोला, "जल्दी कीजिए, नही तो गज़ब हो जायगा। ये लोग बुरी तरह से मार-काट करते आ रहे है।" यह सुनकर मुझसे न रहा गया। नंगे पाव खाली हाथ एक चादर और एक गुप्ती साथ लिये बच्चो को लेकर, मैं उस भरे घर से, सब कुछ छोडछाड कर चल दी। गुप्ती इसलिए साथ रखी कि अगर कही कभी इन मासूम बच्चो की इज्जत पर हमला हो तो इससे पूर्व कि वे अपमानित हो, इस गुप्ती से वे सदा की नीद सोकर अपने मान-धन की रक्षा कर सके।

बाहर निकलते ही हम जियारतगाह वाली पगदडी पर चल पडे। जाती बार मैंने उस उजडी हुई बस्ती पर एक निगाह डाली जहा कुछ क्षण पहले मेरी सुख-पूर्ण गृहस्थी बसी हुई थी और अब डरावना अधकार छाता जा रहा था। गोलिया अब भी चल रही थी, इतनी जोर से, कि कानो के पर्दे फटे जा रहे थे। न जाने, उस समय हम उस अलघनीय पगडडी से जा कैसे रहे थे। पाव फिसल जाता तो गिर कर लाश तक के टुकडे-टुकडे हो जाते। थोडी दूर चलकर हम घास पर सुस्ताने बैठे। तभी जोरो से वर्षा होने लगी। जो कुछ कपडे हमारे तन पर थे, वे भी भीग गये। बच्चे सर्दी से ठिठुरने लगे। मैंने उनके ऊपर खेस डाल दिया। वे बेचारे उसमे दुबककर बैठे रहे।

अब गोलियो की आवाज़ और भी नजदीक से आने लगी। मैं एक अनजान राही की तरह वहा बैठी थी कि हस्पताल का एक बूढा कर्मचारी चरण घबराया हुआ पास से गुज़रा। मैंने पूछा, "भैया तुम इतने घबराये

हुए क्यो हो ?" वह वोला, "मेरा बारह वर्ष का लडका हस्पताल मे था और वह अब जल रहा है। सुना है कि जितने मरीज वहा थे वे सबके सब उसके साथ जल रहे है। न जाने मेरा बच्चा कहा होगा ?" यह कहते हुए ममता भरा हृदय लेकर वह हस्पताल की ओर दौडा चला गया। बाद मे पता चला कि उसकी लाश हस्पताल के करीब पडी देखी गई थी और उसकी गोद मे उसका झुलसा हुआ मुर्दा बच्चा था।

हम लगभग ढाई घटे वही पडे रहे। सर्दी के कारण बच्चो का रग उड गया, मानो उनमे खून ही नही था। इतने मे हमे ढूढता हुआ ओम वहा आया। वह रो रहा था। मैने एकदम उससे पूछा, "ओम् ! तुम कहा थे, रो क्यो रहे हो ?" बच्चे उसे रोता देखकर हसने लगे, "वाह ओम् ! तुम कितने डरपोक हो। देखो हम नही डरते। तुम तो कहते थे कि तुम किसी से नही डरते। अब यह क्या हो गया है जो कायर बनकर रो रहे हो ?" वह कुछ नही बोला। मैने उससे फिर पूछा, "बात क्या है बताओ तो, तुम इतना रो क्यो रहे हो।" वह जरा रुककर बोला, "जब आप यहा आई तो मै कोठी मे ही था। साठ कबाइली वहा आये और सब जेवरात और कीमती कपडे निकाल कर ले गये। और साहब के कपडे भी अलमारी से निकाल कर पहन रहे थे।" मैने उसकी बात काटते हुए कहा, "बस, इसी पर तुम इतना रो रहे हो। भाई, कपडे और जेवर हमने ही तो बनवाये थे। जिन्दा रहे तो फिर बनवा लेगे। पर, हा, एक बात सुनो। अगर तुम कोठी मे जाकर साहब का गर्म सूट ला सको तो अच्छा होगा। वे प्रात काल ठडे कपडो मे ही गये है, उन्हे सर्दी लग रही होगी।" यह सुनते ही उसने एक आह भरी और जाने के लिए उठा। पर कुछ दूर चलकर फिर लौट आया, कहने लगा, "मै नही जा सकता। जब मै यहा आ रहा था तो कोठी मे से किसी के कराहने की-सी आवाज सुनी थी।" इतना कहते-कहते वह सहसा रुक गया। तब न जाने क्या सोचकर मैने भी उससे कहा, "अच्छा, रहने दो।" इतने मे हमारी कोठी जलती हुई दिखाई पडी। हमारे साथ के चपरासी ने कहा, "देखिये, आपका घर जल रहा है।" यह देखकर मेरी छोटी लडकी कमलेश घबराई

हुई कहने लगी, "माताजी, मै क्या करू ? मेरी गुडियो का घर जल रहा होगा और बीच मे वेचारी गुडिया भी जल गई होगी।' नन्ही बालिका को तो गुडियो के ही ससार का परिचय था। पर मै यह देखकर स्तब्ध रह गई। "हे भगवान, अब मै क्या करू ? जाने वह किस हाल मे और कहा होगे ? अब मै इन नन्हे बच्चो को लेकर कहा जाऊ ?" इधर मेरी परेशानी बढ रही थी, उधर अब बच्चो की हसी गायब थी। उन्हे लग रहा था कि विपत्ति आ रही है परन्तु वे मौन थे। चपरासी कहने लगा, "माताजी, चलिये मै आपको कही महफूज जगह पहुचा आऊ, नही तो ये बच्चे सर्दी के मारे मर जायगे। और कही हमलावर भी आप सबको ढूढने यहा आये तो क्या बनेगा। हमे यहा से चलना चाहिये।" हम सब उठ खडे हुए और अपना सर्वस्व गवाकर दर-दर की ठोकरे खाने चल पडे। बच्चे चल रहे थे, नगे पैर—मुड-मुडकर जलते हुए घर के काले धुए को आकाश से बाते करते देखते हुए। आहे भरने के सिवा हमारे पास अब धरा ही क्या था।

चलते-चलते हम एक नाले पर पहुचे। सामने से दस-ग्यारह आदमी हमारी ओर आते हुए दिखाई दिये। हममे सबसे आगे सुरेश था। उन्होने उसे रोककर पूछा, "बता तू किसका लडका है और कहा जा रहा है?" सुरेश ने उत्तर दिया, "मै यहा के वजीर का लडका हू।" वह जानता था कि ऐसा कहने मे खतरे का डर है, किंतु उसे सच बोलने की दीक्षा मिली थी। इसलिए वह झूठ न बोल सका। यह जवाब सुनते ही उन्होने कहा, "हा, हा, तुम सब जल्दी जाओ। तुम्हारे लिए वजीर साहब ने नवाबा चपरासी के यहा ठहरने का इतजाम किया है।" यह नवाबा तहसील का चपरासी था। हम गिरते-पडते नवाबा के घर पहुचे। यह मकान हमारी कोठी से आधे मील की दूरी पर एक ऐसी ऊची जगह था, जहा से सारा शहर नजर आता था।

मेरे वहा पहुचते ही उसका सब परिवार और शहर के कई मुसलमान जो भाग कर यहा आए थे, बाहर निकले और मुझे आदर से भीतर ले गये। कहने लगे, "तू हमारे नेक हाकिम की स्त्री है। हमारी आखो मे तेरी इज्जत वैसी ही कायम है। घर अपना है—बैठिये।" मै अदर गई। कई औरतो ने

मेरे बच्चो की हालत देखकर आसू बहाये और हमलावरो को जली-कटी सुनाने लगी। मैने उन लोगो से मेहता साहब के बारे में पूछा, "वे कहा है ?" वे बेरुखी से बोले, "हमे मालूम नही कि वे कहा है।" कुछ देर बाद वहा सुपरिन्टेडेंट पुलिस का अर्दली शिवदयाल आया। यह बारामूला का रहने वाला था, हमारी कोठी पर अक्सर आया करता था। आते ही वह ओम् से मिला। दोनो कुछ बातचीत करने लगे। मैने शिवदयाल से पूछा, "भाई, तुम्हे मालूम है कि मेहता साहब कहा है ? तुम तो तब वही थे, जब वह घर से बाहर निकले थे।" वह बोला, "वे साहब (सुपरिन्टेंटेंट पुलिस) के साथ तेईस सिपाही लेकर हाईस्कूल की तरफ गये है। वहा सैनिको ने कई दिन पहिले एक तोप गाड रखी है और वे वहा महफूज है।"

इधर बच्चे सर्दी के मारे थर-थर काप रहे थे। यह देखकर नवाबा की औरत ने आग जलाई। मैने बच्चो के गीले कपड़े उतार-उतार कर उस पर सुखाये, अच्छी तरह तो क्या सूखते, फिर भी कुछ अन्तर जरूर हुआ।

वहा से शहर के जलने का भयानक दृश्य देखकर यही प्रतीत होता था कि प्रलय हो रही है। चारो ओर हाहाकार मचा हुआ था। पहाड़ियो पर लोग अपने परिवारो समेत भागते नजर आ रहे थे। आग की लपटे आसमान से बाते कर रही थी। आकाश धुए से ढक गया था। जहा मैं थी वहा पर भी बहुत से आदमी आसपास से आकर इकट्ठे हो गये। मैं पागलो की तरह हरएक व्यक्ति से मेहता साहब का हाल पूछती थी। कोई कुछ कहता तो कोई कुछ। सही उत्तर कोई नही देता था। आनेवाले बस इतना कहते जाते थे कि हमलावर मर्दो को मार रहे है, औरतो और लड़कियो को पकड़कर ले जा रहे है। जिस मकान मे घुसते है लूटकर फिर उसमें आग लगा देते है।

चार बज गये। बच्चो ने प्रातःकाल से कुछ भी नही खाया था। भूख से वे निढाल हो रहे थे। घर की मालिकन ने यह देखकर मकई के आटे की एक रोटी बनाई और बच्चो के लिए मुझे दी। मैने उस रोटी के छः हिस्से किये और प्रत्येक बच्चे को एक-एक हिस्सा दे दिया।

: ३ :

बीच भंवर में

रात के दस बजे तक हम इसी तरह बैठे रहे। दस बजे नबाबा आया और अपनी स्त्री को बाहर बुलाकर कुछ कहने लगा। वह जब लौटकर आई तो मुझसे कहने लगी, "आप हमारे यहा से अभी चली जाइये, आप यहा नही रह सकती। हमलावर यहा आकर हमें तुम्हे पनाह देने पर मार देगे।" मैने कहा, "मै इस अधेरी रात मे कहा जाऊ। मै यहा किसी को नही जानती।" परन्तु उसने मेरी एक बात नही सुनी। इतने मे उसके पति ने भी अन्दर आ कर कहा,"आप जल्दी यहा से चली जाइये। वजीर साहब और पुलिस सुपरिन्टेडेट दोनो जीप मे उडी गये है।" मुझे उसकी यह बात मनगढन्त लगी। मैने उससे तत्काल कहा, "तू गलत कहता है, वे ऐसे भागने वाले नही है।" उसने झट कुरानपाक की कसम खाकर कहा कि नही वे ऊडी गये है।

मै जब दिन मे यहा आई थी तब उन्होने मुझे इज्जत से बैठाया था। पर अब रात के घोर अधकार मे वे मुझे निकाल रहे थे। मैने मन-ही-मन कहा, "मनुष्य कितनी जल्दी बदल जाता है। अभी देवता होता है तो अभी राक्षस बन जाता है।" पर मै कर क्या सकती थी। लाचार होकर मैने उनसे कहा, "अगर तुम्हे मेरे कारण नुकसान पहुचने का डर है, तो मै अभी यहा से चली जाती हू। जो होगा, सहन कर लूगी, परन्तु अपने लिए किसी को मुसीबत मे नही डालूगी। पर एक बात है तुम्हे हमारे साथ आना होगा। मै अपनी कोठी के चौकीदार के घर जाना चाहती हू।" वह कुछ दिन पहले छुट्टी पर गया था। वह जाति का मुसलमान था और बडा सज्जन था। उसका घर यहा से काफी दूर था। नबाबा कहने लगा, "अच्छा मै जोगियो के गाव तक आपको पहुंचा आऊगा। सुबह वहा का नम्बरदार आपको उस चौकीदार के गाव तक पहुचा देगा। यह जोगियो का गाव प्रसिद्ध गुडो का गाव था। मै उसके कहने के ढग से उसकी शरारत भाप गई। इसलिए

मैंने अपने साथ ओम् और शिवदयाल को लिया। उनके अतिरिक्त वह चपरासी जो हमे कोठी से निकाल लाया था, साथ आया।

रास्ता पहाडी था—काटो और ककरो से भरपूर। इतना भयानक कि पैर फिसला और हड्डी-पसली चूर। उस पर हिंसक जतुओ की आवाजे सुनाई दे रही थी। सामने शहर जलता हुआ दिखाई दे रहा था। जलती आग की रोशनी मे जलते हुए मकान काले ठूठ के समान लग रहे थे। गोलिया अब भी चल रही थी।

मै अपने इस छोटे से काफिले मे सब से पीछे थी। यह हमारी विपत्ति-यात्रा का पहला सफर था। न जाने क्या सोचते हुए हम इस भयानक रात मे चल रहे थे। कुछ दूर चलकर हम एक पहाडी बस्ती पर चढे। नवाबा ने वहा एक आदमी को बुलाकर कहा, "भाई, हम सुबह तक तुम्हारे यहा ठहरना चाहते है।" उसने हमे अपने यहा ठहराया। असल मे वह उसका कोई रिश्तेदार था। बच्चे इस कदर थके हुए थे कि आगे चलने की तनिक भी शक्ति नही थी। बेचारे सर्दी से पहिले ही परेशान थे—उसपर कपडे कुछ-कुछ गीले थे। इसलिए उनके दात बज रहे थे। घरवालो ने एक खाट और एक रजाई दी। बच्चो को एक मोटी-सी मकई की रोटी भी खाने को दी। मैंने लेने से इन्कार करना चाहा पर बच्चो की ललचाई आखे देखकर मै ऐसा न कर सकी। लाचार मैंने रोटी लेकर बच्चो मे बाट दी। उसे खाकर वे खाट पर लेटते ही गहरी नीद में सो गये। मै भी बच्चो के पास पडी रही। जो रजाई हमे ओढने को मिली थी यदि कुछ समय पहले वह हमे कोठी के आसपास कही पडी हुई मिलती तो उसे दूर फिकवाना तो मामूली बात थी, हम उस जगह तक को साफ करवाते; पर अब यह अवस्था थी कि उसी रजाई के लिए हमे दिल से उनका धन्यवाद करना पडा।

इस कमरे मे बहुत से तेज धारवाले भाले चमक रहे थे, उन्हें देखकर दिल दहल उठता था। हम लगभग आधा घटा लेटे होंगे कि मुझे बाहर से कुछ आदमियो की कानाफूसी सुनाई दी। मै उठी और किवाड खोलकर देखने लगी। वहा तीन व्यक्ति आपस मे धीरे-धीरे कुछ बाते कर रहे थे।

उनमे से एक नवावा था। बाकी दो मेरे परिचित नही थे। उन दोनो मे से एक के हाथ मे पैनी धार का भाला था और दूसरे के हाथ मे एक कुल्हाडा मैंने उनसे पूछा, "तुम क्या सलाह कर रहे हो ?" नवावा उठा और जल्दी मे कहने लगा, "आप यहा भी नही रह सकती क्योकि सवेरे यहा पर भी हमला-वर आनेवाले है। आपकी खातिर वे इनको भी तवाह कर देगे। आपको अभी यहा से चले जाना जाहिए।" यह सुनकर मेरा सिर चकरा उठा। सवेरे मे मैंने पानी तक नही पिया था। चिन्ताए इतनी थी कि कुछ सूझता नही था फिर भी---इन पर हमारे कारण कोई विपत्ति न आये, यह खयाल अवश्य आया। इसी कारण मैंने उत्तर दिया, "मुझे रास्ता मालूम नही है, तुम्हे साथ चलना पडेगा।" वह कहने लगा, "मै तो नही चल सकता। मेरे बच्चे अकेले है। हा, मै यहा मे एक आदमी आपके साथ कर दूगा। पर आपको उसे बीस रुपये देने होगे।" मैंने कहा, "भाई ! मै घर से बीस पैसे भी लेकर नही चली हू, बीस रुपये कहा से दू।" वह बोला, "पर उसे इससे क्या, वह तो रुपये लेगा, आप कही से दे।" मै परेशान थी कि रुपये कहा से दू। हममे से किसी के पास रुपये नही थे। सब एक दूसरे का मुह ताकने लगे। वह व्यक्ति उस समय इतना कठोर बन गया कि उसने साफ कह दिया, "मै फिर आपकी कोई सहायता नही कर सकता। आप यहा से निकल जाये।" तब एकदम मेरा ध्यान जेवरो पर गया। मैंने कान का एक जेवर (टाप्स) उसे दिखाया और कहा, "यह लो, मै तुम्हे यह देती हू।" बस माया ने उसे जकड लिया। वह झट बाहर से एक व्यक्ति को लाया और बोला, "यह इसे दे।" मैंने कहा, "यहा तो मै नही दूगी, ठिकाने पर पहुच कर ही दूगी।" वे चाहते तो सब कुछ छीनकर मुझे निकाल देते। पर उन्हे इस बात का खयाल नही रहा ? कि मेरे पास कुछ और भी है। मैंने बच्चो को जगाया। बेचारे हडबडाकर उठ बैठे और आनेवाली विपत्ति की राह देखने लगे। मैंने उनसे कहा, "उठो चले। घबराने की कोई बात नही। मुसीबत का मुकाबिला करना हम लोगो का फर्ज है।"

हम उस नये आदमी के साथ चल पडे। नवावा साथ नही आया।

रात के एक बजे हम सब अधेरे मे रास्ता टटोलते हुए जा रहे थे। वहा सडक नही थी। काटो और ककडो मे भरपूर पहाडी पगडडी थी। प्रभू की कृपा से हमे न तो कही काटा ही चुभा और न ठोकर ही लगी।

कुछ दूर चलकर पीछे से हमे एक आवाज सुनाई दी। मैने पीछे मुडकर देखा, एक सिख नवजवान टार्च जलाये हुए हमारे पीछे-पीछे आ रहा था। मेरे साथी उसे पहचानते थे। उन्होने उससे पूछा, "कहा जा रहे हो?" उसने एक नामी सिख सरदार का नाम लेते हुए कहा, "वह और उसका परिवार इस रास्ते से भाग रहे थे कि उनका दस साल का बच्चा पहाडी से गिर पडा। उसकी दशा बडी शोचनीय है। क्षणो का मेहमान है। आप भी अपने बच्चो को हिफाजत से ले जाइये।" मै उस समय क्या कर सकती थी। चारो ओर मौत ही मौत दिखाई दे रही थी। सब बच्चे आगे थे और मै सब से पीछे थी। अधेरे मे कभी-कभी हम एक दूसरे से बिछुड जाते थे। तब बडा परेशान होना पडता था।

चलते-चलते शिवदयाल पास आकर कहने लगा, "मै कुछ आगे गया था, वहा कुछ हिन्दू मिले थे। उनके साथ मुजफ्फराबाद का एक नामी रईस भी है। उन्होने मुझसे कहा है कि अगर तुम लोग अपना भला चाहते हो तो अपने साथी मुसलमानो को अलग कर दो और हमारे साथ आओ। उसने मुझे उन लोगो की बात मान लेने को कहा। मैने भी यही उचित समझा और मुसलमान भाई मे कहा, "भाई! अब तुम जाओ, अपने बाल-बच्चो को सम्भालो। हमे जहा किस्मत ले जायेगी वहा चले जायेगे।" और प्रतिज्ञानुसार मैने कान का जेवर उसे दे दिया। उसने प्रसन्नता से लिया और बडे अदब से सलाम कर के लौट गया। जाते समय एक दर्द भरी दृष्टि उसने मेरी और मेरे बच्चो की ओर डाली। लगता था कि वह भी हमारे दु ख से दु खी है। मानव-मन के कितने रग है।

हम कुछ आगे बढे। देखा कि कुछ पुरुष, स्त्री और बच्चो का एक काफिला जा रहा है। हम भी उसके साथ आ मिले। रास्ते मे एक पुरुष ने मेरे छोटे बच्चे पर दया कर के उसे गोदी मे उठा लिया। वह बहुत थक गया

था। चलते-चलते हम एक स्थान पर पहुचे। उसका नाम 'बोथा' था। वहा गुरुद्वारा था। हम सब उसी मे ठहरे। हमसे पहले वहा और कुछ आदमी थे। अधेरे मे कुछ सुझाई न देता था। प्यास के मारे जान निकल रही थी। साथ वाले आदमियो ने थोडा-सा पानी पिलाया। परन्तु देखते ही देखते वहा से एक-एक करके सब आदमी चले गये। किसी ने हमे साथ चलने तक को नही कहा। हमने भी साथवालो को ढूढा परन्तु वहा तो हरएक को अपनी-अपनी पडी हुई थी। मैने शिवदयाल से कहा, "भाई, तुम भी साथ न छोड देना। कही ठिकाने पर पहुचा कर ही जाना।" वह बोला, "मा, मै जब तक हू कभी इस दु ख मे तुम्हारा और इन बच्चो का साथ नही छोडूगा।" मैने उससे कहा, "हमे यहा नही रहना चाहिए क्योकि वे लोग गुरुद्वारा जलाने के लिए प्रात काल ही आवेगे। हमे कही आगे चलना चाहिए।" परन्तु हम कहा जाये, किस रास्ते जाये इसका हमे कुछ पता नही था। फिर भी वहा रहना हमने ठीक नही समझा। हम उठे और चल पडे। जो रास्ता सामने दिखाई दिया उसी को हमने पकडा।

कुछ देर चलने के बाद थोडी-थोडी रोशनी होने लगी। हम लगातार चलते चले गये। आगे एक पहाडी पर चलते हुए हमे लाठिया लिये कुछ व्यक्ति दिखाई दिये। उन्होने हमे पहाडी पर चढने से रोका। कहने लगे, "तुम कहा जा रहे हो?" हमने चौकीदार के गाव का नाम बताया। उन्होने कहा, "खबरदार! आगे एक कदम न रखना, सरकार का हुक्म है कि कोई इस रास्ते न जाय।" हम जहा के तहा खडे रहे। पूछा, "हम कहा जाये?" पर उन्हे इस बात से कोई मतलब नही था। उस समय उनकी आखो मे खून उतरा हुआ था। वे सब मुजफ्फराबाद के किसान थे। अगर वे चाहते तो हमे लाठिया मार-मार कर वही ढेर कर देते। पर न जाने क्यो उनका हाथ हम पर नही उठा। उन्होने हमे जाने दिया। हम चढाई से नीचे उतरने लगे। अब हममे एक कदम चलने की भी हिम्मत नही रही थी। सर्दी के कारण बच्चो का रग नीला हो गया था, और दात कटकटा रहे थे।

नीचे उतरकर हमे एक बूढा मुसलमान मिला। मैने उससे कहा,

"बाबा, अगर तुम एक घटे के लिए हमे अपने घर ले चलो तो बडा उपकार होगा। ये बच्चे हाथ गर्मा लेगे।" उसे कुछ दया आई। वह हमे अपने घर ले गया। उसका घर मुजफ्फराबाद से लगभग १० मील दूर था। वह एक गरीब किसान था। उसके मकान मे अगले भाग मे एक बरामदा था। कमरे मे एक ओर गाय-भैसे बधी हुई थी। उसी मे एक तरफ चूल्हा था। कुछ टूटे-फूटे बर्तन थे और दो-चार फटे-पुराने लिहाफ। दो एक खाटे भी थी। एक तलवार भी खूटी पर लटक रही थी। उसके परिवार मे दो लडके, तीन लडकिया और घरवाली थी। भीतर ले जाकर उसने हमे आदर से बिठाया और अपनी स्त्री से कहा, "ये हमारे मेहमान है, इनका अदब करना हमारा फर्ज है। देखो तो इनकी क्या हालत है? खुदा रहम करे।" बच्चे आग देखते ही चूल्हे से चिमट गये। हम सबने हाथ गर्माये। उसका लडका मेरे बडे लडके का सहपाठी निकला। उसने बाप से जाकर कहा कि यह वजीर साहब का लडका है। वे दोनो आपस मे गले मिले। उस समय इन मासूम बच्चो का कैसा अजीब मिलन था। अब उसकी मा हमारे लिए खाना पकाने की चिता मे लगी। उसने चाय और मकई की रोटी बनाई। साथ ही कुछ भुट्टे भूनकर दिये, बच्चो ने चाय पी और रोटी खाई। मैने सिर्फ भुट्टे के कुछ दाने खाये। इच्छा तो कुछ खाने की न थी पर खाये इसलिए कि मेरे दात भी बैठ रहे थे। हमे वहा पहुच कर इतना सुख मिला कि मै वर्णन नही कर सकती।

वे खाना बनाने मे लगे। मुझसे पूछा, "तुम सब हमारे हाथ का पका हुआ भोजन खाओगी कि नही? अगर नही तो खुद बनाओ।" मैने कहा कि मुझे इस बात का परहेज नही है, परन्तु मै खाना नही खाऊगी। बच्चे खा लेगे। उनके पास जो कुछ था सो उन्होने निकाला, पकाया। पर गरीब की झोपडी मे इतना कहा कि सबका पेट भर जाय। फिर भी जो टुकडा-टुकडा बच्चो के हिस्से मे आया उससे उनका जीवन बना रहा, यही क्या कम था। उसके बाद उन्होने कमरे मे हमे एक खाट दी। मै और बच्चे मुर्दो की तरह उसपर पड गये। शिवदयाल और ओम् जमीन पर सोये। इतने मे

बाहर से यह शोर सुनाई दिया कि हमलावर यहीं नजदीक आ पहुंचे हैं। मैंने उत्तार सिंहयार से कहा, "भाई, सुनो, यह तलवार सामने लटक रही है। जब ये लोग यहां आयेंगे तो तुम फौरन इन सब स्त्रियों को अपने हाथ से कत्ल कर देना।" लड़कियां भी बेचारी तैयार थीं। किन्तु कुदरत को कुछ और ही मंजूर था। जिसके घर में हम ठहरे हुए थे उसके पड़ोसी उसके खिलाफ हो गये। वे उसपर दबाव डालने लगे कि वह हमें अपने यहां से निकाल दे। वह भला आदमी था। उसने कहा, "भाई घर पर आये मेहमान को मैं नहीं निकाल सकता। हमारा मजहब हमें यह नहीं सिखाता। तुम लोगों ने इस समय खुदा को भुला दिया है। याद रखो खुदा सब देख रहा है।" परन्तु उसकी कौन सुनता था। वे तो अपने आग्रह पर डटे रहे।

कुछ देर बाद घर का मालिक कहीं बाहर चला गया। तब उसके एक करीबी रिश्तेदार ने उसकी स्त्री और बच्चों से कुछ सलाह की और बन्दूक हाथ में लेकर भीतर आया। हम सब खाट से उतर कर नीचे खड़े हो गये। उसने बन्दूक तानकर कहा, "यहां से निकल जाओ नहीं तो अभी फायर कर दूंगा।" यह व्यक्ति सीमाप्रान्त में पहले कहीं फौज में रह चुका था। मैंने दिल में सोचा कि अच्छा है कि यह फायर कर दे, हम बहादुरी से गोलियां खायेंगे। और उससे कहा, "तुम फायर कर दो, तो अच्छा है, मैं इस समय कहां जाऊं?" हममें दस कदम चलने की भी हिम्मत नहीं थी। उसने हमें बहुत धमकाया परन्तु हमारा उत्तर यही मिला कि वह फायर कर दे। कुछ देर बाद वह बोला, "अच्छा तुम और तुम्हारे बच्चे यहां रह सकते हैं किन्तु यह दो मर्द यहां नहीं रह सकते।" वह दोनों भी जाना चाहते थे क्योंकि उनको मार दिये जाने का डर था। मैंने उनसे कहा, "भाई, जाओ। मेरे लिए अपने आपको विपत्ति में न डालो। भगवान् सब अच्छा ही करेगा।" वे दोनों बच्चों को देखते हुए और आंसू बहाते हुए विवश होकर चले गए। और हम सब एक ठंडी आह भरकर खाट पर बैठे रहे। साथ लाई हुई गुप्ती ओम् अपने साथ ले गया। सारा दिन हम वहीं पड़े रहे। बच्चों को दो दिन से पेट भर खाना नहीं मिला था। बार-बार वे आहें भर रहे थे। मैंने अब बच्चों से

कहा, "घबराओ मत, हिम्मत से काम लो। यह तुम्हारी परीक्षा है। देखो, मैं तुम्हे अक्सर अपनी प्राचीन सस्कृति की कहानिया सुनाया करती थी। क्या था हमारी प्राचीन सस्कृति का आदर्श? अपने आत्म-गौरव के लिए मौत से खेलना, बस। वही तुम्हे भी करना है।"

गाव के सब लोग लूट-खसोट करने बाहर गये हुए थे। केवल स्त्रिया घरो मे थी। दिन भर यही कोलाहल मचा रहा कि अब यहा पहुचे और अब वहा। फला गाव जलाया, अमुक गाव लूटा। बेचारी स्त्रिया भय से काप रही थी और कबाइलियो को भरपेट कोस रही थी। इसीमे रात हो गई। कोई सोया नही। घर का मालिक कही से थोडा सा आटा लाया और अपने परिचित जनो को थोडा-थोडा दे आया।

: ४ :

मुंह बोला भाई

बारह बजे तक हम लोग बैठे रहे। बारह बजे घर की मालिकन और उसका एक रिश्तेदार भीतर आकर कहने लगे, "यहा से अभी निकल जाइये। हम तुम्हे यहा नही रख सकते।" मैने कहा, "अभी-अभी तो हमारे साथियो को निकाल दिया। अब रात के बारह बजे मै इन बच्चो को लेकर कहा जाऊ। रातभर रहने दीजिए। सवेरे हम चले जायेगे।" वे कुछ सुनने को तैयार न थे। मुझे वह आदमी शरारती नजर आ रहा था। कहने लगा, "हम तुम्हे उस ऊची पहाडी पर पहुचा देगे जहा गर्मी के दिनो मे हम मवेशी रखते है। वहा पत्थरो की एक कन्दरा है। उसमे तुम और बच्चे रहना। कभी-कभी हम लोग तुम्हे यहा से खाना पहुचा देगे।" मुझे कुछ सूझ नही रहा था कि क्या करू और कहा जाऊ? जाने किन पापो का प्रायश्चित करना पड रहा है। परन्तु भगवान् भी समय-समय पर इस तरह बचाता है कि आश्चर्य से चकित रह जाना पडता है। वे जब हमको बहुत ही तग करने लगे तो एक नवयुवक वहा आया और मेरी ओर आसू भरी आखो से देखकर

कहने लगा, "बहिन ! मै एक मामूली आदमी हू ! क्या तुम मेरी एक बात मानोगी—मै तुम्हे अपनी बहिन समझता हू और जहा तक मुझसे हो सकेगा, अपने ऊपर आपत्तिया झेलकर मै तुम्हारी रक्षा करूगा। मेरे हृदय की आवाज मुझे मजबूर कर रही है कि तुम्हारी कुछ मदद करू।" मुझे न जाने क्या सूझी। मैने सहसा फिर सिर के दुपट्टे का आचल फाटा और उसके हाथो मे राखी बाधी। अगुली से खून निकाला और उससे उसके माथे पर तिलक लगाया। उसने भी यह सब चुपचाप करने दिया। मुझे यह सब करने से एक अद्भुत सुख का अनुभव हो रहा था। मैने उससे कहा, "भैया, यह हमारी पुरानी सभ्यता है। हुमायू के समय मे भी यह रस्म हुई थी और भाई को बहिन का कौल निभाना पड़ा था। मै भी तुम्हे अपना भाई समझ रही हू। आशा है कि तुम इस प्रतिज्ञा को निभाओगे।"

कुछ देर बाद उसने उन घरवालो से कहा, "रात भर इन्हे यहा रहने दीजिए। प्रात काल मै इनको अपने घर ले जाऊगा।" और यह कहकर वह चला गया।

उसके चले जाने के बाद हम सोये रहे।

प्रात काल जब मै उठी तो मेरा मन बहुत दु खी हो रहा था। रह-रह कर रोना आता था। मन मे उठ रहा था कि उनकी (मेहताजी) जान सलामत नही है। पर दूसरे ही क्षण मन मे विचार आया, "यह आसू बच्चो के लिए बहुत हानिकर होगे। उनका मन टूट जायेगा और फिर वे बहादुरी से विपत्तियो का सामना नही कर सकेगे।" यह सोचकर मैने रोना बन्द कर दिया और जाकर बच्चो के पास बैठ गई।

घर का मालिक ओर मालिकन कही बाहर चले गये थे और उनके पीछे उनके बारह वर्षीय लड़के ने हमे घर से निकाल दिया। उसने कहा "यहा से चले जाओ, हम तुम्हे यहा नही रहने देगे।" हमे निकलना पड़ा। वह समय बड़ा भयानक था। मैने सुना कि उस गाव की हिन्दू स्त्रियो और कन्याओ ने एक मकान मे अग्नि प्रज्वलित की और स्वच्छ कपडे पहन कर मत्र-पाठ करते हुए उसमे कूद पड़ी। इस तरह उन्होने हसते-हसते जौहर

की प्रथा का अनुकरण किया। कहते है बाद मे हमलावरो ने जलती हुई लाशे खीचकर बाहर निकाली और उनके शरीर से जेवर उतारे। जिस समय पास के गाव मे यह सब हो रहा था उसी समय उन्होने हमे घर से निकाल दिया। मैने बच्चो को आगे चलने को कहा और खुद उनके पीछे-पीछे चलने लगी। कहा जाऊ, यह कुछ समझ मे नही आ रहा था। पर चलना था सो सीधे ही चल पडी। कुछ दूर चलकर एक पहाडी पर चलना पडा। रास्ते मे चट्टान की आड मे एक कन्दरा दीख पडी। बच्चो को मैने उसके भीतर बिठाया। खुद सामने बैठ गई।

बच्चो को कदरा मे इसलिए बिठाया कि आनेजानेवालो को लडकियो के बारे में मालूम न हो। हम वहा लगभग २॥ घटे ठहरे। आसपास से गोलियो की आवाज आरही थी किन्तु हमे कोई नही लगी। कुछ देर बाद रातवाला मेरा मुहबोला भाई मुझे खोजता हुआ वहा आ पहुचा। उसे देखते ही बच्चे खुश हुए और कहने लगे, "देखो मा, तुम्हारा भाई आ गया।" उसने पासआते हीहमे जल्दी चलने को कहा। हम सब उसके साथ हो लिए। जब हम उसके घर पहुचे तो उसने सन्तोष की सास ली और कहा, "सवेरे मै दोमेल हमलावरो से यह पूछने गया था कि कुछ स्त्रियो को अपने यहा रखू या नही ? उन्होने रखने की इजाजत दे दी है। अब मै खुले तौर पर तुम्हारी मदद कर सकूगा। पर न जाने कब कौन सी पार्टी यहा आ जाय और पूछे कि ये कौन है तो उस समय क्या कहूगा। क्योकि तुम्हारी शक्ल सूरत हमसे नही मिलती है। मेरा विचार है कि जब वे पूछे कि यह कौन है तो मै कहूगा, मेरी बहिन है और इसकी शादी स्यालकोट मे हुई है। क्या तुम्हे यह तजवीज पसद है ? इसमे कुछ हर्ज नही है। लडकियो के बचाने के लिए तुम्हे यह सब करना पडेगा। तुम फिकर मत करो। खुदा पर यकीन रखो। सब ठीक होगा।"

यह सुनते समय मेरा रोम-रोम उसका धन्यवाद कर रहा था। वह भी तो मुसलमान था। उसने तत्काल हमे दूध और रोटी लाकर दी। उसके परिवार मे कुल ७ सदस्य थे। दो छोटी-छोटी लडकिया, विमाता और

पिता। एक विवाहित बहिन और एक छोटा भाई। एक बरामदे और दो कमरो का उसका मकान था जिसमे उसके मवेशी भी साथ-साथ ही बधे रहते थे। उसकी आर्थिक दशा दयनीय थी पर हृदय विशाल था।

हमारे लिए उसने मवेशीवाले कमरे मे एक ओर एक खाट बिछा दी। चारपाई के नीचे गोबर पर एक चटाई डाल दी गई। हम लोगो को उसी चटाई पर लेटना पडा। वहा गोबर की इतनी दुर्गन्ध थी कि दम घुटने लगता था। दूसरी ओर मन मे आशका थी कि न जाने अब क्या सलूक हो। प्यास बेहद लग रही थी। घडी-घडी गला सूखता था। सास जोर से लेने तक की मनाही थी। इधर बच्चो को पानी पीने के कारण पेशाब ज्यादा आता था। पेशाबघर तो वहा था नही इसलिए उन्हे बार-बार बाहर जाना पडता था। डर था कि कोई गाववाला देख न ले।

हमलावर मुकामी मुसलमानो मे यह प्रचार कर रहे थे, "मुसलमानो, तुम्हे तैयार रहना चाहिए। सिख तुम पर हमला करेगे।" बस फिर क्या था, गाव के सभी मर्द लाठिया, भाले, फरसे, बर्छे और बन्दूके ले-लेकर घरो के बाहर घूम रहे थे। ऐसा मालूम हो रहा था कि सब के सब राक्षस खडे हुए है। मनुष्यता उनमे नाम को नही रही थी।

इस प्रकार यह दिन भी बीत गया। थोडा अधेरा हुआ तो उन्होंने हमे उस कैदखाने से निकाला। हम बाहर बरामदे में बैठ गये। उसकी बहिन बाप के वहा न आने पर रोने लगी। मैंने उसे ढाढस बधाते हुए कहा, "बेटी, रोने से क्या होगा, उठकर रोटी बनाओ।" ये बेचारे गुर्बत के पजे मे इतने जकडे हुए थे कि उस समय उनके पास खाने का सामान तक न था। फसल तैयार थी पर वह सब खेतो मे बिना कटे पडी थी। इस समय आटा कहा से आये, यह समस्या थी। बडी मुश्किल से कही से वह भाई थोडा सा आटा, चावल और काशीफल लाया। काशीफल का एक हिस्सा मैंने चूल्हे की राख मे भूनने को रख दिया। उनके बच्चे पूरी खुराक न मिलने के कारण बहुत कमजोर थे। भूख की ज्वाला शात करने के लिए वे भुट्टे भून-भून कर खाते थे।

और लोग लूटमार मे व्यस्त थे किन्तु मेरा भाई इन बातो से नफरत करता था। वह सचमुच एक उच्चकोटि का व्यक्ति था। कुछ देर ठहर कर मैंने अपन बच्चो से कहा, "देखो, विना काम किये कुछ खाना पाप है। हमे भी कुछ करना चाहिए।" यह सुनकर सुरेश और वीणा दोनो लडकिया उसकी वहिन के साथ चक्की मे आटा पीसने गई। बाकी बच्चो ने हाथो से मकई के भुट्टे छीलने शुरू किये। मैंने शाली के कुछ बाल लिये और उसकी स्त्री से उनमे से चावल निकालने की विधि पूछी। उसने बताया, "आप इन्हे पैरो तले मसले तो कुछ चावल निकल आवेगे।" वह खुद भैंसो का भूसा-चारा देने गई। नगे पैर हमने काफी सफर किया था। न जाने इस कारण या वह काम करने का तरीका न आने के कारण मेरे दोनो पैरो से खून वहने लगा। मुझे अपने आपसे घृणा होने लगी। सोचा हमने अपने आपको कितना आराम-पसन्द बना लिया है। मैं कुछ भी काम नही कर सकती। बच्चो को कैसे रक्खूगी? कैसे मजदूरी करूगी? यह सोचते-सोचते मेरी आखो से आसुओ की धारा फूट पडी। इतने मे घर की मालिकन आई। उसे मेरे जख्मी पैरो को देख कर बडा दु ख हुआ। आखो मे आसू भरकर उसने कहा, "वहिन! छोड दो। मैं तुम्हारा यह हाल नही देख सकती। जब तक हम है तुम्हे कुछ करने की जरूरत नही।" मैं सिर झुकाकर एक ओर बैठ गई और आने वाले सफर के दिनो का ध्यान करने लगी। इतने मे दोनो बच्चिया चक्की से आटा पीस लाई, दोनो मुस्करा रही थी। मेरी नजर उनके हाथो पर पडी, देखती क्या हू कि दोनो के हाथो मे छाले पडे है। यह देखकर मैं मौन हो गई। क्या कहती कुछ कहते नही बना।

खाना तैयार हुआ। बच्चो ने भी खाया परन्तु इतना कम कि न खाने के बराबर था। मैंने भी जो राख मे काशीफल भूना था, वह खाया। उनके बच्चो को भी पूरी खुराक नहीं मिली। परन्तु वे प्रसन्न थे। इन गरीब किसानो मे कितनी सहनशीलता होती है।

उन्होने हमे एक खाट दी। हम सब मवेशियोवाले कमरे मे लेट गये। सारी रात लोगो मे बडी बेचैनी रही। कुछ घटे खाट पर बैठे-बैठे हम अपनी

वर्तमान स्थिति पर विचार करते रहे। रह-रह कर बच्चे पिताजी की बात करते थे। मै उन्हे इन बातो का क्या उत्तर देती। थोडी देर के लिए मेरी आख लग गई। मेरे सिरहाने के साथ ही एक गाय बधी थी। उसने सोते मे ही मेरे सिर के बाल चाटने और चबाने आरम्भ किये। मेरी आख खुल गई। बालो मे बडे जोर से दर्द हो रहा था।

सवेरा हुआ। हम उठे। बच्चो को बहुत भूख लग रही थी। खाने को उनके पास कुछ नही था। बच्चे मकई के भुट्टो के दाने निकालने लगे। उनके हाथो मे छाले पहिले ही पडे हुए थे। अब छोटे बच्चे के हाथ से भी खून बहने लगा। वह कपडे से खून पोछता जाता था। मेरी नज़र उसके नन्हे हाथो पर जा पडी तो मैंने उसे रोकना चाहा परन्तु वह न माना और बराबर दाने निकालता रहा। मैंने उठकर उसे प्यार से समझाया, वह कहने लगा, "मा, तुमने ही तो कहा था कि काम किये बिना खाना पाप है। अब मुझे क्यो रोकती हो?" मैंने कहा, "बेटा, देखो तुम्हारे हाथो से खून बह रहा है, यह मकई के दाने भी लाल हो रहे हैं।" वह कहने लगा, "ममी, क्या हाथ भी हमे काम नही करने देते?" इतने मे घर की मालिकन आई और बच्चे को देखकर कहने लगी, "तुम मा का दिल नही रखती हो, बहिन। देखो, इन सब बच्चो के हाथो मे कितने छाले पड गये है।" यहकह कर उसने बच्चो को काम करने से रोका।

थोडी देर बाद ही एक स्त्री आई और कहने लगी, "न जाने तुम्हारे पति है या नही। अब तुम्हारा क्या होगा? चलो अब इन बच्चो को मागने के लिए भेज दिया करो। कोई रहम खाकर कुछ दे ही देगा। तुम्हारा काम चल जायगा। तुम कही बैठ जाओ तो अच्छा है, बच्चे भी बच जायगे।" बैठ जाने का मतलब मैं समझती थी। मै एकदम काप उठी परन्तु चुप रही। उस सीधी-सादी औरत को क्या मालूम कि आत्मगौरव के आगे कठिन-से-कठिन बलिदान भी कुछ कीमत नही रखता। वे तो पेट पालना भर जानती थी चाहे कैसे भी पले। इतने मे मेरा भाई बाहर से आया साथ ही उसका बाप भी था। दोनो कुछ घबराये से थे। मैंने पूछा, "क्या बात है।" उसका

बाप कहने लगा, "पडौस के कुछ आदमियो ने तुम लोगो को यहा देख लिया है और कबाइलियो से जाकर कहा है कि इनके यहा कुछ हिन्दू स्त्रिया है। बडा गजब हुआ। अब लडकियो का क्या होगा? बहिन सुनो, अगर तुम बुरा न मानो तो इन लडकियो के बचाव की एक तरकीब है सो यह कि जब ये आये तो ये कलमा पढ दे और कहे कि हम मुसलमान है।" बच्चो ने कही स्कूल मे पढ-सुनकर कलमा सीखा था। कहने लगे, "भला कलमा पढने से कही कोई मुसलमान बनता है?" मैने भाई से कहा, "झूठ कभी छिपता नही। यह न समझो कि मै कलमा पढना नही चाहती। सिखाओ मुझे—मै पढती हू। परन्तु मै झूठ नही बोलूगी। मेरे मुह से उस समय एक शब्द भी नही निकलेगा। चाहे तुम कितना ही रटाओ। तुम घबराओ नही। भगवान् सब ठीक करेगे।" वह कहने लगा, "आज वे घर-घर मे से छिपी हुई हिन्दू स्त्रियो को निकाल कर बुरी तरह ले जा रहे है। न जाने खुदा अब क्या करना चाहता है?"

खाना चूल्हे पर धरे का धरा रह गया। डर के मारे भूख मर गई। उन लोगो को अपनी भी बडी चिंता थी, क्योकि कबाइली हिन्दू स्त्रियो को ढूढने के बहाने मुसलमानो के घरो मे घुसकर उन्हे भी लूटते थे। कही-कही तो उनकी स्त्रियो का भी अपहरण करते थे। देखते-देखते चार बज गये। तभी हट्टे-कट्टे दो मुसलमान हाथो मे बन्दूके लिए वहा आ पहुचे। उनमे एक उस गाव का नम्बरदार था दूसरा अक्सर हमारे घर शहर मे दूध देने आया करता था। मैने उसे पहचाना, पर मै कुछ बोली नही। उन्होने आते ही गरजकर कहा, "निकालो इन्हे यहा से। कबाइली तुम लोगो को बुला रहे है।" हम सब घर से निकले। वे साथ आये। रास्ते मे जल्दी-जल्दी चलने की डाट भी बता रहे थे। मैने दोनो लडको से कहा, "बेटो! तुम्हारी मुझे चिंता नही है। सिर्फ एक बात समझाती हू। सुनो! मौत से मत डरना। वह हमारी दोस्त है। अगर तुम पर कोई फायर कर दे, तो छाती आगे करना। भागकर पीठ पर गोली न खाना।" दोनो एक दूसरे की तरफ देखकर कहने लगे, "हम मौत से नही डरते।" मैने फिर बडी लडकियो से कहा, "पुत्रियो!

समय ने हमे सब कुछ दिखाया। अभी न जाने और क्या होगा। तुम्हे सोच समझकर काम करना चाहिए। भारत की वीर वालाये समय पडने पर मौत से खेली है यह ध्यान रखना।"

कुछ दूर चलकर वे हमे एक स्थान पर ले गये। वहा पहले से ही कई हिन्दू व सिख मर्द तथा स्त्रिया वैठी थी। सामने दो कवाइली खडे थे। कारतूसो की माला पहिने वे वन्दूके लिए हुए वहा पहरा दे रहे थे। हमे भी उस टोली मे विठाया गया। इतने मे और कवाइली आये, उनका रूप वडा भयानक था। उन्होने कुछ देर आपस मे मन्त्रणा की और फिर स्थानीय मुसलमानो से वोले, "देखो, इन्हे रात भर यही रखो और एक वछडा मारो। वह इन काफिरो को खिलाओ ताकि ये सब मुसलमान वन जाय।" इतना कहकर वे चले गये और मै भगवान् का स्मरण करने लगी, "प्रभो! हमारी लाज तुम्हारे हाथो मे है। मुझे तुम पर विश्वास है। तुम ही अन्त तक बचाने वाले हो।"

कुछ देर वाद मेरा भाई आया और कहने लगा, "वहिन! तुम चिंता मत करो। जवतक मै हू मुझे तुम्हारी चिता है।" मैने उसे अपने वे गहने दे दिये जो मैने घर से निकलते समय तन से उतार कर रख लिये थे। उसने उन्हे लेते हुए कहा, "यह तुम्हारी अमानत है, वहिन! जव चाहो ले लेना।" हम वात कर ही रहे थे कि वह व्यक्ति जो नम्वरदार के साथ अभी हमारे पास आया था मेरे समीप आया। कहने लगा, "आपने मुझे पहचाना? मै आपके यहा दूध वेचने आया करता था। तव आप हम लोगो के सामने वाहर नही आती थी।" मैने कहा, "मुझे खेद है कि मै घर से कुछ भी साथ नही लाई। मुझे याद है कि हमे तुम्हारे कुछ रुपये देने है। यह तुम्हारा ऋण हम पर रहेगा।" वह कहने लगा, "मुझे अफसोस है कि आपकी कुछ मदद नही कर सकता। हमे कवाइलियो का हुक्म मानना पडता है। मुझे माफ करना।"

: ५ :

इस्लाम की शिक्षा

कुछ क्षण के बाद वे दोना कवाइली नवयुवक आये और कहने लगे, "इन्हे हम आज दोमेल ले जायेगे इसलिए वछडा न मारो।" और फिर एक-एक स्त्री-पुरुष की बुरी तरह तलाशी होने लगी। जिसके पास पैसा सोना जो कुछ भी था वे सब छीन रहे थे। लोग भागते हुए घरो से काफी चीजे साथ ले आये थे। कई स्त्रियो ने कमीजो के बार्डरो और सिलवारो मे नोट सी रखे थे, कइयो ने कमर से जेवर बाध रखे थे। जिनकी कमर से जेवर बधे हुए मिले, उनकी सख्ती से तलाशी ली गई। जिनकी कमीजो के बार्डरो मे से धन छिपा मिला, उनकी कमीजे उतरवा ली गई।

मेरी भी बारी आई। जब एक कबाइली ने मेरी कलाई पकडी तो मेरे मुह से राम निकला। उसने झटका देकर मेरी कलाई छोड दी और कहा, "तुम इस झूठे मजहब को छोड दो। सच्चा मजहब इस्लाम है। जाओ उस तरफ खडी हो जाओ।" वे फिर बच्चो की तलाशी लेने लगे। एक ने बच्चो की जेबे देखी, जब कुछ न मिला तो सबको मेरे पास खडा किया। इतने मे मेरा भाई वहा आया। उसने कबाइलियो से कहा, "खा, इन्हे मै घर ले जाऊगा, इजाजत है ?" उन्होने कहा, "ले जाओ।" पर साथ ही एक ने जब मेरी दो बडी लडकियो को देखा तो कहा, "सबको नही जाना होगा।" मैं रुक गई। भाई आखो मे आसू भर कर विदा हुआ।

तलाशी चल रही थी। जिन्होने अच्छे कपडे पहने हुए थे उनके कपडे ही उतार लिए जाते थे। बच्चो के गरम कोट, पुरुषो के 'पुलोवर', स्त्रियो के शाल, जो चीज मिलती, लेकर रख देते। उन्हे इस बात की परवाह नही थी कि किसी के पास वस्त्र रहा है या नही। भगवान् ने हमे पहले ही बुद्धि दी थी। हम घर से कुछ भी साथ लेकर नही चले। सयोग से हमने कपडे भी ऐसे पहिने थे जिन्हे देख कर कोई यह नही जान सकता था कि हम किसी अच्छे घराने से सम्बन्ध रखते है।

तलाशी समाप्त हुई, तो सबको चलने का हुक्म हुआ। सब चल पडे। आगे-आगे वे खुद चले और पीछे मेरी दोनो बडी लडकियो से चलने को कहा। मुझे उनकी नीयत पर सदेह हुआ। मैंने धीरे-धीरे लडकियो से कहा, "देखो! मौत से कभी न डरना। जब समय मिले, नदी मे या पहाड से कूद कर जान दे देना लेकिन जीतेजी अपने खानदान पर आच न आने देना। तुम उस भारत की सन्तान हो जहा स्त्रिया जिन्दा सती हो जाया करती थी।" मेरी बडी लडकी वीणा बोली, "माताजी, तुम चिन्ता मत करो। केवल हमारे इन नन्हे भाइयो का ध्यान रखो। हमे कुछ समझाने की आवश्यकता नही है। हमे अपने दिल और दिमाग से काम लेने दो। जो अपने दिल और दिमाग से काम नही लेता, दूसरा उसे कब तक रास्ता दिखा सकता है।" इस चौदह साल की बच्ची के मुख से ये शब्द सुनकर मुझे अचभा हुआ और कुछ शान्ति भी हुई। एक कबाइली ने हमे बाते करते देखकर डाटा और लडकियो को अपने समीप पीछे-पीछे आने को कहा। मै उन्हे अकेले आगे नही भेजना चाहती थी। इधर बच्चो से तेज चला नही जा रहा था। प्रातःकाल से वे भी भूखे थे परन्तु मै लडकियो के साथ रहने के लिए उन्हे भी भी अपने साथ घसीटे ले जा रही थी। उनके चेहरे मुर्झा रहे थे। मौत सामने खड़ी थी, तनिक पैर फिसल जाय तो धम से नदी मे गिरने का डर था। दूसरी ओर यदि कोई चल न सके तो उस भयानक जगल मे अकेले रह जाने का डर था। उस समय सब को अपनी-अपनी पडी हुई थी। न मा बच्चे की सहायता कर सकती थी और न पति पत्नी की सुध ले सकता था।

मैंने फिर कबाइलियो के पास जाकर बाते करनी आरम्भ की। अधेरा हो चला था और वे सबको तेज चलने को डाट रहे थे। टोली मे कई औरते गर्भवती थी। डर के मारे उन्हे गर्भ-वेदना हो रही थी। मैंने कबाइलियो से कहा, "मैंने सुना है कि पठान कौम बहादुर और वायदे की पक्की होती है। और बहादुर कौम स्त्रियो और मासूम बच्चो पर अत्याचार नही किया करती। परन्तु तुम इन मासूम बच्चो को डाट रहे हो। क्या तुमने खुदा को भुला दिया है? क्या तुम्हारा इस्लाम तुम्हे यही सिखाता है? सम यका

कुछ पता नही। अभी दो दिन पहले मेरा पति यहा का वजीर था, अब न जाने वह कहा है ? मै और ये बच्चे दर-दर की ठोकरे खा रहे है। हमे इस जिन्दगी से अपनी इज्जत और अस्मत वहुत प्यारी है। जहा तक होगा हम इसकी रक्षा करेगे, मगर तुम मेरी एक वात मान लो तो मै तुम्हारा एहसान मानूगी, वह यह कि तुम मुझे अपने सरदार के पास ले चलो।" ये दोनो हिन्दुस्तानी समझते थे। मेरी बाते सुनकर कहने लगे, "वाकई हमारा इस्लाम यह नही वताता परन्तु हम क्या करे। हमे आज्ञा ही ऐसी है।" उनका दिल अब कुछ-कुछ पिघल गया था। अव वे हम सवको धीरे-धीरे चलने देने लगे। कुछ क्षण वाद वे फिर बोले, "हम कितनी दूर से यहा लडने के लिए आये है। हम अपना परिवार वही छोड आये है। हमारे भी मा, वाप, भाई-बहिन, है। अभी हमारी शादी नही हुई है।" मैने कहा, "तुम परिवार वाले हो, सवका दुख दर्द जानते हो और हो भी जाति के वहादुर पठान। तुमसे तो हम नेकी की ही आशा रखते है।" यह सुनकर वे एक दूसरे का मुह ताकने लगे।

मेरी वडी लडकी इनके साथ-साथ चल रही थी। मै जरा पीछे रह गई क्योकि मेरा वडा लडका थक गया था। मै न उसे छोड सकती थी और न लडकी को। पर लडकी पर मुझे भरोसा था। मै इसी उधेडवुन मे थी कि लडकी और एक युवक लौटकर मेरे पास आये। युवक कहने लगा, "जहा आज रात हम आप लोगो को ले जा रहे है, वहाँ वडे जुल्म हो रहे है परन्तु हम कसम खाकर कहते है कि हम तेरी और तेरे इन वच्चो की हिफाजत करेगे। तू हमारी मा है और ये लडकिया हमारी बहने।" मै हैरान थी कि यह परिवर्तन कैसे हुआ ? लडकी ने उससे क्या कहा जो वे राक्षस से देवता बन गये। अव वह धीरे-धीरे चलने लगे थे और हम सवको भी धीरे-धीरे चलने को कह रहे थे। उनमे मनुष्यता जाग उठी थी। शायद उन्हे इस्लाम की शिक्षा याद आ रही थी।

दस वजे हम दोमेल पहुचे। वहा काश्मीर रियासत का एक जानवरो का अस्पताल था जो जलने से रह गया था। यह कृष्णगगा

के किनारे पर था। इस मकान के कमरे अच्छे वडे-वडे थे। इन्ही मे से एक मे हम रखे गये। वहा तीन दिन से और भी हिन्दू वच्चे और स्त्रिया रखी गई थी। कमरे मे इतना अधकार और इतनी भीड थी कि दम घुटता था। जैसे ही हमारी टोली कमरे मे आई वैसे ही वहशी कबाइली और डोगरा रेजिमेट के कुछ वागी मुसलमान फौजी तूफान की तरह अन्दर आये और स्त्रियो और लडकियो को टार्चो से देखकर ले जाने लगे। देखते-देखते एक कोहराम मच गया। वे वालाये और स्त्रिया उनके साथ जाने से इन्कार कर रही थी और चीख रही थी। परन्तु पाकिस्तान के भेजे हुए मुजाहिद कब तरस खानेवाले थे। उस समय लग रहा था कि नरक यदि कही है तो यही है परन्तु इसी नरक के बीच मे वे दोनो नवयुवक हमे एक कोने मे ठहरा कर खुद हमारे सामने खडे हो गये। हमारे पास ही बाहर जाने का एक दर्वाज़ा था। मै और वच्चे यह अत्याचार देखकर सिहर उठे थे। मै फिर भी बच्चो से कह रही थी, "राम को पुकारो, वही रक्षा करेगा।" नवयुवक कवाइली कहने लगे, "घबराओ मत। हम तुम्हारी हिफाजत करने का वायदा कर चुके है। जहा तक बन पडेगा हम उसे पूरा करेगे।"

और उन्होने उस ओर किसी को नही आने दिया। वहा वहुत शोर मच गया था। उसे सुन कर बाहर से उनका एक अफसर आया। उसने कहा, "थोडी देर के लिए सबको छोड दो।" पर वे कहा मानने वाले थे।

थोडी देर वाद जव वे कुछ औरतो और लडकियो को ले गये तो उन दो नवयुवक पहरेदारो के अतिरिक्त उनका कोई और आदमी वहा नही रहा। तब उन्होने हमे द्वार के पास वैठाया और स्वय बदूके लेकर द्वार के वीच मे वैठ गये। उसी समय पास के कमरो से लोगो की चीख-पुकार आने लगी। यहा तीन दिन से विना अन्न-पानी के लोग वद थे, उनमे कई व्यक्ति अपनी अन्तिम घडिया गिन रहे थे पर वहा कौन सुनता ? मै यह देखकर चुप न रह सकी। मैने अपने पहरेदारो से कहा, "भाई इन असहाय लोगो को पानी दो, खुदा तुम्हारा भला करेगा।"

सचमुच वे देवता बन गये थे। उठे और वारी-वारी घडो मे पानी लाकर उन्हे दे आये। अधेरे मे किसे मिला किसे नही यह नही मालूम। परन्तु फिर भी कुछ व्यक्तियो के प्राण अवश्य बच गए। शेष मनुष्यता की दुहाई देते हुए इस असार ससार से कूच कर गये।

अनेक नारिया कोनो मे दुबकी हुई पडी थी। उनके बच्चे रो रहे थे। उनमे से कइयो ने तो अपने सतीत्व की रक्षा के लिए अपने बच्चो तक का गला घोट दिया था। कई देविया शौच के बहाने बाहर गई और कृष्णगगा की गोद मे सो गई। अनेको माताओ ने अपने जिन्दा बच्चे इस नदी की भेट कर दिये।

यह खबरे कबाइली सरदारो के पास पहुची। उन्हे स्त्रियो का इस तरह मरना मजूर नही था, वे उन्हे घुल-घुल कर मरते देखना चाहते थे। पहरा कडा कर दिया गया। एक और पार्टी आ गई। वे सब पुरुषो को पकड-पकड कर एक दूसरे कमरे मे ले गये। वे निहत्थे पुरुष यह समझ रहे थे कि ये लोग हमे मारने के लिए ले जा रहे है। अन्तिम विदा का वह दृश्य बडा करुण था। बच्चे उनसे लिपट-लिपट जाते थे, पर वहा तरस खानेवाला कौन था?

मेरे पास दो-तीन स्त्रिया बैठी थी। एक मा-बेटी थी। बेटी गर्भवती थी और उस समय उसे प्रसव-पीडा हो रही थी। वे लोग उसके पति को भी ले गये। जब सब चले गये तो उन दो नवयुवको ने दरवाजे के बाहर मेरी दो लडकियो को सुलाकर उनपर कम्बल डाल दिया। जो भी वहा से गुजरता और पूछता, "यह क्या है?" तो वे दोनो उत्तर देते, "कुछ नही, सिपाही सो रहे है।" मैने उनसे पूछा, "तुम खाना नही खाओगे?" कहने लगे, "हमे कई-कई दिन ऐसे ही बिताने पडते है। और अगर हम यहा से चले भी जाय, तो तुम मुसीबत मे फस जाओगी।"

इतने फिर कई कबाइली मीरपुरी और जम्मू निवासी मुसलमान बागी फौजियो के साथ टार्च हाथ मे लिये वहा आये। वे भी टार्चो से देख-कर स्त्रिया को ले जाने लगे। फिर हाहाकार मच गया। कबाइलियो से

अधिक निर्दयी वे बागी फौजी थे, उन्होने स्त्रियों की गोद से बच्चे छीन-छीन कर नीचे पटक दिये और खुद उनकी माओ को घसीट कर ले गये। जो नारी विरोध करती थी और कहती थी, "मुझे जान से मार डालो, मुझे ले मत जाओ, मैं नही जाऊगी," उसे कई आदमी उठाकर ले जाते थे। जिस ओर हम बैठी हुई थी कई बार उन्होने उस ओर आने की भी चेष्टा की पर हर बार उन दो बहादुर पठानो ने बन्दूको के कुदो से उन्हे मारा और डांट-कर कहा, "अगर तुम लोगो ने इस तरफ आख उठाई तो तबाह हो जाओगे।"

मै अपने मन मे सोचने लगी, कबतक ये लोग इन्हे रोके रखेंगे। मुझे भी बच्चो को लेकर कृष्णगगा की गोद मे समा जाना चाहिए पर फिर सोचा, "अगर मेरे बाद एक भी बच्चा जीवित रहा तो उसकी क्या दशा होगी। मेरे पति कितने दुखी होगे।" साथ ही यह विचार भी मन मे आता था कि जब तक भगवान् हमारी रक्षा करेंगे तब तक मै आत्महत्या नही करूगी यदि मुझे मरना ही है तो मै कुछ करके मरना चाहती हू। जिस मौत का कोई उद्देश्य नही, उससे मुझे नफरत थी।

आधी रात के बाद कुछ शांति हुई। तब उन दोनो नवयुवको ने कहा, "अब हम अपनी जगह अपने ही दूसरे दोस्तो को छोडे जाते हैं। हम चाहते है कि इन लडकियो को तुमसे कही अलग रखे। सुबह होते-होते-यदि इनपर किसी की नजर पड गई तो गजब हो जायगा। तुम्हे एतबार हो तो हम इन्हे अपने साथ ले जायेंगे और जब तुम किसी ठिकाने पर पहुच जाओगी तब हम इन्हे तुम्हारे पास पहुचा देंगे। तुम चिंता मत करो। खुदा तुम्हारी मदद करेगा।" यह कहकर वे चले गये और अपनी जगह दो बुड्ढे पठानो को छोड गये। उन्होने आते ही बच्चो को अपने पास से सेब, अखरोट और खुमानिया दी। बच्चे भूखे थे, खाने लगे। मैंने इन नये पहरेदारो से कहा, "क्या तुम बता सकते हो कि यहा के जिला-अफसरो के साथ कैसा सलूक हुआ। मेरा पति उन्ही मे था। वह यहा का वजीर था।" उनमे से एक बोला, "उसकी तो हमें पहचान नही। पर हमें सबसे पहले अफसरो को खतम करने का हुक्म था। हमने

आते ही सबको मार डाला।" यह सुनकर मेरा सिर चकराने लगा फिर वह कहने लगा, "न जाने क्यो मेरा दिल मुझे तुम्हारी और इन बच्चो की मदद करने को मजबूर कर रहा है।" मैने किसी तरह सभलकर कहा, "खुदा को याद करो। इस समय यहा इन्सानियत सिसक-सिसक कर दम तोड रही है। कौन जानता है कि हमारी सहायता के लिए खुदा ने तुम्हारे रूप मे फरिश्तो को भेजा हो।" यह सुनकर वे कलमा पढने लगे। मुझसे कहा, "तुम भी पढो।" मैने कहा, "मुझे नही आता।" वे मुझे सिखाने लगे।

तभी बाहर से एक और गिरोह आया। कमरे मे फिर वही करुण-क्रदन शुरू हुआ। जिस ओर दरवाजे के पास हम बैठे थे उस ओर भी दो लुटेरे आये और पूछने लगे, "यहा कौन है?" तब इन दोनो पठानो ने चिल्लाकर कहा, "यहा पर मत आना। तबाह हो जाओगे।" वे लोग दूसरी राह से भीतर आकर औरतो को ले जाने लगे। मेरे पास तीन स्त्रिया और थी। वे भी उन नेक पठनो की दया से बची रही। कुछ देर बाद उन नेक पठानो ने मुझसे कहा, "क्या तुम हमारे मुल्क आना पसद करोगी? हम तुम्हे वहा पर एक जियारत पर रक्खेगे। देखो, इस मुसीबत के वक्त मे खुदा तुम्हारी कितनी मदद कर रहा है।" मैने कहा, "मै अपना वतन छोडकर तुम्हारे देश कैसे जा सकती हू? मेरा पति है, ये बच्चे है। अभी मेरी अवस्था जियारत पर बैठने की नही है।"

हम ये बाते कर ही रहे थे कि कमरे मे से फिर सिसकने की और कराहने की आवाजे आने लगी। देखा—कुछ युवतिया बाहर जा रही है और बिछुडते समय दूसरी नारियो से क्षमा माग रही है। "हमारे अपराध क्षमा करना! न जाने किन पापो का फल अब हमे मिल रहा है। हम अब जीना नही चाहती।"

सुनकर मेरा माथा ठनका। आखिर ये क्या करने जा रही है। पर उस समय न पूछने का समय था न कुछ करने का। मै भोर होने की राह देखने लगी।

: ६ :

कृष्णागंगा की गोद में

पौ फटी। वे दोनो नवयुवक अपने कहे के अनुसार मेरी दोनो लडकियों को अपने साथ ले गये। मुझे अपनी लडकियो पर तो पूरा भरोसा था ही, पर उन बहादुर नौजवानो पर भी कम नही था। उन्होने अपनी जान पर खेलकर हमे बचाया था। साथ ही स्त्रिया मुझसे कहने लगी, "क्या तुम्हे इन पर भरोसा है ?' यह सुनकर मै हैरान रह गई। रातभर उन्होने इनकी रक्षा की थी। वे चाहते तो उन्हे बिना रोकटोक उठाकर ले जाते। परन्तु भगवान् ने इनकी बुद्धि बदल दी थी। यही विचारकर मैने कहा, "उनसे मुझे किसी प्रकार की आशका नही है और अपनी लडकियो पर मुझे पूरा भरोसा है। समय पडने पर वे जान पर खेलना जानती है।"

पूरी रोशनी हो जाने पर शेष सब स्त्रियो को बाहर निकाला गया। वे सब दोमेल पुल के पास, कृष्णगगा तट पर, शौचादि के लिये ले जायी गई। मै भी उनके साथ थी। मैने वह रोमाचकारी और अद्भुत दृश्य देखा जिसे मै कभी नही भूल सकती। कुछ स्त्रिया किनारे पर खडी हुई थी और कुछ पानी के बीच चट्टानो पर। उनमे से अनेक माताये अपने बच्चे को नदी मे फेक रही थी। कुछ बच्चे तो नि सहाय एकाध डुबकी खा कर बह जाते थे पर कुछ तट के पास ही अपनी माओ से चिपट जाते थे और वे माताये अपने ही हृदय के उन टुकडो को फिर पानी मे फेक देती थी। उस समय उन देवियो की आकृति बहुत भयानक हो उठी थी। उनकी आखे सूज गई थी और उनके चेहरे मुर्दो की भाति भावहीन, रक्तहीन और चेष्टाहीन हो रहे थे। वे यही नही रुकी। देखते ही देखते उन्होने स्वय भी नदी के तीव्र प्रवाह मे छलागे लगानी शुरू कर दी। यह देखकर किनारे पर खडे हुए कबाइली दौडे पर इससे पहले वे कुछ कर सके चट्टानो पर बैठी नारिया जोर से चीखी और धम से नदी मे

इतने में एक कबाइली मेरे पास आया और कहने लगा, "तुम छलांग क्यों नहीं लगाती? लगाओ हम नहीं रोकते।" मैंने कहा, "मैं ऐसा नहीं करूंगी।" यह कहकर मैं किनारे से हट सड़क पर आ गई। मैंने देखा—कई कबाइलियों की आखों से आसू बह रहे है। मैं समझ गई कि यह हत्याकाड देखकर ये लोग अपने किये पर पछता रहे है। मेरा साहस बढा और बेधड़क एक टोली में जाकर कहने, लगी, "अब क्यों आसू बहाते हो? अपने किये पर पछता रहे हो न? क्या तुम ऐसी ही लड़ाई यहा लड़ने आये हो? क्या यह काम करते हुये तुम अपने आपको कामयाब समझते हो? क्या तुमने खुदा को भी भुला दिया है? याद रखो, यह खून तुम्हारे सिरो पर सवार होकर बोलेगा? तुम्हें अपने किये का फल मिलेगा।" मेरी यह बाते सुनकर साथ की स्त्रियो ने टोक कर कहा, "चुप रहो! तुम इन्हे क्या कह रही हो? अपने ऊपर मुसीबत क्यों मोल ले रही हो?" मुझे नही मालूम कि इनमे से कितनो ने मेरी बात समझी परन्तु एक आदमी मेरे समीप आया और बोला, "तुम जो कुछ कह रही हो ठीक कह रही हो। मुझे बताओ मैं तुम्हारी क्या सहायता करू?" वह कोई ओहदेदार मालूम पड़ता था। मैं उससे क्या कहती। लड़कियों का ध्यान आया। वे कहा होगी? उनसे कैसे मिलूगी? मैं यही सोच रही थी कि वह फिर बोला, "मै तुम्हारे साथ एक शरीफ आदमी भेजता हू। वह आराम से तुम्हें जेल मे पहुचा आयेगा। वहा और भी बचे हुए हिन्दू बन्द है।" मैंने उसे धन्यवाद दिया और बच्चो को लेकर चल पडी।

जब हम जरा आगे बढे तो तीनो स्त्रिया भी हमारे पीछे-पीछे आई और साथ ही कुछ लोग आये जो रात को हमारे कमरे मे से छाट कर अलग किये गये थे। साथवाली एक देवी को गर्भ-वेदना हो रही थी। इस कारण उसे एक कदम चलना दूभर हो रहा था। परन्तु ज्यो-त्यो करके रोती-चिल्लाती वह चली आ रही थी।

हमें अब शहर की ओर जाना था। वही पर एक छोटी-सी पहाडी

के आचल मे जेल थी। सारा मार्ग जले हुए मकानो के खडहरो से भरा हुआ था। हमारे साथ दो-एक सिपाही भी आये थे। उनके पास बदूके थी। वे सब लोगो से 'पाकिस्तान जिन्दाबाद' कहलवाते थे और जो नही कहता था उसे डाट देते थे।

जो शरीफ कबाइली मेरे साथ खास तौर से आया था, उसकी आयु मुश्किल से बाईस वर्ष की थी। चलते-चलते मै उससे ऐसे ही बाते करने लगी। मैने पूछा, "तुम इतनी दूर यहा कैसे आये ?" वह कहने लगा, "पाकिस्तान के हुक्मरानो ने कबाइलियो मे इस बात को फैला रखा है कि इस्लाम खतरे मे है और रियासत मे मुलसमानो पर बड़े जुल्म हो रहे है। हमारी बहू-बेटिया महफूज नही है।" इसपर मैने उसे बताया, "चार दिन पहले रियासत मे सब ठीक था परन्तु तुम लोगो ने आकर यहा तूफान पैदा कर दिया है।" उसने फिर वही जवाब दिया कि पठान यह नही सह सकते थे कि उनके होते हुए कोई उनकी बहू-बेटियो पर उगली उठा सके। पाकिस्तान बराबर यह कह रहा है कि रियासत मे हमारी मा-बहनो पर हमले हो रहे है। मै क्या कहती, कुछ क्षण बाद मैने फिर पूछा, "क्या तुम्हे कुछ वेतन मिलता है ?" वह कहने लगा, "अभी तक कुछ फैसला नही हुआ है। उन्होने हमे सिर्फ यही कहा है कि हिन्दुओ को कत्ल कर दो। उनकी जो औरत या लड़की तुम्हे पसन्द आवे ले जाओ। जो माल तुम्हे मिले लूट लो। घर जला दो। हमे सिर्फ जमीन चाहिए।" मैने कहा, "भाई, बुरा न मानना। हमने सुना था कि पठान कौम बडी बहादुर होती है पर जो कुछ हमने देखा वह तो कोई बुजदिल और जलील भी नही करेगा। तुमने अपने ईमान को भुलाकर ये सब खून किये है। ये तुम्हारी गर्दनो पर सवार रहेगे।" वह बोला, "हमारे वतन से बहुत से लोग लूट-मार के लिए आये है। हमने सुना है कि काश्मीर मे जर (सोना) बहुत है।" मैने पूछा, "तुम लोग हमे जेलो मे क्यो ठूस रहे हो ?" वह मेरी बात का कुछ उत्तर न देते हुए कहने लगा, "मर्दो को तो हमने तकरीबन खत्म कर दिया है। जो पहले दिन

इधर-उधर छिप गये थे वही थोडे से बच गये है। जो औरते बची है वे या तो बडी-बूढी या जख्मी है। हा, कुछ जवान औरते भी जेल मे कैद कर रखी है।"

राह चलते हमे बराबर स्थानीय मुसलमान मिलते रहे। उनमे से कुछ हमारी दशा पर दुखित थे तो कुछ खुश भी थे। कही-कही कबाइलियों की टोलियो की टोलिया दीख पडती थी। कोई नगे पैर तो कोई फटा पुराना जूता पहने। कन्धो पर बन्दूके और गले मे कारतूसो की माला लिये हुए। जहा-तहा विकराल हसी हसते घूम रहे थे वे। कही-कही तो वे लोग लूट के माल पर आपस मे झगड भी रहे थे।

एक स्थान पर वे मेरे लडके विमल और लडकी कमलेश को देखकर कहने लगे, "बच्चो की यह जोडी कितनी सुन्दर है। हम चाहते है कि इन्हे अपने साथ ले जाये।" हमारे साथ के सिपाही ने अपनी ज़बान मे उनसे कुछ कहा जो हमारी समझ मे नही आया। वे बोले, "तुम जब इन्हे जेल से छोडोगे तो हम वहा से इनको उठा लावेगे।" यदि वे चाहते तो बलात् उन्हे छीनकर ले जा सकते थे पर ईश्वर जिनकी सहायता करते है उनका बाल भी बाका नही हो सकता। वे ललचाई आखो से बच्चो को देखते रह गये और हम आगे बढ गये।

अब हम उस जगह पहुचे जहा से हमारी कोठी की दीवार नजर आरही थी। हमने वहा खडे होकर अपने उजडे घर को देखा। यह रसोईवाला भाग था जो जलने मे रह गया था। मैने अपने साथ के सिपाही से कहा, "वह हमारा घर है।" वह बोला, "आजकल वहा हमारे आदमी है।" हमे इस स्थान से आगे जाना था। मन चाहता था कि यही बैठकर अपने उजडे घर को देखते रहे, किन्तु अब उस ओर देखना अपराध था। लाचार हम आगे बढे। कुछ ही देर बाद जेल के फाटक पर पहुच गये।

वहा पर कुछ लोग पहरा दे रहे थे। हम अन्दर भेजे गये। हमारे साथ के सिपाही ने सलाम करके हमसे विदा ली। अन्दर जाकर देखा

जहा औरते, बच्चे और पुरुष भरे पडे है। भीड-की-भीड इकट्ठी है। अनेको के हाथ, टाग ओर बाजुओ पर छ-छ सात-सात गोलिया लगी है जो बदन के भीतर रहने के कारण उनके लिए असह्य पीडा का कारण बन रही है। एक ओर नन्हे-नन्हे बचे चार चार दिन के भखे-प्यासे तडप रहे है। कही कोई अपने बच्चे को लिये रो रहा है तो कोई परिवार के लिए। किसी की लडकी छीन ली गई है इस कारण वह विलाप कर रहा है। अनेक नवयुवतियो ने अपने चेहरो पर सूरत बिगाडने के लिए गोबर, मिट्टी ओर कीचड मल रखी है। यह दृश्य देखकर मुझे कपकपी आने लगी पर तभी मैने वहा शिवदयाल आर ओमप्रकाश को देखा। वे हमारे पास आये ओर हमे एक कमरे मे ले गये। कमरा क्या वह नरक-कुड था।

: ७ :

वज़ीर साहब का बलिदान

मै कमरे मे एक ओर एक टूटी चारपाई पर बच्चो को लेकर बैठ गई। बैठते ही मैने शिवदयाल और ओमप्रकाश से मेहता साहब के बारे मे पूछा। उनके साथ जेल का भूतपूर्व दारोगा था। वह बोला, "माताजी, क्या कहू। कुछ कहते नही बनता। मेहता साहब को तो पहले दिन ही ।"

क्षण भर मे मै सब कुछ समझ गई। मेरी आखो के आगे अधेरा छा गया। सारा बदन कापने लगा। ऐसा मालूम होने लगा कि मेरे प्राण अभी निकल जायेगे। पाच मिनट तक मेरी ऐसी ही दशा रही। फिर मैने अपने आप को सभाला और उनसे पूछा, "क्या तुम पूरा हाल बता सकते हो?" इस पर ओम् बोला, 'मै उस समय वही पर था पर मैने जानबूझ कर आपसे नही कहा। मै जानता था कि आप यह सुनकर आपे से बाहर हो जायगी। क्या ताज्जुब कि आप उस वक्त बच्चो को लेकर कोठी मे आजाती या आग मे कूद पडती। आप जरूर कुछ-न-कुछ कर

गुजरती और ये बच्चे बरबाद हो जाते। यदि आप कही बची भी रहती तब भी आपकी हिम्मत टूट जाती। सोचिए आप इतनी मुसीबतें कैसे सहन कर पाती।" मैंने रोते हुए कहा, "तुमने यह क्या किया। उन्होंने तो वतन के लिये अपने को मिटा दिया, पर मैंने क्या किया। मैंने यह प्रण कर रखा था कि जीते-जी कभी उनका साथ न छोडूगी। तुम अगर उस समय मुझसे कह देते तो मै कोठी मे जाकर बच्चो समेत वही स्वाहा हो जाती। पर अब मै क्या कर सकती हू। पास मे मौत का कोई साधन नही। लडकिया भी अभी तक नही आई है।" मुझे इस प्रकार विलाप करते देख वह बोला "मैं कसम खाकर कहता हू कि जब आप मर जायेगी तब मैं उसी जगह जहां वजीर साहब का सस्कार हुआ है, आपका भी सस्कार कर दूगा। चाहे इसके लिए मुझे कितना भी कष्ट क्यो न उठाना पडे।" भोला ओम् शायद यह समझ रहा था कि यह खबर सुनते ही मेरे प्राण पखेरू उड जायगे। काश कि ऐसा हो पाता परन्तु अभी तो मुझे बहुत कुछ करना और देखना शेष था। मैंने कहा, "इस समय मौत भी हमसे नफरत करती है, वह हमारे पास नही फटकती। अच्छा, लेकिन तुम यह तो बताओ कि यह सब कैसे हुआ?" यह सुनकर दारोगा बोला, "बाहर सब लोगो मे वजीर साहब के बलिदान की चर्चा है। उन्होने बडी बहादुरी से सच्चाई पर जान दी है। आप ओम् से पूछिए।" दरोगा कहता गया, "जब वजीर साहब अपनी कोठी से बाहर निकले तो वे सुपरिन्टेडेट पुलिस, सब-इन्सपेक्टर पुलिस और तेईस पुलिस के सिपाहियों को साथ लेकर हाई स्कूल की ओर गये जहा कुछ दिन पहले एक तोप गाड कर रखी गई थी। वहा नौ डोगरे सिपाही नियत थे। पर वे भाग आये थे। सब ने मेहता साहब को वहा जाने से रोका पर उन्होंने एक न सुनी और चल दिए। वहा कोई सिपाही नही था। हा, कुछ वहीं के मुसलमान जमा हो गये थे। वे वजीर साहब से कहने लगे, 'तूने कभी किसी का कुछ नही बिगाडा है। हमे तेरी शराफत का लिहाज है। हम चाहते हैं कि तू अपनी जान यूही न गवा। इस समय तू कुछ नही कर सकता। पाकिस्तानी हजारो की गिनती में आये है। तेरे साथ हम वायदा करते

है कि कही-न-कही छिपाकर हम तुझे बचायेगे।' परन्तु उन्होने किसी की बात न मानी बल्कि उनसे कहा, 'तुम्हारे मुल्क पर मुसीबत आई है इसे मिलकर बचाओ। तुम लोग उल्टा मुझे छिपने के लिए कह रहे हो। चलो जहा पुलिस है वहा जाकर हम मोर्चा लगावे,' पर वहा उनकी कौन सुनता था। उन्होने पुकार-पुकार कर सबको मुकाबले के लिए लाना चाहा पर सब लोग, यहा तक कि पुलिस के सिपाही भी, तितर-बितर हो गये। कुछ थोडे से आदमी उनके साथ वहा आये जहा पुलिस गुप था। वहा भी किसी मोर्चा ने नही बनाया। जब वहा उनकी कोई मानने वाला ही न था तब वह क्या करते? विवश होकर उन्होने कहा, 'मैने मुकाबला करने की बहुत कोशिश की पर कोई सुनता ही नही है। सबको अपनी-अपनी पडी है। अब मै तुम्हे नही बचा सकता। मै अब घर जाता हू। वहा जाना भी मेरा फर्ज है।' लोगो ने कहा, 'तुम्हारे घर मे बहुत से कबाइली घुस गये है वहा मत जाओ।' पर वह कब माननेवाले थे। वह अपनी कोठी की तरफ आये। साथ मे एक राजपूत पुलिस सब-इन्स्पेक्टर था। वह फाटक के बाहर रहा और वजीर साहब भीतर गये।" इतना कहने के बाद वह चुप हो गया। उसका गला भर आया, कहने लगा, "आगे का हाल ओम् से पूछिये।" मैने मशीन की तरह ओम् की ओर देखा। वह भी रो रहा था। उसने रूधे कठ से कहा, "जब मेहता साहब अदर आये, तब मै बाथरूम मे छिपा हुआ था। मैने उन्हे खिडकी के शीशे मे से भीतर आते देखा। उनकी नजर मुझपर पडी, पूछा, 'ओम्, तुम्हारी माताजी कहा है?' मैने उन्हे हाथ से जियारत की ओर इशारा किया। मेरे इशारे का मतलब समझ कर पुलिस अफसर तो पीछे वापिस मुड गया परन्तु वे वैसे ही खडे रहे। मुझसे कहने लगे, 'तुम्हारी माताजी क्यो भागी? यह भागने का नही बलिदान का समय था। मै घर इसीलिए आया था कि सब मिलकर मौत को गले लगायेगे।' मैने धीरे से कहा, 'आप यहा से चले जाइये। अन्दर साठ कबाइली है।' परन्तु वे वही डटे रहे।" यह कहते हुए ओम् बच्चो की तरह रोने लगा। मने उससे कहा, "ओम्" वे जानते थे कि मौत की साधिन

मोत ही है और कोई नही। मै बुजदिल थी जो भाग आई। अब उसका फल भुगत रही हू। अच्छा, आगे क्या हुआ ?" वह बोला, "इतने मे कबाइली बाहर निकल आये। वजीर साहब को देखकर सबने बन्दूके तान ली ओर कहा, 'काफर,पाकिस्तान मजूर करो और अपने सर से हैट उतारो।' वे चुप रहे। फिर वे कहने लगे 'बता तू हिन्दू है या मुसलमान।' फिर भी वे चुप रहे। इतने मे हमारे पडौस का एक मुसलमान वहा आया और वजीर साहब से कहने लगा, "साहब, कह दो मै मुसलमान हू, बच जाओगे। तुम्हारे छोटे-छोटे बच्चे है। क्यो अपनी जान से हाथ धोते हो ?" इतने मे कबाइलियो ने फिर पूछा, "तुम हिन्दू हो या मुसलमान ?" उस बार वजीर साहब ने कहा, "मै हिन्दू हू, मुसलमान नही।" बस फिर क्या था। सबने बन्दूके तान ली। एक दो तीन फायर पर फायर हुए। छाती आगे किये वे मुह से राम राम कहते गये। चौथी गोली लगने पर वे नीचे गिर पडे। मै यह हत्याकाड देखकर भागा-भागा तुम्हारे पास आया। मुझे उस समय कुछ भी दिखाई नही दे रहा था, तभी तो मै उस समय रो रहा था।" वह चुप हो गया। मैने यत्रवत् फिर पूछा, "तुम्हे इससे आगे का कुछ हाल मालूम है ?" वह बोला, "शिवदयाल को मालूम है।" मैने शिवदयाल से पूछा, "कहो शिवदयाल, उस शव का क्या हुआ ? वह कहा है ?" वह कहने लगा, "मेरे साथ का दूसरा साथी रामचद आपकी कोठी के रास्ते से ही भागा था। रास्ते मे उसने वजीर साहब की लाश पडी देखी। वह वही खडा होगया। उसी समय वहा पडोस का एक मुसलमान आया। उन दोनो ने लाश को उठाकर आपकी कोठी के सोने के कमरे मे रखा और उनके पाव की चप्पल खोल दी। बाद मे कोठी को आग लगाई गई तो शव का दाह-सस्कार भी वही हो गया। मैने बहुत से मुसलमानो से सुना है कि जब कबाइली उन्हे मारकर बाहर आये तो कहते थे, "कि आज हमने एक डोगरा जवान मारा है। उसकी बहादुरी हमे देर तक याद रहेगी। हमे उसे जिन्दा गिरफ्तार करने का आर्डर था पर उसने ऐसे

जवाब दिये कि हमें गुस्सा आ गया और हमने फायर करके उसे खत्म कर दिया।" मैंने पूछा क्या उन्हे मालूम था कि वे यहा के वजीर है ?" शिवदयाल बोला, "वे तो उनका इम्तहान ले रहे थे। वरना वे लोग जानते थे कि वे वजीर हैं और यह उनका मकान है।" यह सुनकर मेरी आखो मे रुके हुए आसू फिर फूट पडे परन्तु शीघ्र ही मैं सभली और बोली, "मुझे खुशी है कि उन्होने अपना फर्ज पूरा किया। सचमुच उन्हे छिपना शोभा नही देता। वे शुरू से ही सच्चाई के पुजारी थे, अत मे भी उन्होने सत्य को ही वरा और उसके लिए अपने प्राण तक दे दिये।" मैंने बच्चो से भी कहा, "बेटा, देखो तुम्हारे पापा की कैसी शानदार मौत हुई। यह सबक तुम्हे भी सीखना है। सुनो, मुझे तब खुशी होगी जब हम सब उन्ही की तरह अपना फर्ज निभाते हुए हसते-हसते अपना बलिदान कर देगे। तुम खुश-नसीब बच्चे हो। तुम्हारा बाप बहादुर था।" तब हम सबने प्रण किया कि हम ऐसा कोई काम नही करेगे जिससे उनके पवित्र नाम पर धब्बा लगे या जिससे उनकी आत्मा को दुख पहुचे। उस समय मैं पागल की तरह उन्हे उपदेश दे रही थी। क्या वे मासूम बच्चे मेरी बात को पूरी तरह समझते थे ? मैं हृदय का बोझ हलका कर रही थी। रोकर नही बल्कि उनकी वीरता की बाते याद करके। जब आदमी को चारो ओर से बहुत सी मुसीबते घेर लेती है तब आप ही आप उसका धैर्य बध जाता है। मेरे साथ भी यही हुआ परन्तु जैसे-जैसे समय बीत रहा था लडकियो के लिए मेरी चिंता बढती जा रही थी।

: ८ :

मेरी दुर्बलता और मेरी शक्ति

जिस जेल मे हम बन्दी थे उसमे बराबर तीन दिन मे ला-लाकर व्यक्ति बन्द किये जारहे थे। तीसरे दिन उन्हे कुछ गोश्त-रोटी दी गई। वह किसी-किसी ने खाई। कइयो ने तो उसे लेने से इन्कार कर दिया।

उनके लिये राशन का प्रबन्ध हो रहा था। अनेक स्त्री-पुरुष पास के खेतो मे जाकर कमाद (गन्ने) तोड लेते थे और उन्ही से अपना पेट भर लेते थे। वह एक अद्भुत दृश्य था, स्त्रिया रोती भी जाती थी और खाती भी जाती थी।

अचानक वहा हलचल मच गई। मेरे पूछने पर साथ की स्त्रिया कहने लगी, "देखो, वे पाकिस्तानी आ रहे है। ये लोग दिन के समय कमरो मे घूम-घूम कर स्त्रियो को पसन्द करते है फिर रात को ले जाते है। तीन दिन से यहा पर यही हो रहा है। बाप के देखते बेटी को, पति के देखते पत्नी को उठा लिया जाता है। माओ की कोखो से बच्चे फेक दिये जाते है। तग आकर कई स्त्रिया जहर खाकर मर गई। कइयो ने खिडकियो के शीशो का चूर्ण खाकर प्राण देने का प्रयत्न किया और अभी वे पूरी तरह मर भी नही पाई थी कि उनके मा-बाप उन्हे कृष्णगगा मे फेक आये। कई नारिया स्वय नदी मे कूद पडी पर पाकिस्तानी उनमे से कुछ को निकाल लाये और अब उन्हे तग करते है।"

इतने मे कुछ व्यक्ति हमारे कमरे मे आये और चारो तरफ घूर-घूर कर देखने लगे। उन्हे देखकर औरतो के होश उड गये। वे आपस मे कहने लगी, "न जाने अब किसको ले जायेगे।" पाकिस्तानियो ने कुछ हिन्दू चुने थे और उन्हे राशन आदि के काम पर लगाया गया। खाने-पीने मे लोग इस तरह व्यस्त थे कि जान पडता था ससार मे पेट की ज्वाला से तीव्र और कोई ज्वाला नही।

शिवदयाल और ओम् भी कही से गन्ने और भुट्टे ले आये। बच्चों को दो दिन से कुछ नही मिला था। वे खाने लगे। मैंने चार दिन से सिवाय भुने हुए काशीफल के एक टुकडे और कुछ मक्की के दानो के और कुछ नही खाया था। दो दिन से पानी तक नही पिया था। खाने की कुछ इच्छा भी नही थी। मैंने ऊपर से चाहे कितनी ही हिम्मत बाध रखी थी परन्तु भीतर से उनके वियोग मे मेरा हृदय टूक-टूक हो गया था। जीवन फीका-सा लग रहा था। मन इसी दुविधा मे था कि मैंने उस समय घर से निकल

कर अच्छा किया या बुरा। कही मेने उनके साथ धोखा तो नही किया। अगर वे स्वप्न मे एक वार भी यह कह दे कि मै निर्दोष हू, मैंने जो कुछ किया अच्छा किया, तो मुझे वडी शान्ति मिले। फिर सोचती उन्होने तो अपना कर्त्तव्य पूरा किया। उनके वलिदान के कारण मेरा मस्तक सदा गौरव से ऊचा रहेगा। अव मेरा कर्त्तव्य है कि चाहे मुझे कितनी ही कठिनाइया क्यो न झेलनी पडे मै रोकर या कायर वनकर उनके वलिदान को कलकित न करू। और कभी वच्चो के सामने भीरुता की वाते न करू। यदि मै इन्हे प्रोत्साहित करती रही तो शायद एक दिन इनका नाम भी उज्ज्वल होगा। मुसीवत इन्हे अच्छे-वुरे का भेद समझा देगी।

मै जेल मे मुश्किल से ३ घटे वैठी हूगी कि इतने मे एक युवक चमनलाल मेरे पास आया ओर कहने लगा, "जी, वजीर साहव से हमारे सवध वहुत अच्छे थे पर अव ईश्वर को जो मजूर था वह हो गया। मै आपसे इस समय एक विशेष वात कहने आया हू। आपकी कोठी मे पाकिस्तानियो के दो सरदार ठहरे है। उनके पास कुछ फौज भी है। इस समय मुजफ्फरावाद का सव प्रवन्ध इन्ही के हाथ मे है। इन्ही-मे से एक सरदार ने आपको वुलाने के लिये अपना भाई भेजा है। आप चलिये।" यह सुनकर मुझे न जाने क्या हुआ। अच्छे-वुरे का ज्ञान जाता रहा। मैने अपने वालो से धीरे-धीरे एक लाल रेशम की डोरी, जो शादी के समय सुसरालवालो से मिली थी, खीची। मेने नजर वचा कर इसे अपने गले मे डाला और इतने जोर से खीचा कि मै वेहोश होकर गिर पडी। अचेत होते ही मेरे दात वैठ गये, आखे पथरा गई पर मै मरी नही। वच्चे और ओम् मेरी यह दशा देखकर विलख-विलख कर रोने लगे। कोई मुह पर पानी छिडकने लगा, कोई मेरे हाथ पैर मसलने लगा। चमन को कुछ शक हुआ। उसने मेरे सर के दुपट्टे को सरकाया तो देखा कि गले मे फासी है। जल्दी से उसने गाठ खोल दी। कुछ क्षण वाद मुझे होश तो आया परन्तु कमजोरी वहुत महसूस होने लगी। उस क्षण मैने सोचा, इस समय मौत भी मुझे अपने पास नही वुलाती, वह भी मुझसे नफरत करती है, पर दूसरे ही क्षण एक

विचार बिजली की तरह मेरे मन में कौंध गया—है ! तूने यह क्या किया—तू तो कई बार पति के सामने यह दावा करती थी कि अगर स्त्री में शक्ति है, तो हजारो आदमियो को उसके आगे झुकना पडेगा। वे सुनकर हस देते थे। आज मेरे उसी दावे की परीक्षा हो रही थी पर मै डर गई। यह विचार मन मे आते ही मै सहसा उठ खडी हुई और चमन से बोली, "कहा है सरदार का भाई ? उसे जल्दी बुलाओ।" फासी से दम घुटने के कारण मेरे चेहरे का रग बदल गया था। ऊपर का हिस्सा कुछ सफेद और नीचे का कुछ नीला-सा धब्बेदार हो गया था। कुछ मिनट बाद चमन दो आदमियो को अन्दर लाया। आते ही उन्होंने सलाम किया और कहा "आपको हमारे सरदार याद कर रहे है।" मैने कहा, "मै सबके साथ चलने को तैयार हू।"

और मै सबको साथ लेकर पहली बार अपने उजडे सदन को देखने चल पडी। मन मे न भय था न सोच। उसी रास्ते पर जहा हम कभी बडी शान से चला करते थे आज नगे पैर और फटे हाल जा रहे थे। मनुष्य-जीवन भी क्या है। कभी अर्श पर कभी फर्श पर ! ! ! हम कोठी पहुचे। वह जलकर राख हो गई थी। केवल रसोईघर और मेहमानो के कुछ कमरे बचे हुए थे। कई कबाइली बन्दूके लिए इधर-उधर घूम रहे थे। बाहर के मैदान मे उनका सरदार भी इधर-उधर घूम रहा था। लगभग पचास वर्ष का वह कबाइली शिलवार-कमीज पहने पिस्तौल और कारतूसो से सुसज्जित था।

हम पहुचे तो हमारे साथ का आदमी पहले सूचना देने के लिए उसके पास गया। सरदार ने हमे आने की आज्ञा दी। मैने उसके पास जाकर कहा "सरदार, फकीर की सलाम।" उसने मेरी तरफ देखते हुए कहा, "यह आप क्या कह रही है। मुझे वजीर साहब के मरने का अफसोस है। वह एक शेरदिल इन्सान था।" वह यह कह ही रहा था कि मैने किसी अज्ञात प्रेरणा-वश उसकी बात काटते हुए कहा, "खा, तुम किसके लिए खेद प्रकट कर रहे हो ? क्या वे कायर थे ? क्या उन्होने भय के कारण धर्म से मुह मोडा ?

खेद तो तब होता जब वे झुक जाते या चार दिन की जिदगी के लिए अपना कर्त्तव्य भूल जाते। मैं एक खुशनसीब स्त्री हू क्योकि मेरे देवता ने कर्त्तव्य का पालन किया है। उस दिन मैं अपने आपको और भी खुशनसीब मानूगी जिस दिन मेरे दोनो पुत्र अपने पिता की तरह हसते हुए वतन की भेंट हो जायेंगे। अगर तुम्हारा इस्लाम तुम्हे आज्ञा देता है तो अपने इन आदमियो से इनपर फायर करने को कहो। तुम देखोगे कि ये भी अपने पिता की तरह अपनी छातियो पर गोलिया खाना जानते है।" यह कहकर मैंने दोनो को आगे किया और उनसे कहा, "बेटा! मौत के स्वागत के लिए तैयार हो जाओ। दिखाओ इन्हे कि वीर लोग कैसे अपनी छाती पर गोलिया खाते है।" दोनो लडके सामने आये। आखे बद कर वे छाती तान कर खडे हो गये और कहने लगे, "खा, अपने आदमियो को आज्ञा दो कि वे हम पर वार करे।"

बच्चो की हिम्मत देखकर सब दग रह गये। जो आदमी हमारे सामने खडा था वह बन्दूक नीचे करके बच्चो के पास आया। उसने मेरे बडे लडके को बडे प्यार से छाती से लगा लिया। यह देखकर सब उपस्थित व्यक्तियो की आखो से आसू झरने लगे। खान खुद भी बहुत रोया, और कहने लगा, "बहन! तुम खुशनसीब हो। खुदा तुम्हारे बच्चो को सलामत रखे। एक दिन मुल्क मे इनका नाम रोशन होगा। कितने बेखौफ है ये मासूम बच्चे! तुमने इनके दिलो पर क्या जादू कर दिया है? इन चार दिनो मे हमने ऐसा कोई भी इन्सान नही देखा जो हमारे सामने इनकी तरह तनकर खडा हुआ हो।" मैंने कहा, "मै कुछ नही जानती कि यह सब क्या है। पर मैंने शुरू से ही बच्चो को फर्ज पूरा करना सिखाया है। हम सब मर मिटेगे किन्तु फर्ज से मुह नही मोडेगे।" वह बोला, "सुनो बहन, आज भी तुम हमारी वैसी वजीरानी हो जैसे अपने मालिक के जीते जी थी। हमारे दिल मे तुम्हारी इज्जत है। हम यह कमरे तुम्हारे लिए खाली किये देते है, तुम यहा आराम से रहो। तुम्हारी बच्चिया कहा है, यह हमे मालूम है। हम अभी उन्हे तुम्हारे पास मगवा देते है। यहा से कुछ दूरी पर यही का

एक मुसलमान खानदान रहता है। वहा हमारा एक आदमी किसी काम से गया था। वही वे दोनो लडकिया उसने देखी। उसने उनसे पूछा कि तुम किसकी लडकिया हो। उन्होने जवाब दिया कि वजीर साहब की। साथ ही कहा कि हमे दो कवाइली यहा छोड गये है और घरवालो को हमे अच्छी तरह रखने की हिदायत कर गये है। वे अब तक नही आये, हम उनकी इतजार मे है। इसपर मेरे आदमी ने उनसे पूछा, 'क्या तुम्हे उनपर भरोसा है?' लडकियो ने जवाब दिया, 'हा, उन्होने अबतक हमारे साथ जैसा वर्ताव किया है उसे देखकर हमे उनपर पूरा भरोसा है। वे सवेरे हमे हमारी मा के पास से ले आये थे। पहिले वे हमे एक घर मे ले गये। घरवालो से पूछा कि वहा कबाइली तो नही आते। 'आते है' ऐसा जवाब पाते ही हमे वे दूसरे घर मे ले गये, वहा भी ठीक जगह न देखकर वे हमे यहा तीसरी जगह लाकर रख गये है। हमारे आदमी ने उनसे पूछा, 'क्या तुम्हे यकीन है कि तुम्हारी मा जेल मे है?' उन्होने कहा, 'हा! उन दोनो ने हमे ऐसा ही वताया था।" फिर मेरे आदमी ने तुम्हारी पहचान के लिए निशानी पूछी। उन्होने वह वताई। तव उस आदमी ने उन्हे साथ आने को कहा पर वे नही मानी, कहने लगी 'जबतक हमारी मा हमे हुक्म न देगी तव तक हम तुम्हारे साथ नही आ सकेगी।' यह सब बाते उसने मुझे आकर कही। तव मैने जेल मे तुम्हारी तलाश करवाई। अब मै अपने आदमी को उन्हे यहा लाने के लिए भेज रहा हू पर साथ मे तुम्हारी कोई निशानी चाहिए ताकि उन्हे तुम्हारे हुक्म का यकीन हो।' मैने वैसा ही किया और वह आदमी मेरी लडकियो को लेने को चला गया।

: ९ :

वे पवित्र फूल

मेरे धैर्य की एक और परीक्षा हुई। मै अपने शयनगृह की ओर गई। वहा उनका दाह सस्कार हुआ था। वह कमरा सारा जल गया था और

वह सुन्दर शरीर भी, जो चार दिन पहले अच्छी हालत मे था, उसीके साथ जलकर राख हो गया था। ऊपर से छत के गिरने के कारण फूल द्वार तक फैले पडे थे। मैं यह सब देखकर दीवानी-सी हो चली। मैंने द्वार पर जाते ही कहा, "धन्य हो प्रभु! तुमने मेरी यह प्रतिज्ञा भी पूरी की।" सब लोग देख रहे थे। मैंने उनसे कहा, "मुझे रोकना मत। मै शव सस्कार की अन्तिम रस्म पूरी करना चाहती हू।" इसपर उन्होने प्रश्न किया "क्या तुम्हे यकीन है कि यह तुम्हारे मालिक की ही लाश है?" मैंने उसी उन्माद मे उत्तर दिया, 'हा, मेरा हाथ दूसरो के फूलो को नही छू सकता।" एक व्यक्ति ने फिर मेरी परीक्षा लेनी चाही। कहने लगा, "सुनो उनकी लाश को हमने भगियो से नीचे फिकवा दिया था।" मैंने उत्तर दिया, "नही, तुम झूठ बोल रहे हो। मुझे धोखा मत दो। ये मेरे पति के फूल है, देखो! मुझे इनमे से सुगन्धि आ रही है।"

इसके बाद उन्होने कुछ नही कहा। मैंने अपनी चुनरिया फाडी। उसमे सब फूल बाधे। तब बाहर आई। वहा खान था। लडकिया भी उतनी देर मे आगई थी। मैंने उन्हे देखकर यूही आवेश मे आकर कहा, "तुम कायर हो। मै समझी थी, कि तुम खत्म हो चुकी होगी पर तुम अभी तक जिंदा हो।" लडकियो ने उत्तर दिया, "मा, अगर हमपर कोई आफत आती तो तुम कभी हमे जिदा न पाती। यदि कभी समय आया तो तुम देख लेना मा! कि तुम्हारी लडकिया हसते-हसते प्राण देना जानती है।" खान का आदमी बोला, "तुम किममतवाली हो, तुम्हारी बेटिया हर तरह से महफूज है। इनकी हिम्मत मैंने तभी देख ली थी जब तुम्हारे हुक्म के बिना इन्होने आने से इन्कार कर दिया था।"

यह बाते समाप्त होते ही दोनो लडकिया पिता के विषय मे पूछने लगी। मैंने कपडे मे बधे हुए फूल दिखाकर कहा, "ये है तुम्हारे पापा।' वे रोने लगी। मैंने रोने की मनाही करते हुए कहा, 'देखो ऐसे शानदार बलिदान पर रोकर इसकी शान न घटाओ।" और तो सब चुप हो गये पर सुदेश बहुत रोई। मैंने उसके पास जाकर धीरे-धीरे कहा, "सुन सुदेश,

यह रोने का अवसर नहीं है। और यह एक दिन का रोना नहीं है। यह तो जन्म भर का रोना है, किन्तु जिन लोगों ने उन्हें मारा है, उनके सामने मत रोओ।" यह सुनकर वह भी चुप हो गई।

अपनी गोद में गठरी रखे मैं वहीं मैदान में बैठ गई और हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगी "हे सर्व शक्तिमान! तुम्हारी अमानत मैं खुशी से तुम्हें देती हूं। मुझे शक्ति दो कि यह यातना मैं सहन करूं। मुझे प्रसन्नता है कि उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन किया, भागे नहीं, यही उनकी शोभा थी। इसी प्रकार, हे भगवान्! परीक्षा चाहे कितनी कठिन लेना लेकिन मुझे धैर्यहीन न करना। नाथ मुझे बल दो कि मैं भी अपने कर्तव्य का पालन करूं।" यह सब मैं उच्च स्वर से कह रही थी और वे सब लोग सुन रहे थे, आंखें फाड़-फाड़ कर देख रहे थे। शायद वे मुझे पगली समझ रहे थे।

सरदार ने हमारे लिये कमरे खाली करने की आज्ञा दी। तीन कमरे खाली हुए। रसोई घर में हमारे जो बर्तन थे, वे हमें दे दिये गये। खाने-पीने की सब सामग्री मिली। बिस्तरे लाकर मेरे सामने रख दिये गये। मैंने उनसे कहा, "कृपाकर मेरे सामने से यह सब सामान हटालो। आज मै इन चीजो मे से किसी को भी हाथ नही लगाऊगी। उनकी पवित्र देह के अवशेष मेरे हाथ मे है। जबतक इनको ठिकाने न लगा दू, इन लूट की वस्तुओ को मै नही छुऊगी। उन्हे ऐसी वस्तुओ से बड़ी नफरत थी।" उन्होने सब चीजे उठाकर कमरे मे रख दी।

तभी मुझे याद आया कि यहा के जगल के डी० एफ० ओ० सतराम मोदी की पत्नी भी जेल मे है। मै उसे बचपन से जानती थी और उसे मौसी कहती थी। वह बड़ी शरीफ और सीधी-सादी स्त्री थी। मैंने सरदार से कहा, "मेरी मौसी जेल मे हे, कृपाकर उसे भी यहा बुलवा दीजिए।"

थोड़ी देर मे कुछ आदमी उसे एक घास की बुनी हुई खाट पर ले आये। उसके साथ उसका एक नौकर और मोदीजी के दफ्तर के एक क्लर्क की लड़की कमला थी। इस लड़की की आयु मेरी बड़ी लड़की जितनी थी।

वे आदमी मौसी को कमरे मे ले आये। उसके कपडे रक्त से लाल थे। उसके पेट मे गोली लगी थी, उसी से रक्त बह रहा था। खासी उसे जोरो की थी। सास ब‍ी मुश्किल से ले सकती थी। मेने पास जाकर उससे उसके पति, लडके और साथवाली लडकी के पिता आदि के बारे मे पूछा। उसने कमला के बारे मे कहा, "इसका बाप इसे मेरे हवाले कर गया था। सुना है कि वह मारा गया है। वह एक काश्मीरी पडित था।"

अब हम सब मिलकर बारह व्यक्ति हो गये। सात बच्चे और पाच बडे। सबको जोरो की भूख लग रही थी। मैंने ओम् आदि को भोजन बनाने के लिये विवश किया। कहा, "उठो भोजन बनाओ। जब तक दुनिया मे जीना है सब कुछ करना है।" वे उठे, सबने मिलकर भोजन बनाया। आज बच्चो को चार दिन बाद भरपेट खाना मिला था परन्तु श्रीमती मोदी और मैंने कुछ नही खाया।

सरदार ने अपना डेरा पास ही डाक्टर की कोठी के बचे-खुचे कमरो मे लगाया परन्तु उनके आने जानेवाले सिपाहियो और कबाइलियो की रसोई हमारी कोठी मे ही होती रही। जब सरदार जाने लगा तो कमरे के बाहर खडे होकर उसने हमसे पूछा, "बहन! किसी चीज की जरूरत हो तो बताओ।" मैंने उसको धन्यवाद दिया। वह कहने लगा, "रात को यहा अकेले रहना अच्छा नही है। हम बाहर दो सिपाहियो का पहरा लगा रहे है।"

रात हुई तो सब बच्चे बिस्तरे बिछाकर सो गये। बेचारो को कई दिन के बाद आराम की नीद नसीब हुई थी। वे भूल गये कि उनपर विपत्ति का पहाड टूट पडा है। मै रात भर गोदी मे फूल लिए बैठी रही और ईश-वदना करती रही। कभी-कभी मुझे ऐसा भ्रम होता कि मेरी गोदी मे फूल हिल रहे हैं।

सवेरे सब उठे। मैंने लडको से कहा, "तुम्हे कृष्णगगा मे फूल विसर्जित करने दोमेल जाना होगा। इसी कारण तुम्हारे पापा ने तुम्हारा यज्ञोपवीत किया था।" मैंने शिवदयाल से भी उनके साथ जाने को कहा। वे बोले,

"माताजी, हम जाते तो है पर तुम जानती हो कि हिन्दुओ को देखते ही वे मार देते है। हा, अगर खान हमारे साथ सिपाही कर दे तो काम वन सकता है।" मैने वडे लडके को खान के पास भेजा। सरदार ने अपनी मोटर दी। दोनो लडके और शिवदयाल एक सिपाही को साथ लेकर मोटर पर दोमेल गये। कैसी अजीब सी बात है कि जिन लोगो ने वजीर साहव को मौत के घाट उतारा वे ही उनके फूलो के विसर्जनार्थ मोटर दे गये।

घटे भर बाद वे उन फूलो को सगम पर विसर्जित करके लौट आये। कुछ देर बाद दोनो सरदार भी आये और वाहर खडे-खडे उन्होने कहा, "तुम वेफिकर होकर रहो। अब कोई डर नही है। खुदा तुम्हारा मददगार है। हम अब मोर्चे पर जा रहे है, शाम को लौट आवेगे। हमारे लिए दुआ कीजिए कि हमे कामयाबी मिले।" मैने कहा, "भगवान् तुम्हे नेक कामो मे लगाये, मेरा यही आशीर्वाद है। परन्तु मै आपसे पूछती हू कि क्या किसी देश पर विजय प्राप्त करने का यही तरीका है कि वहा की जनता को मार, घरवार जला, स्त्रियो पर अनाचार कर और अन्याय का डका वजाते हुये आगे वढो? क्षमा करना, यह गड्ढा जिन्होने खोदा है, वे खुद उसमे गिरेगे। आखिर हम सव ईश्वर की सतान है। हमे भले-वुरे की पहचान करनी चाहिए।" वाते कडवी थी पर वे क्रुद्ध नही हुए। उन्होने बडी शांति से जवाव दिया, "अव तक जो हुआ सो हुआ, पर अव सब ठीक होगा।" और वे चले गये।

: १० :

फिर उजडे सदन में

दस वज गये थे। मै स्नान करना चाहती थी परन्तु मेरे पास वदलने के लिए दूसरा कपडा न था। तन पर के कपडो से दुर्गन्ध आ रही थी। अचानक मुझे याद आया कि कुछ दिन पहले एक स्थानीय धोबी के पास हमारे कपडे गये थे। शायद वह दे दे इस आशा से मैने एक सिपाही के

साथ शिवदयाल को वहा भेजा। परन्तु धोबी ने यह कहकर कि उसके सब कपडे लूट लिए गये हैं, इकार कर दिया। जब उन लोगो ने बहुत कहा तो उसने एक धोती और एक ऊपर दिया। मैंने स्नान किया। साबुन तो था नही, आटा मला। उसी से सिर के बाल धोये। स्नान के बाद मुझे कमजोरी कुछ अधिक प्रतीत होने लगी। पाच दिन से भोजन नही किया था। ऐसा लगता था कि गश खाकर गिर पडूगी। मेरी यह हालत देखकर श्रीमती मोदी का नौकर जोधा खाना पकाने लगा।

मैं सोचने लगी, जिन्होने मेरे पति को मारा, क्या अब मुझे उन्ही के यहा भोजन करना पडेगा। मै कितनी पापिन हू। मुझे अपने आपसे घृणा होने लगी। बहुत सोच-विचार के बाद मैंने बच्चो को समझाना शुरू किया, "मैं जानती हू कि मुफ्त का खाना अच्छा नही है। इसलिये सरदार से कहकर कोई छोटा-मोटा काम तुम्हे दिला दूगी जिससे हमारे मन मे भी यह भाव रहे कि हम हक का खा रहे हैं। यद्यपि हमने सब कुछ गवा दिया है किन्तु आत्मगौरव नही गवाया है। तुम किसी की धौंस न सहना। कोई कुछ पूछे तो सही उत्तर देना। यदि तुम सत्य पर अडे रहे और योद्धाओ की भाति विपत्तियो का सामना किया तो तुम्हारा देश तुम पर गर्व करेगा।"

इतने मे भोजन बन गया। जोधा खाने का अनुरोध करने लगा। हमारी इच्छा तो नही थी किन्तु कमजोरी के कारण ऐसा लग रहा था कि खाये बिना रहना मुश्किल है। यह सोचकर हम दोनो ने भोजन किया। किन्तु साथ ही जन्म भर दिन मे एक ही बार अन्न खाने का व्रत लिया।

उस दिन बहुत से स्थानीय मुसलमान वहा आकर वजीर साहब के निधन पर शोक प्रकट करने लगे। मुझे यह बुरा लगा। मैंने उन्हे ऐसा करने की मनाही की। इसपर वे लोग उनकी बाते सुनाने लगे। एक बोला, "हम उन दिन उन्हे शहर मे इधर-उधर घूमते हुए देखते रहे। उन्होने बहुत चाहा कि कही इत्तला दे पर कुछ हो न पाया। कितनी ही बार हमने उनसे छिप जाने को कहा पर वे एक न माने। उनकी बहादुरी

की मौत की चर्चा सबकी जबान पर है।"

उसके बाद जो भी मेरे पास आता शोक प्रकट न कर उनके बलिदान की सराहना करता था।

कबाइलियो का लंगर अभी हमारी कोठी की रसोईशाला मे ही था। वहा टोलियो-की-टोलिया कबाइली आते रहते थे और हमे खिडकियो मे से घूर-घूर कर देखते थे। पहरेदारो के मना करने पर भी वे नही मानते थे। कभी-कभी तो कोई क्रुद्ध होकर कह देता, "मशरिकी पजाब मे सिक्खो ने हमारी बहनो पर जो जुल्म किये है, उसका बदला हम यहा इनसे ले रहे है।" मै उत्तर देती, "क्या वहा का बदला यहा लेना इन्साफ है ?" परन्तु उन्होने मेरी इस बात पर कभी कोई ध्यान नही दिया।

उस रात श्रीमती मोदी को जोर की खासी आई, साथ ही बुखार भी चढा। कई दिन से उसे ऐसा ही हो रहा था। उसका घाव बहुत गहरा था। कमला के पैर मे भी गोली लगी थी किन्तु उसका घाव अधिक गहरा नही था। प्रातःकाल वे दोनो सरदार आये। कहने लगे "बहन! अगर आप एबटाबाद जाकर रहे तो ज्यादा अच्छा है। वहा आपको किसी तरह की तकलीफ नही होगी। हम आपको वहा एक कोठी देगे। बच्चो की पढाई का इन्तजाम भी हो जायगा। जब आपका लडका बडा होगा तो उसे पिता की जगह मिलेगी। ये बच्चे एक दिन बडे लायक बनेगे और आपके दिन फिरेगे।" मैने उत्तर दिया, "मै अभी कही नही जाऊगी। वही रहूगी जहा मेरे पति मुझे छोड गये है। हा, मेरी एक बात मानिए—उन स्त्रियो पर जो जेल मे है आप कृपा कीजिए।" वे बोले, "हमने शहर के सब लोग जेल से निकालकर घरो मे बसा दिये है।" मैने फिर कहा, "हमे भी कोई काम दीजिए ताकि हम मेहनत की कमाई खाये। क्या मै दुःखी लोगो की देखभाल कर सकती हू ?" वह कहने लगे, "नही, अभी आप आराम कीजिये। यह काम आपके करने लायक नही है।" और वे दोनो चले गये। जाते समय वे रसोई से होकर गये और वहा के लोगो से कह गये, "देखो! भाई, मुर्गा वगैरह बनाना हो, बनाना पर गाय का

गोश्त तव तक न वनाना जव तक ये यहा है। अगर तुमने इनका दिल दुखाया तो अच्छा न होगा।"

मैंने उनके आदमी से श्रीमती मोदी के लिए डाक्टर वुला. को कहा। उस समय वहा कोई डाक्टर नही था। केवल दो काश्मीरी कम्पाउण्डर जीते वचे थे। वे उन्ही को ले आये। उन्होने श्रीमती मोदी और कमला के घावो पर दवाई लगाई।

इधर जव मेरे मुहवोले भाई को मेरा हाल मालूम हुआ तो वह और उसका वाप दोनो मुझसे मिलने के लिए आये। भाई ने ईश्वर को वहुत धन्यवाद दिया और कहा, "आप पर खुदा की वडी महरवानी है, वहन जव उस दिन मै आपके पास था तो मेरे पीछे मेरे घर मे से कवाइलियो ने तलाशी लेते हुए मेरी औरत के सव जेवर-कपडे छीन लिये। लेकिन आपके जेवर मेरे घर मे मौजूद है। वह आपकी अमानत है। कल मै उन्हे साथ लेता आऊगा।" मैंने उत्तर दिया, "मैंने तो तुम्हे दे दिये है।" वह कसम खाकर वोला, "मै उनमे से एक भी न लूगा। तुम्ही उन्हे अपने पास रखो। किसी समय इन वच्चो के काम आवेगे।" अव और क्या कहती, वोली, "अच्छा कल ला देना। जव कभी अपने देश जाऊगी तव तुम्हारे लिए जो कुछ भी भेज सकूगी, भेजूगी।" वह चला गया।

सुरेश खान के आदमियो के साथ फिरता रहता था। एक दिन वाहर से आकल पूछने लगा—"मा! हमारी क्या जाति है?" मैंने कहा, "तुम्हे तो मालूम है। हम वैश्य-महाजन है।" "देखो माताजी," वह वोला, "ये लोग मुझसे मेरी जाति पूछ रहे थे। मैंने वता दिया कि हम महाजन है। इसपर वे आपस मे कहने लगे, 'महाजन कौम वडी वहादुर होती है। यह लडका जरा भी नही डरता। इसके पापा ने भी वडी वहादुरी से गोलिया खाई।' पर मा, तुम तो कहती थी, राजपूत लोग वहादुर होते है।" मैंने उत्तर दिया, "हा, वेटा राजपूत तो वहादुर होते ही है, पर और जातियो मे से भी ऐसे लोग निकल आते है जो उस कौम की शान वढाते है।" फिर वह मेरी आखो की ओर एक टक देखने लगा। मैंने दूसरी ओर मुह फेरा

तो वह भी उधर देखने लगा। मैंने कहा, "सुरेश बेटा! तुम यह क्या कर रहे हो?" वह बोला, 'मा! मुझे अपनी आखो की ओर देखने दो।" मने आश्चर्य से पूछा, 'क्यो क्या बात है?" वह कहने लगा, "जो व्यक्ति हमे जेल मे बुलाने आया था वह सरदार का भाई है। वह मुझसे कह रहा था कि तुम्हारी मा कोई साधारण स्त्री नही है। हम उसकी आखो की तरफ नही देख सकते। ऐसा लगता है कि उसकी आखो मे आग है। मा तुम्हारी आखो मे मै वही आग खोज रहा हू। पर मुझे तो कुछ दिखाई नही देता।" मुझे बडा अजीब-सा लगा, मैंने उसे समझाया, "बेटा, बात यह है कि जब वे मेरे पास आते है तो मै उन्हे उनके अत्याचारो की याद दिलाती हू। उन्हे अपने पापो का भान होता है। शायद उन्हे मेरी आखो मे अपनी पापमूर्ति दिखाई देती है। वैसे आग कभी किसी की आखो मे नही होती।" मै अभी उससे बात कर ही रही थी कि हमारे तीन साथी बाहर से घबराये हुए आये और कहने लगे, "माताजी! बारामूले तक तो ये लोग पहुच चुके है। बडी सख्त लडाई हो रही है। कहते है कि एक-दो दिन मे श्रीनगर पहुच जायेगे।" मैंने कहा, "चाहे लाख यत्न करे, ये लोग कभी श्रीनगर नही पहुच सकते।" वे तीनो हसने लगे, "आप इन्हे क्या समझ रही है? बस दो दिन और लगेगे।

उसके बाद जब वे दोनो सरदार आये तो उनके साथ दो पाकिस्तानी अफसर भी थे। उनमे एक हमारे जिले की पुलिस का कप्तान था। वह जाति का पठान था। दूसरा था, रहमदाद खा, जिसे लोग हजारा जिले का 'एक्स्ट्रा कमिश्नर' कहते थे। दोनो ने आते ही द्वार पर खडे होकर सलाम किया। फिर रहमदाद खा बोला "मुझे आप लोगो के इस हाल पर और वजीर साहब की मौत पर अफसोस है।" मैंने सदा की तरह उत्तर दिया, 'क्या कभी योद्धाओ की मौत पर शोक प्रकट किया जाता है? आप भी ऐसा न करे। मुझे अपनी हालत पर जरा भी दुःख नही है। मुझे तो आप से एक बात कहनी है। आप निहत्थो पर विशेषकर स्त्रियो पर अत्याचार क्यो करते है? आप तो पठान है।" इसपर कप्तान बोला, "अब बहादुरो

की तरह लडाई होगी और आलमगीर लडाई होगी। एक तरफ हवाई ज़हाज़ होगे, दूसरी तरफ बदूके। हम दुनिया को बता देगे कि बहादुर कैसे लडते है।" रहमदादखा कहने लगा, "मैने इन बच्चो की हिम्मत की बाते सुनी है। खुदा इन्हे बचाये। एक दिन इनका नाम रौशन होगा। पठान बहादुरो की इज्जत करते है। बहन, मै तुम्हारी हिम्मत देखकर बहुत खुश हू। पठान तुम्हे बहन कह चुका है। वह इस रिस्ते को आखिर तक निभायेगा। तुम यहा खुशी से रहो। जो होना था सो हो गया। अब यहा का वजीर तुम्हारी देखभाल करेगा। वह तुम्हारे लिए राशन का और हर चीज का इन्तिजाम करेगा।" मैने कहा, "तुमने मुझे बहन कहा है। अब बहन की एक प्रार्थना भी सुन लो। शहर मे जो अत्याचार हो रहे है, उन्हे ईश्वर के लिए बद करवा दो।" "मै सब ठीक कर दूगा," वह बोला, "अब किसी किस्म का जुल्म नही होगा।"

कप्तान-पुलिस ने मुझसे पूछा, "यहा के कप्तान का क्या हुआ?" मैने कहा, "उसका परिवार यहा नही था।" वह बोला, "हा, इस हमले मे तीन दिन पहले मै यहा आया था। सबसे मिलकर गया था। काश्मीर से भी कई अफसर आये थे। उन सबसे भी मिला था।" यह कहकर वह अपनी विजय पर मुस्कराया। मैने दिल-ही-दिल मे कहा, "आप तो यहा का हाल-चाल देखने आये थे पर यहा का शासन विभाग लम्बी करवट सोया था।"

कुछ दिनो के बाद फिर आने की बात कहकर वे दोनो चले गये। जिस कप्तान पुलिस का यह जिक्र कर रहे थे वह मेहता साहब के साथ ही घर से निकला था और किसी दोस्त के यहा छिप गया था। पाकिस्तानियो ने उसे ढूढ निकाला और दोमेल डाकबगले के पास जब वह नदी पर पानी पीने जा रहा था, गोली से मार दिया। इसी तरह और अनेक अफसरो को उन्होने मौत के घाट उतार दिया था। वहा का तहसीलदार पडित ताराचद कही छिप गया था। नये शासको ने उसे खोज निकाला और मुकामी वजीर बनाया। सुना जाता था कि उन्हे काश्मीरी पडितो से

रिआयत करने की हिदायत है। नये प्रबंध ने कई मुसलमानो को भी छोटी-छोटी नौकरियो पर नियुक्त कर दिया था। रिटायर्ड फौजी मुसलमानों से वे यह अपील करते थे कि रुपये मे से चार आने हमें सहायता दो। जब वे इसपर भी राजी नही होते थे तो फिर बार-बार 'इस्लाम खतरे मे है' का नारा लगाकर उन्हे मजहब के नाम पर उभारते थे।

: ११ :

मुसलमान भी डरने लगे

इस प्रकार दिन व्यतीत हो रहे थे। हर समय खतरा बना रहता था क्योकि इन लोगो का कोई भरोसा नही था। कोई भी आकर कुछ कर सकता था। पर जब वे मेरे पास आते तो शायद रहमदादखा के डर के कारण अदब से पेश आते थे।

एक दिन अनायास ही मेरे मुह से एक बात निकली, काश कि उनका एक फोटो ही बचा होता। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब आध घटा बाद हाथ मे एक फोटो लिए सुरेश दौडा-दौडा मेरे पास आया। मैंने देखा वह नेगेटिव सहित उनका फोटो था। पूछा, "यह तुम्हे कहा मिला ?" वह बोला, "मै बाहर मैदान मे घूम रहा था। फूलो की उस झाडी के नीचे मैंने कुछ चमकती चीज देखी। पास गया तो ये मिले।"

हमे राशन की बडी तकलीफ थी। जो कुछ वहा मिलता था वह काफी नही था। ऐसी अवस्था मे एक दिन रहमदादखा ने दो मन आटे की एक बोरी, कुछ घी, दाल और चाय आदि भिजवाई। पति के हत्यारो से मुफ्त की चीजे लेते मुझे अपार वेदना होती थी परन्तु न लेती तो बच्चे क्या खाते ! फिर रहमदमद खा मुझे बहन कह चुका था। मुझे वे चीजे लेनी पडी। रहमदाद खा के कारण हर अफसर हमसे कुशल-मगल पूछ जाता था। एक दिन नया वजीर, भूतपूर्व माल अफसर और नायब तहसीलदार (जो अब तहसीलदार बनाया गया था) ये सब हमारे पास आये।

माल अफसर ओर तहसीलदार दोनो काश्मीरी मुसलमान थे। उन्होने मुझसे सवेदना प्रकट की और अपनी दशा पर दु ख प्रकट करते हुए वे बोले, "हम तो यहा जीते जी नरक भोग रहे है। इससे तो मरना ही भला।" उनकी बातो से मैने जाना कि अफ़सर बनने पर भी उन्हे अवश्य कुछ तकलीफ ह। मैने भी उन्हे सान्त्वना दी, कहा, "कल की चिता मत करो। जो भगवान् करेगा अच्छा ही करेगा। अपना फर्ज अदा करते जाओ। मुझे ही देखो, सिवाय भगवान् के मेरा और कौन है? लडकियो के साथ इन लोगो मे रह रही हू। सिर तलवार की धार के नीचे है पर घबराती नही हू। मुझे कायरता से चिढ है।" वे बोले, "अब तक आपने जो कुछ किया वह सब हम सुन चुके है। ये लोग तुम्हारी बडी इज्जत करते है। रहमदाद खा ने सबको तुम्हारी देखभाल करने को कहा है।" रहमदाद खा ने एक डाक्टर और कम्पाउन्डर को भी श्रीमती मोदी के इलाज के लिए भेजा। ये दोनो फौजी पठान थे, देखने आये और दवाई देकर चले गये।

बच्चे वैसे तो ठीक चल रहे थे पर सबसे छोटा बच्चा सवेरे उठकर खाने के लिए कुछ मागता था। मै उसके लिए रात की बासी रोटी रख छोडती थी। वह बहुत सख्त बन जाती थी। चबाते-चबाते एक दिन उसके गले मे दर्द होने लगा। वह कहने लगा, "मा, यह रोटी चबाई नही जाती। गले मे लगती है।" यह कहते-कहते उसकी आखो से आसू झरने लगे। मुझे भी दु ख हुआ पर मैने उसे समझाते हुए कहा, "बेटा तू तो हर समय कहा करता है कि मै वीर बनूगा। क्या यही तेरी वीरता है? तुझे तो सूखी रोटी खाने को मिल जाती है पर तेरे हजारो भाई-बहन इसके एक-एक टुकडे के लिए तरसते रहते है।" चार दिन बाद वह बोला, "मा, अब मुझे यह रोटी बिस्कुट की जैसी लग रही ह।"

एक दिन विमल को जोर का बुखार आ गया। दो दिन तक उतरा ही नही। बच्चा भूख और बुखार से छटपटा रहा था। मेरे पास दूध या दवा मगाने के लिए भी पैसे न थे। बस केवल ईश्वर का भरोसा था। मै हर समय उसी से प्रार्थना करती रहती थी। इत्तफाक से एक दिन सरदार

रहमदाद खा वहा आया। बच्चे को तडपता देखकर वह दस रुपये दूध के लिए देने लगा। जब मैने रुपये देखे तो मै सिर से पैर तक काप उठी, सोचा "क्या अब इनसे रुपये भी लेने होगे ?" मुझे इस असमजस मे देखकर उसने ठडी आह भरी और बोला, "बहन! मै तुम्हारी तकलीफ समझता हू परन्तु इन्सान वही है जो हालात के मुताबिक अपने को बदल ले। क्या तुम मुझे भाई नही समझती ? अगर समझती हो तो लो। अगर तुम्हारे वालिद या भाई तुम्हे कोई चीज देते तो क्या तुम न लेती ?" उसने रुपये विमल के हाथ मे थमा दिये और मुझसे कहा, "बहन! मै बारामूला जा रहा हू। वहा भी तुम्हे याद रखूगा। वहा से आने पर तुम्हारा सब इन्तिजाम ठीक करूगा।"

उस समय बारमूले मे घोर युद्ध हो रहा था। उसके कुछ दिनो बाद अचानक हमारे यहा से सरदारो का लगर बद हो गया। कोई पहरा नही रहा। अब वे दो सरदार भी दिखाई नही देते थे। केवल हम ही हम उस उजडे मकान मे रह गए। कुछ समझ मे नही आता था—क्या बात है ? इधर कबाइली शहर के चद पुनर्वासित हिन्दुओ को फिर लूटने और तग करने लगे। शहर मे बेचैनी फैल गई। अब स्थानीय मुसलमान भी इनसे तग आ गए थे। वे पाकिस्तानी चाल समझ गए थे। उनमे से कुछ लोग हिन्दुओ से कहने लगे, "जब वे लोग तुम्हारी लडकियां लेगे तो हम उनके मुकाबले मे तुम्हारा साथ देगे।" वास्तव मे उन्हे हिन्दुस्तानी फौज के मुकाबले पर आने का पता लग चुका था। वे डर रहे थे कि अगर हमने हिन्दुओ का साथ न दिया तो न जाने हिन्दुस्तानी फौज हमारे साथ कैसा सलूक करे! अपने बचाव का उन्हे यही उपाय सूझा।

एक दिन चमनलाल आकर मुझसे कहने लगा, "आप यहा न रहे, यह जगह सडक के पास है। सुन रहे है कि ये लोग पीछे हट रहे है। मुजफ्फराबाद मे इस समय मुकामी निवासियो और कुछ मामूली अफसरो के अलावा और कोई नही है। हारकर पीछे हटते समय ये लोग लूट-मार कर रहे है। आप हमारे घर चलिए।"

मैने कहा, "दो दिन वाद सोचकर जवाव दूगी।"

: १२ :

ये नेक इन्सान

आखिर हिन्दुस्तानी लडाके जहाज आकाश मे मडराने लगे। उनके प्रतिदिन नगर के ऊपर उडान करते समय हमे लगता था कि वे हमारी कोठी पर चक्कर लगाते है। दोमेल पर वम गिरने की दिल दहला देनेवाली आवाज से सभी चौक उठते थे। लगता था कि हमारी छत अभी गिरी। कबाइलियो ने हवाई जहाज का नाम 'खुदा का वच्चा' रखा था। इससे वे लोग वहुत घवराते थे। हम वहुत चाहते थे कि उन्हे कुछ सकेत करे किन्तु कैसे करे, यह नही जानते थे।

एक दिन हम सन्ध्या के समय तेल का दिया जलाये वैठे थे। यह असाधारण-सी वात थी क्योकि अक्सर हम अधेरे मे ही वैठा करते थे। तभी दस-वीस पाकिस्तानी फौजी हमारे अहाते मे आये। हमने उनकी पदचाप सुनते ही दिया वुझा दिया। यह देखकर वे विगड उठे। मैने वैठे-वैठे ही उनसे कहा, "देखो भाई, हमारा इसमे क्या दोष है? आप ही वताइये, हमारे पास इतना तेल कहा है जो दिया जालाये रखे। अगर आपको जरूरत हो तो जलाये देते है। क्या मै दरवाजा खोलू?" यह सुनकर वे ठडे पड गये और कहने लगे, "नही, हमे कुछ नही चाहिये। सिर्फ यह पूछना है कि यहा जो फौजी लगर था, वह कहा गया?" मैने कहा, "कई दिन से उनका कोई पता नही है।"

"अच्छा, तो हम जाते है।"—यह कहकर वे चले गये। उनके इस तरह जाने से सवको आश्चर्य हुआ।

इन्ही दिनो नगर मे भी एक दिन वडा कोलाहल मचा। वात यह थी कि पाकिस्तानी लोग लडकियो को घरो से निकाल निकाल कर ले जाने लगे थे। उस समय कई शरीफ मुसलमानो ने हिन्दुओ का साथ दिया। अगर

वे कही शुरू से ही इस प्रकार साथ देते तो क्या मजाल कि किसी का बाल भी बाका होता। फिर भी उनमे से वहुत-से आदमी इस हत्याकाड के विरुद्ध थे, पर उनकी कौन सुनता था। ऐसी अवस्था मे श्रीमती मोदी मुझसे कहने लगी, "तुम्हारा बेमतलब का हठ मुझे अच्छा नही लगता। कौन जानता है इन लडकियो पर कब क्या आफत आ जाए।" उसकी बाते सुनकर मै भी घबरा गई और चमनलाल के घर समान ले जाने की अनुमति दे दी। सामान लेकर वे तीनो आदमी चले ही थे कि रास्ते मे पुलिस का अधिकारी उन्हे मिल गया। उसने पूछा, "कहा जा रहे हो?" वे बोले, "किसी के घर रहेगे। माता जी कहती है कि इस उजाड मे रहना अच्छा नही।" इस पर पुलिसवाले ने कहा, "नही, माता जी से कहो, कि हम उन्हे कही नही जाने देगे। उनकी हिफाजत की जिम्मेदारी हम पर है। मै रात को पहरा लगवा दूगा।" वे बिस्तरा लेकर वापिस लौटे और मुझे सारी बात सुनाई। रात भर देखते रहे, कोई पहरेदार नही आया। सुबह सुना कि जहा हम जा रहे थे वहा से कबाइलियो ने उसी रात लडकिया छीन ली और सामान लूट लिया। उस मकान मे कई हिन्दू परिवार रह रहे थे। जब मैने यह सुना तो मेरे मन मे पक्का विश्वास हो गया कि दिव्य शक्ति हमारी रक्षा कर रही है। बाद मे हमने उस पुलिस अफसर को कभी नही देखा। हमने वे तीन-चार दिन बहुत बेचैनी और घबराहट मे काटे।

बाद मे खबर आई कि हिन्दुस्तानी बहादुरो ने शत्रुओ से बारामूला छीन लिया है। कबाइलियो के पैर उखड गये। पाकिस्तानी सेना के अधिकारी उन्हे पीट-पीट कर, जबर्दस्ती मोर्चे पर जाने को विवश करने लगे पर वे हजारो की सख्या मे वापस भागे। लौटते समय रास्ते मे जो कुछ मिलता था वही वे लूट कर ले जाते थे। हमने यहा तक सुना कि उनकी जेबो मे बहुत से कटे हाथ और कान देखे गये। बात यह थी कि भागते हुए उनके पास इतना समय नही था कि वे तसल्ली से गहने उतारते इसलिए वे तलवार से गहनो समेत कान और हाथ काट लेते थे। इस बीच बीभत्स दृश्य से मुजफ्फराबाद वासी बहुत आतकित हुए।

हमे अब अपनी कोठी मे आये सतरह दिन हो चुके थे। एक रोज हमे दिन के चार बजे हृदय-द्रावक चीख-पुकार सुनाई दी। उसे सुनकर श्रीमती मोदी कहने लगी, "मालूम होता है, लुटेरे भारी सख्या मे लडकिया ले जा रहे है। न जाने अब हमारी इन मासूम बच्चियो का क्या होगा?" मैने भी घवराहट मे कहा, "अब क्या करू? नदी पास होती तो हम सब उसमे डूब मरती। अब ये रोज-रोज की कठिनाइया नही सही जाती।" मै यह कह ही रही थी कि कोठी के सामने से आवाज आई, "बहन जी, लडकियो को साथ लेकर जल्दी आइये। देखो, ये जालिम लुटेरे स्त्रियो ओर मासूम लडकियो को लिये जा रहे है।" मे हेरान थी कि यह कौन बुला रहा है। सिर उठाकर देखा तो पास की मसजिद का मौलवी आवाज दे रहा था। मै उसे विशेष रूप से नही जानती थी। श्रीमती मोदी पहिले तो अनजान मुसलमान पर विश्वास न करने को कहने लगी, पर जब मैने उसे यकीन दिलाया कि हम वहा पर सुरक्षित रहेगे तो वह मान गई और हम सब शीघ्रता से मौलवी के घर पहुचे। मौलवी ने बताया, "मै घर मे बैठा हुआ था। जब चीख-पुकार सुनी तो मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मुझे आपके घर की तरफ धकेल रहा है। इसीलिये मैने आपको पुकारा। यहा आप अच्छी तरह रह सकती है क्योकि यहा कोई नही आयेगा।"

दूसरे दिन सुना कि उस रात कुछ लुटेरे हमारी कोठी मे घुसे थे। शुक्र है कि हम बच गये।

हमने देखा कि मौलवी के घर हमारी कोठी का कुछ फरनीचर था। बच्चे देखकर कहने लगे, "मा! देखो ये हमारी चीजे है।" मैने उन्हे ऐसा कहने की मनाही करते हुए कहा, "अगर ये चीजे जल गई होती तो क्या होता? अच्छा हुआ जो वे किसी के काम आ गई। मै खुश हू और तुम्हे भी इसपर प्रसन्न होना चाहिए।" यह सुन कर वे चुप हो गये।

उन दिनो वहा के मुसलमान भी डर कर पाकिस्तान भागे जा रहे थे। यह अफवाह थी कि हिन्दुस्तानी सिख सेना मुसलमानो को बिना भेद-भाव के मारती-काटती आ रही है। एक रात तो सचमुच सारे मुसलमान भागने

को तैयार हो गये। मौलवी भी बहुत घबराया। उसकी स्त्री विलाप करने लगी। मौलवी की दो जवान लडकिया थी। उन पति-पत्नी को उन्ही की विशेष चिन्ता थी। रात को वे लोग बहुत परेशान रहे। चीख सुनकर मैं उठी और देखा बाहर एक बहुत बडा हजूम इसी तरह घबरा रहा है। मैं उनके बीच जाकर मे खडी हो गई और कहने लगी, "भाइयो! कही मत जाओ। तुम्हे कोई नही मारेगा। यह सब पाकिस्तान का झूठा प्रचार है।" वे बोले, "देखो जम्मू मे क्या हुआ है। जब वे यहा के हिन्दुओ की बुरी हालत देखेगे और देखेगे कि शहर लाशो से भरा हुआ है तो क्या वे हमे जिन्दा छोडेगे?" मैने कहा, "मै वायदा करती हू कि मै तुम्हे बचाऊगी। मेरे पास कुछ नही है। ये बच्चे और आपनी जान है। तुम सब एक जगह इकट्ठे रहना। मै तुम सब के आगे रहूगी। पहली गोली मेरे सीने मे लगेगी। बाद मे तुम्हारी बारी आयेगी। जब हमारी फौज दोमेल पहुचेगी तब हम सब मिलकर वहा चलेगे। मै सबसे आगे लाल झडा लेकर चलूगी। मै सौगन्ध खाकर कहती हू कि अपना बलिदान देकर भी मै तुम्हे बचाऊगी।"

मेरी इन बातो का उनपर पूरा प्रभाव हुआ और वे सबके सब मेरे दाये-बाये फिरने लगे। कुछ लोग मुझसे बोले, "तुम्हे तो अच्छी तरह मालूम है कि किस किस ने पाकिस्तानियो का साथ दिया है। इन्हे हमने नही बुलाया था। हम सब हिन्दू-मुसलमान एक थे। इन्होने बाहर से आकर यहा यह कहर बरपा किया है।

मुझे इनकी इस घबराहट पर बडी दया आ रही थी। मै सोच रही थी कि जैसे भी हो इन्हे बचाना चाहिये। मुझे स्वप्न मे भी कभी यह विचार नही आया कि चूकि इन लोगो ने मूझे इतना नुकसान पहुचाया है इसलिये मुझे इनका साथ नही देना चाहिये।

मेरे पास से वे लोग अब्दुल अजीज नाम के एक व्यक्ति के पास गये और उनसे मेरी सारी बात कह सुनाई। उसने उन्हे कहा, "वह जो कुछ कहती है वह सच है। तुम उसकी अच्छी तरह से हिफाजत करो। वह समय पर तुम लोगो को बचायेगी। मेरी ओर से भी उनसे प्रार्थना

करना कि अगर वह चाहे तो मेरे घर आकर खुशी से रह सकती है।"

ससार मे ऐसे भी लोग है, जो दूसरो के लिये अपना सर्वस्व अर्पण करते है। उनमे जाति, मजहब, रग वा नस्ल का भेद-भाव नही रहता। अब्दुल अजीज इसी मनोवृत्ति का एक अमर मानव था। जन्म से मुसलमान, पेशे का दर्जी, वह शुरू से ही काश्मीर नेशनल काफ्रेन्स का सदस्य और स्थानीय आन्दोलनो का अगुआ था। आक्रमण से कुछ दिन पहिले ही जेल से छूट कर आया था। उसने जब देखा कि हिन्दु महिलाओ पर अत्यधिक बर्बरतापूर्ण अत्याचार हो रहे है, वे गलियो मे दर-दर भटक रही है, उन्हे रहने के लिये कोई ठिकाना नही है, तो उस सच्चे और नेक मानव ने शेर की तरह दिलेर बन कर चार सौ हिन्दू देवियो और बच्चो को अपने घर पर रखा। अपना सामान बाहर रखा, खाना बाहर पकवाया, पर पीडित बहनो को आदर का स्थान दिया। पाकिस्तानियो ने उसे बहुत तग किया, परन्तु वह सदा यही कहता रहा, "चाहे तुम मुझे जान से मार दो पर मै एक बहन को भी घर से नही निकालूगा।" इसी बात पर कबाइलियो ने पहले तो उसका सब सामन लूट लिया पर जब वह फिर भी अपने प्रण से नही टला, तो एक दिन उन जालिमो ने उसे पकड कर कैद कर लिया। बाद मे सुना कि उन्होने उसे जान से मार डाला।

अब्दुल अजीज के समर्थन के बाद सबने मेरा कहना मान लिया। दो दिन बाद जब हालत कुछ सुधर गई तो वे लोग मुझसे कहने लगे, "बहन तूने उस दिन हमारे पाच सौ आदमियो को बेघर होने से बचाया, तेरे एहसान हम कभी नही भूलेगे।"

: १३ :

मौलवी के घर में

अब मुसलमानो मे भी कबाइलियो का डर बढने लगा था क्योकि वे लोग भागते हुए उन्हे भी लूट लेते थे। हमने तो यहा तक सुना कि वे लोग उनकी स्त्रियो और लडकियो को भी उठाकर ले जाते थे। मोलवी

को भी भय लगा। उसने अपने सदूक आदि दीवार में रखकर ऊपर लकडी के तख्ते लगा दिये। फिर उन्हे मिट्टी से पोत दिया।

इसी डर के कारण मुसलमान अब दिन-रात कुरान शरीफ पढते रहते थे। उनका खयाल था कि जब कबाइली आयेगे तो उन्हे कुरान पढते देखकर तग न करेगे। लेकिन उनका यह खयाल ठीक न निकला। एक दिन कबाइलियो की एक टोली एक काश्मीरी मालदार मुसलमान का घर लूटने लगी। वह कुरान पढ रहा था। उसने कहा, "भाई, मै भी मुसलमान हू और तुम भी मुसलमान हो। देखो, मै इस समय कुरान शरीफ पढ रहा हू। तुम्हे इसकी तो इज्जत करनी चाहिए।" उन्होने उत्तर दिया, "हमारा मजहब जर है। तुम क्या पढ रहे हो? उसकी हमे बिल्कुल परवा नही है।"

और उन्होने उसका सब कुछ लूट लिया। सुना गया कि उन्होने कुरान शरीफ तक के वर्के फाडकर इधर-उधर फेक दिये जिसके कारण स्थानीय मुसलमानो मे बडी हलचल मची और बाद मे पाकिस्तानियो को एक ऐसी टोली वहा भेजनी पडी जो रोजाना मस्जिद मे जाकर नमाज पढती थी। यह सब इसलिये किया गया था जिससे कि स्थानीय मुसलमानों को उनके सच्चे मुसलमान होने का विश्वास हो।

वर्तमान वजीर प० ताराचन्द कभी-कभी मेरे पास आकर मेरी जरूरत के बारे में पूछ-ताछ कर जाता था। मै उसे अक्सर उदास पाती थी। न जाने ये लोग उसे कितना कष्ट देते थे। वह मुह से कुछ नही कहता था। परन्तु उसकी निराशा भरी आखे सब हाल साफ-साफ बतला देती थी। उसकी दो नवजवान लडकिया और एक लडका था। वे लडकियों के कारण वहा फसा हुआ था। कुछ दिनो बाद पता चला कि उसकी वजारत छीन ली गई। बेचारे को सिर छिपाने का ठिकाना न रहा। किसी तरह एक मुसलमान दर्जी के पास जगह मिली। आखिर इसी गम मे वह एक दिन चिरनिद्रा मे सो गया। सुना गया कि उसकी लाश कब्र मे दफना दी गई। बाद मे उसके तीनो बच्चे शरणार्थियो के साथ रेडक्रास की सहायता से वहा से निकल आये।

जब वह पहली बार मेरे पास आया था तो उसके साथ एक काश्मीरी

मुसलमान था। वह भूतपूर्व माल अफसर था। उसका परिवार श्रीनगर मे था। मुझसे मिलने के कुछ दिन बाद न जाने वह कैसे श्रीनगर पहुच गया। पिछले दिन वह मुझे श्रीनगर मे मिला। कहने लगा, "अगर तुम उस दिन मेरी हिम्मत न बधाती तो मैं अपने परिवार को फिर न पा सकता।"

इस तरह हमे मौलवी के घर रहते दस दिन बीत गये। आटा समाप्त होने को था। मेरे और श्रीमती मोदी के एक वक्त खाने के कारण कुछ बचत जरूर होती थी, फिर भी खर्च बहुत था। अक्सर मौलवी मुझसे कहता, "बहनजी, अनाज के बिना आपका क्या होगा।" मै उससे कहती, "जिसने आजतक बचाया है, वही आगे भी बचायेगा।"

पहनने के कपडे भी फट गये थे। नये बनाने का कोई प्रश्न नही था। इसलिए उन फटे हुए कपडो मे ही टाकिया लगा लेती थी? साबुन नही था। इसलिये गर्म पानी मे राख डालकर कपडो को उबाल लेती थी। एक दिन बाहर के कुछ बालको को मेरे बच्चो ने अपने कपडे पहने देखा और मेरे पास आकर अश्रुपूर्ण नेत्रो से बारी-बारी से कहने लगे, "माताजी, देखो उसने मेरा फ्राक पहना है। देखो मा, उसने मेरा कोट पहना है। तुम हमे इनसे ये माग दो न। देखो, हमे कितनी सर्दी लगती है। हमारे कपडे हमे वापस दिलावो मा!" मैने जवाब दिया, "तुम्हे क्या हो गया है? तुम कपडो को ही सब कुछ समझते हो। क्या मे इन कपडो के लिये झगडा मोल लू। मागना तो दूर रहा, मै तो इन्हे यह जताना तक नही चाहती कि ये हमारी चीजे है। जहा तुम्हारे पापा चले गये, वही पर घर का सब आराम भी गया। जाओ जिन बच्चो ने तुम्हारे कपडे पहने है, उनके साथ प्रेम से खेलो और उन्हे इस बात का ज्ञान न होने दो कि तुमने कपडे पहचान लिए है।" यह सुनकर वे सब चुप हो गये। उसके बाद भूखे पेट, फटे हाल रहकर भी उन्होने किसी वस्तु की लालसा प्रकट नही की।

एक दिन सायकाल के समय हम सब बैठे हुए थे। द्वार बद था। मौलवी मसजिद मे गया हुआ था। अचानक द्वार खटखटाने की आवाज हुई। खोलकर देखा तो एक पाकिस्तानी अफसर और तीन सिपाही कुछ

आदमियो के सिर पर वोझ लादे बाहर खडे है। अफसर ने पूछा, "वजीरानी साहिवा यहा है क्या ?" हम सब पहले तो एक दूसरे का मुह ताकने लगे। पर फिर तुरन्त ही मैने आगे बढकर कहा, "क्या बात है ? मै हू।" उसने बडे अदब से सलाम किया और कहा, "बहन जी ! मै सुबह से आपको ढूढ रहा हू। कही पता नही लग रहा था। न जाने हमने कितने घर छान डाले। रहमदाद खा ने आपके लिए यह राशन भेजा है और हिदायत की है कि बहन से कहना, फिकर न करे, मै कुछ दिन वाद आ रहा हू। सब इतजाम कर दूगा।" यह कहकर वे राशन की गठरिया रखकर चले गये। उनमे गुड, नमक, और आटा था।

उनके जाने की खडखडाहट सुनकर मौलवी भी दौडा आया और पूछने लगा, "बहन जी, कौन था ?" मैने सारा हाल कह सुनाया। उसने इत्मीनान की सास लेते हुए कहा, "हमने आपके यहा रहने का भेद छिपा रखा था। उन्हे कैसे मालूम हुआ ?" मैने उससे कहा, "सुनो, मै छिपकर कही नही रह सकती। मैने उस प्रभु की शरण ली है, जैसे वह रखेगा, रहूगी।" मौलवी मेरी बातो से बडा प्रभावित होता था। देर-देर तक मै और वह ईश्वर-सबधी बातचीत करते रहते थे। मेरे पास से उठकर वह अपनी बीवी से कहा करता था "देखो, जो खुदा पर भरोसा रखते है उनकी मुराद कैसे पूरी होती है।" उसकी स्त्री राशन देखकर चिढ गई। बैठे-बैठे हमे घर पर ही सब कुछ मिल जाना उसे पसंद नही था। धीरे-धीरे उसका वर्ताव बिगडने लगा। मैने उसे राशन देकर सन्तुष्ट करना चाहा परन्तु उसमे कोई परिवर्तन नही हुआ। वह तो हमे तडपते ही देखना चाहती थी। मौलवी ने भी उसे समझाया, "तुम इनसे कुछ न कहो। सब अफसर इन्हे जानते है। ऐसा न हो कि हमे मुसीबत उठानी पडे।"

उन दिनो एक पाकिस्तानी अधिकारी स्थानीय अवस्था पर नियत्रण रखने के लिये यहा आ गया था। वह एक सिविलियन पठान था। एक दिन वह मेरे पास आया। उसके साथ तीन सशस्त्र सैनिक थे। वह मुझसे और बच्चो से बडी शिष्टता से मिला। उसने हठ करके मेरी आपबीती सुनी

और जब मैंने अपने कान का जेवर देने की बात बताई तो उसने पूछा, 'क्या आप बता सकती है कि वह जेवर आपने किस को दिया था ?" मैंने स्पष्ट इन्कार कर दिया। यह तो अपने रक्षक के प्रति विश्वासघात करने जैसी बात थी। वह चुप हो गया। जाते समय कहने लगा, "जब कभी कोई मुश्किल पेश आए तो मुझसे कहना। मैं जब तक यहा हू आपकी हर तरह से मदद करूगा।"

: १४ :

मेरे भाई

कुछ समय पश्चात एक दिन सायकाल के छ बजे पता लगा कि रहमदाद खा आ गया है। मैंने उससे मिलने की इच्छा प्रकट की। बाहर जाना खतरे मे खाली नही था, पर मैं किसी बात की चिन्ता किये बिना वजीर के पास पहुच गई, वही खा ठहरा हुआ था। तब कुछ-कुछ अधेरा हो चला था। वहा पहुचकर मैंने देखा कि कई अफसर इधर-उधर घूम रहे है। मैंने सतरी द्वारा रहमदाद खा के पास अपने आने की सूचना भेजी। वह तुरन्त बाहर आया। बडे आदर से भीतर ले जाकर कहने लगा, "आपने यहा आने की तकलीफ क्यो उठाई ? कल मैं आपके पास खुद ही आनेवाला था।" मैंने कहा, "एक तो मैं आपको धन्यवाद देने आई हू। दूसरे मुझे आपसे कुछ कहना भी है।" वह बोला, "सवेरे मैं वही आऊगा। तब बाते होगी।"

अपने कथनानुसार खा सुबह आया। उसके साथ एक और व्यक्ति था। उसका परिचय कराते हुए खा कहने लगा, "यह एक बडे नामी डाक्टर है। मेरी गैरहाजिरी मे यह आपका खयाल रखेंगे।" साथ ही पूछा, "बहन ! क्या तुम यहा से बाहर जाना पसन्द करोगी ?" मैंने इन्कार किया। उसने भी अनुरोध नही किया। फिर मैंने कहा, "भाई, यहा स्त्रियो पर बडे अत्याचार हो रहे है। तुम जैसे शरीफ आदमी के होते यह सब ठीक नही है। इससे सफलता नही मिल सकती। तुम लोग भगवान् को क्यो भूल रहे हो ?

मै तुम्हारी कैद मे हू। मुझे कुछ कहने का अधिकार नही है परन्तु मै यह कहे बिना नही रह सकती कि हिन्दुस्तान लडे या पाकिस्तान, जो अत्याचार करेगा वह गिर जायगा।" जवाव दिया, "अब मैंने औरतो की हिफाजत का पूरा-पूरा इतिजाम कर दिया है। " मै बोली, "ठीक है, मै सारा दिन बैठी रहती हू। अगर तुम मुझे इन दुखी स्त्रियो की देखभाल का काम सौप दो तो वहुत अच्छा हो।" इसपर उसने 'न' करते हुए कहा, "यह काम अभी तुमसे नही हो सकता।"

उन दो के अतिरिक्त, एक तीसरा व्यक्ति भी वहा था। वह तब तो चुपचाप हमारी बाते सुनता रहा पर दूसरे दिन अकेला ही मुझसे मिलने आया। उसने बाहर से मेरे नौकर द्वारा मुझसे मिलने की इजाजत मागी। मेरे आज्ञा देने पर वह अन्दर आया। वह लगभग पचास वर्ष का था। उसने साधारण-से कपडे पहने हुए थे, और वह 'खा' नाम से प्रसिद्ध था। वह आकर मेरे पास बैठ गया और कहने लगा, "मै डाक्टर का साथी हू। हम सब तुम्हारी कोठी मे ठहरे है। बहन, वहा मैने एक कमरे मे हड्डियों का कुछ चूरा टीन के तख्ते के नीचे देखा है। मुझे बताया गया है कि वह तुम्हारे मालिक का है। क्या तुम उसे नदी मे डलवाना चाहती हो?" मैंने कहा, "डलवाना तो चाहती हू पर नदी पर कैसे जाऊ?" असमर्थ हू।" वह बोला, "अपना नौकर मेरे साथ दो, मै उस चूरे को कृष्णगगा मे डलवा आऊगा।" यह कहकर वह मेहता साहब का गुणगान करने लगा। फिर मेरी आवश्यकता की पूछताछ की। इतने मे मौलवी भी वहा आ गया। उससे वह बोला, "सुनो मौलवी साहब! यह मेरी बहन है। इसकी हर तरह हिफाजत करना। जो इसे कुछ तकलीफ पहुची तो तुम्हारी खैर नही।" मुझसे पूछने लगा, "क्या तुम रामायण पढती हो?" मैंने कहा, "कभी पढती थी पर अव गीता रामायण मेरे पास कहा हैं।" इस पर मौलवी ने कहा, "मेरे पास गीता उर्दू मे है, मै वह आपको पढने को दे दूगा।" खा ने कहा, "हा, जरूर देना।" उसके वाद मुझसे पूछने लगा, "कुरान शरीफ पढोगी क्या?" मैंने उत्तर दिया, "अगर हिन्दी मे होगी तो जरूर पढूगी।

परन्तु डर से नही पढूगी। एक हिन्दू की हैसियत से मेरे लिए सब मजहवी किताबे एक है। मै इसकी इज्जत करूगी जितनी अपनी धार्मिक पुस्तक की करती हू।" मौलवी ने हिन्दी मे छपा हुआ एक 'सिपारा' ओर उर्दू गीता लेकर दी। खा के कहने पर कुछ और भी किताबे उसने मुझे पढने को दी जिनमे मुगलकाल की शहजादियो की कुछ दर्दनाक कहानिया भी थी। खा कुछ देर बाद ओम् को दूसरे दिन कोठी पर आने की बात कह कर चला गया।

मै मौलवी की पत्नी से सदा अत्यन्त नम्रता से पेश आती थी। परन्तु वह मेरे साथ के तीन पुरुषो से तग थी। मुझसे कहती थी, "हमारे यहा पर्दा होता है। मै किसी के सामने नही आती। लेकिन ये तुम्हारे आदमी यहा रह रहे है। मुझे यह अच्छा नही लगता। मै तुम्हारी वजह से चुप हू। तुम इन्हे रुखसत क्यो नही कर देती?" मै उसे समझाती, "वहन! यह मेरे नोकर नही, बच्चे है। मै इन्हे अपने से दूर करके मौत के मुह मे नही भेज सकती। जायेगे तो हम सब इकठे जायेगे। हम एक दूसरे का साथ नही छोड सकते।" वह यह सुन नाक-भौ सिकोड कर रह जाती। परन्तु जब कभी लडाका जहाज वम फेकने आता था, तो मोलवी की स्त्री को मेरी आवश्यकता का अनुभव होने लगता था। उस समय भय वे उसका हृदय काप उठता था। वह मेरे पास आकर वैठ जाती थी और मुझे पकड लेती थी। उसका रग पीला पड जाता था।

एक दिन मौलवी की लडकिया मुझसे कहने लगी, "क्या तुम्हे हमारे हाथ का खाने मे परहेज है? तुम हमारा पका हुआ खाना क्यो नही खाती?" मैने कहा, "तुम जानती हो, मैने एक ही वक्त सफाई से खाना खाने का व्रत रखा है। तुम लोग गोश्त वगैरा खाते हो, इसलिए मै तुम्हारे यहा नही खाती। यदि तुम मिट्टी से हाथ धोकर सफाई से खाना पकाओ, तो मै जरूर खाऊगी। मुझे तुमसे छूत नही है। लडकियो ने मेरे कहने के अनुसार एक बार मेरी वच्चियो के साथ मिलकर खाना पकाया। तब हम सबने बिना सकोच वह खाना खाया।

दूसरे दिन सवेरे खा स्वय आकर ओम् को साथ ले गया और मेहता साहब के शेष फूल कृष्णगगा मे डलवा आया। नदी तट पर उसने ओम् से कहा, "देखो, इनको किनारे पर नही बल्कि बीच धारा मे डालना, ताकि ये बह जायं। ऐसा करने से माताजी के दिल को तसल्ली होगी। हमें उन्हे खुश रखना है।" ओम् और शिवदयाल मुझे माताजी कहते थे। इसीसे खा मुझे कभी बहन जी, कभी माताजी कहा करता था। वह रोज आकर घटो बैठकर बातचीत करता। उसपर कइयो ने उसपर पाकिस्तानी होने का शक किया। उसकी बातो और उसके पहिरावे से लगता था कि वह कोई बडा आदमी है। हम उसकी बातो मे तग भी आ जाते थे, कभी-कभी उसपर शक भी होता था कि कही यह धोखा तो नही दे रहा है। मनुष्य के भीतर ही तो सब पाप होते है। पर सदेह होने पर भी मैंने अपने साथवालो से यही कहा, "चाहे कुछ हो, उसने मुझे बहन कहा है। मुझे इससे कुछ भी भय नही।" वैसे शहर में उसकी बडी धाक थी।

डाक्टर भी हमारे यहा कभी-कभी आता था। श्रीमती मोदी का स्वास्थ्य वैसे तो अच्छा था, परन्तु गोली का घाव अभी नही भरा था। डाक्टर ने मल्हम-पट्टी करने के लिये एक दूसरे डाक्टर की, जो पहले काश्मीरी पडित था, ड्यूटी लगा दी थी। यह रियासती फौज का डाक्टर था और अब मुसलमान बन गया था। वह प्रतिदिन आता और पट्टी करके चला जाता। मैंने उसे कभी मुस्कराते नही देखा। हमेशा आहे भरता रहता था, पर हमसे उसने कभी कोई विशेष बात नही कही। उसकी टोली में लगभग १० आदमी थे और वे सब हमारी कोठी मे ठहरे थे। वे मेरे पास आते रहते थे। इससे मौलवी की भी उनसे जान-पहचान हो गई थी और वे लोग मस्जिद मे नमाज पढने आने लगे थे। जुमे के रोज वहा सभाये भी होने लगी थी। पाकिस्तानी लीडरो के भाषण प्राय वही हुआ करते थे।

कभी-कभी डाक्टर और खा महाज पर ऊडी जाते थे। उनकी कोठी के बाहर सदा पेडो के पत्तो और घास से ढकी एक लारी तैयार रहती थी। हवाई हमले से बचने का यह अनूठा उपाय सोचा गया था।

एक दिन मैं कमरे मे बैठी हुई थी कि डाक्टर और उसके पाच साथी आये। उनमें एक प्रोफेसर मकबूल कुरैशी भी था, जो कुछ दिन ही पहले श्रीनगर से छुट्टी पर आया था। वह मेहता साहब का 'क्लासफेलो' रहा था और हमारे यहा भी कई वार आया था। उस दिन मेरी तवियत ठीक नही थी। उन्होंने मुझसे मिलने की इच्छा प्रकट की। मैं वाहर निकलना नही चाहती थी, परन्तु वे आगन मे बैठ गये और कहने लगे, "हम तो मिलकर ही जायेगे।" मैं बडी मुश्किल मे पडी। क्योकि मौलवी की स्त्री और लडकिया वाहर नही जा सकती थी। मै उन्हे अन्दर नही बुला सकती थी। इसलिये मैं उनके इस प्रकार आग्रह पर क्रोध से भर उठी, शीघ्रता से बाहर आई और गर्ज कर वोली, "बताओ, तुम्हे मुझसे क्या काम है? क्यो मुझे तग करते हो? जब मेरी तवियत ठीक नही, तो मैं तुमसे बातचीत कैसे कर सकती हू।" मेरी क्रोधपूर्ण वात सुनकर वे बोले, "माफ करना, बहन जी! हम तो आपकी बाते सुन कर आपसे मिलने आये है। यदि आपको कुछ तकलीफ होती हो तो हम चले जाते है।" पर वे गये नही। मेरी तालीम और मेरे खानदान की वावत पूछने लगे। एक व्यक्ति मेरे लडके सुरेश की ओर देखकर कहने लगा, "मुझे इन बच्चो पर तरस आता है। बेचारो की पढाई वरबाद हो गई। अगर आप इसे मेरे पास पढने भेजे तो मैं इसे पढाऊगा।" मैंने कहा, "आपको इस हमदर्दी का शुक्रिया! लेकिन मेरी एक प्रार्थना है कि आप मुझपर, मेरी हालत पर और इन बच्चो पर तरस न खाये। मुझपर दया करने का अधिकार केवल भगवान् को है। मनुष्य तो बरबाद करना जानता है, आवाद करना नही। आज तक उसने लाखो जानवरो की जान ली है, पर जिन्दा एक को भी नही कर सका। खैर! मैं वहुत कुछ कह गई हू। बुरा न मानिये।" वे उठे, कहने लगे, "माफ करना। जब आपकी तवियत ठीक होगी तब फिर आयेगे।"

वाद मे सुना गया कि यह टोली घर-घर मे घूमकर लडकिया देख रही थी।

: १५ :

शैतान हमदर्द के रूप में

मुझे खाने-पीने की दिक्कत से पेचिश हो गई थी। शिवदयाल जाकर पठान डाक्टर को बुला लाया। उसने आते ही मुझे अच्छी तरह देखा और शिवदयाल को साथ लेकर खुद बाजार गया और एक मुसलमान की दूकान से ओषधि लेकर भेजी। वह प्राय मेरे पास आता था। बड़ा तअस्सुबी था। जब से वह मुजफ्फराबाद आया था, मुसलमानो मे यही प्रचार करता था, कि उसने हिन्दुस्तान मे मुसलमानो पर बहुत जुल्म होते देखे है। और नो ओर वह मेरे से भी अक्सर ऐसी बाते करता था। पर मै उसे झाड देती थी।

एक दिन आगन मे मै उससे बातचीत कर रही थी कि ऊपर से लड़ाका जहाज आ गया। वह भाग कर वृक्ष की आड मे हो गया। मैने हसकर कहा, "डाक्टर साहब, आप भीतर छिप जाइये। कही आप पर ही वार न हो। जनता को आपकी बडी जरूरत है।" वह झेपते हुए वृक्ष की ओट से निकल कर मेरे पास आया और कहने लगा, "नही हम नही डरते। मै तो ऐसे ही पेड के नीचे हो गया था।" बाद मे पता लगा कि मस्जिद मे तकरीर करते हुए उसने कहा था, "मेहता साहब की स्त्री ने मुझसे छिपने के लिये कहा था पर उन्हे क्या मालूम कि पठान छिपनेवाले नही।"

इन दिनो काश्मीर राज्य के दो अधिकारी यहा भागकर आये थे। आशिक हुसैन और मियाँ नासिर। दोनो काश्मीरी मुसलमान थे। यहा आते ही पहले को वजीर ओर दूसरे को कप्तान पुलिस का पद मिला। दोनो मेरे पास आये और अच्छी तरह बातचीत करने के बाद कहने लगे, "कोई तकलीफ हो तो हमे कहना। हम आपकी हर तरह से मदद करेगे। यह भी कहा, "हम आपके लिये स्पेशल राशन का इन्तिजाम कर देगे।" मैने कहा, '"अभी मेरे पास राशन है। जब समाप्त हो जायगा तब आपसे लेना ही पडेगा।"

इस अर्से मे रहमदाद खा तबदील होकर कही और चला गया था।" इधर मौलवी को भी नौकरी मिल गई। उसे कट्रोलर का पद मिला। मुझसे मिलने के लिये काफी लोग आने लगे थे। मै वहुत तग आ जाती थी, पर कुछ कर नही सकती थी। एक दिन एक सत्तर वर्षीय पठान आया। देखने मे भला आदमी लगता था। कहने लगा, "मै आपसे अकेले मे कुछ बाते करना चाहता हू फिर कभी आऊगा।" फिर बोला, "हमसे कोई पूछता है, कैसे आये हो? तो हम कहते है, ऐसे ही देखने-सुनने के लिये। अपने पास से खाते है। किसी की चीज को छूते नही।" खुद ही यह भी सुनाने लगा, "मै वहुत साल हिन्दुस्तान मे रहा हू। आनन्द भवन भी जाता था। वहा अक्सर हमे हिदू-मुसलमानो को इकट्ठे मिठाई मिलती थी। देखो, आज यह क्या हो रहा है?" मैने कहा "यह सब हमारी मूर्खता है। बदले की आग से जले हुए हम शान्ति खो बैठे। मनुष्य पशु बन गया है।" वह फिर मुझे कहने लगा, "तुम सब के सामने क्यो आ जाती हो। यह अच्छा नही। अपने बच्चो का ध्यान तुम्हे रखना चाहिये।" मैने सदा की भाति जवाब दिया, "मुझे भगवान् के सिवा किसी का डर नही है। मौत का तो हम खुशी-खुशी स्वागत करते है।" यह सुनकर वह शात हो गया और फिर आने को कह कर चला गया।

एक बार आजाद काश्मीर सरकार का शासक सरदार इब्राहीम वहा आया। मस्जिद मेउसका भाषण हुआ। वह मेरे पास भी आया। उसके साथ खा और एक जम्मू का वकील, दुर्रानी था। यह वकील मुझे अच्छी तरह जानता था। उसकी बहन मेरी घनिष्ठ सहेली थी। सरदार भी मेहता साहब को जानता था। जिस समय वे पुछ मे गवर्नर थे तो सरदार वहा वकालत करता था। मुझसे वह बडी शिष्टता से पेश आया। उसे देखकर यह अदाजा लगाना कठिन था कि इसी के इशारे पर इतने अत्याचार हुए है। कहने लगा, "जो कुछ आप पर आज तक गुजरी है उसके लिये मै आपसे माफी मागता हू। मेहता साहब की मौत का मुझे अफसोस है।" मैने कहा, "सरदार साहब, मुझसे किस बात की माफी मागते है? माफी भगवान् से

मागिये और सरदार साहिब! क्या स्त्रियो, और बच्चो पर जुल्म करके कोई सफल हुआ है? आप तो पढे-लिखे है। क्या कही इतिहास मे आपने पढा है कि अत्याचार करनेवाली जातिया सदा विजयी रही है? याद रखिये, ईश्वर के हाथ मे न्याय की तुला है। जिस ओर अत्याचार अधिक होगा, वह पक्ष अवश्य ही गिर जायेगा। वह चाहे हिन्दुस्तान हो या पाकिस्तान।" वह बोला, "नही, हम ऐसा नही करते। अगर हम ऐसा करे तो हममे और सिखो मे फरक ही क्या रहा?" मैने पूछा, "फिर यह सब किसने किया? क्या आप प्रधान नही थे?" खा बीच मे बात काटकर बोला, "हम काश्मीर को कभी नही छोडेगे।" उन दोनो की आपस मे कुछ बातो पर बहस-सी हुई, जिसे मै न समझ सकी। उसके बाद सरदार ने कहा, "मै चाहता हू कि अगर ये स्त्रिया हिन्दुस्तान जाना चाहे, तो इन्हे जल्दी भेज दू।" मैने झट उत्तर दिया, "सब जाना चाहेगी। आप कहे तो मै सब की दरख्वास्त लेकर भेजू।" वह बोला, "ऐसे थोडे ही होता है। मै लाहौर जाकर रेडियो पर कह दूगा। बाद मे आपको भेजा जायेगा। अभी अगर आपको किसी चीज की जरूरत हो तो बताइये?" श्रीमती मोदी से भी पूछा। मैने कहा, "मुझे इज्जत की मौत चाहिये और कोई आवश्यकता नही। मुझे अब जीना दूभर हो गया है।" वह कहने लगा, "मैने तो आप की हिम्मत की बहुत तारीफ सुनी है। यह आप क्या कह रही है? अब डरने की जरूरत नही है।" मैने जवाब दिया, "कठोर-से-कठोर इन्कलाब से भी मै नही डरती पर यह ऐसे कब तक चलेगा। मुफ्त का खाना-पीना हमे अच्छा नही लगता।" इसपर सरदार मुझसे कुछ न कहकर मौलवी से कहने लगा, "आपने इन्हे रखकर बडी अच्छी बात की है।" फिर मुझसे बोला, "आपको किस-किस चीज की जरूरत है, बोलिये?" मेरे उत्तर देने से पूर्व खान बोला, "इनके पास है ही क्या? बच्चो को देखिये, फटे कपडे पहने है। खाने को आटे के सिवाय कुछ नही। कपडे धोने को साबुन नही। फिर भी यह आपसे कुछ नही मागेगी।" सरदार कहने लगा, "मै सब ठीक करा दूगा। आपको किसी बात की फिकर नहीं

करनी चाहिये।" यह कहकर वे सब चले गये।

कुछ दिन वाद सरदार ने चार जोड़े कपड़े भिजवाये, जिममे कुछ पुराने भी थे। वाद मे सुना कि लानेवाले ने वे रास्ते मे वदल दिये थे। कुछ सामान भी भेजा था और वजीर को राशनादि की भी हिदायत दे गया था। मैने कपड़े रख दिये।

एक दिन जगलात का एक भूतपूर्व रेजर मेरे पास आया। वह पहले काश्मीर राज्य का मुलाजिम था। आजकल स्वतन्त्र रूप से काम करता था। शायद स्यालकोट का रहनेवाला था। मुझसे कहने लगा, "आपके पति जव काश्मीर मे थे तव मैं आपके घर आता-जाता था। चूकि आपके पति मेरे दोस्त के दोस्त थे उस नाते मैं आपकी कुछ मदद करना चाहता हू। मेरा खयाल है कि आप अव यहा न रहे। मै आपको रावलपिडी पहुचा दूगा और वहा से जम्मू जाने का इन्तिजाम हो सकता है। और लोग भी चलना चाहे तो कोई हर्ज नही। यहा गल्ला लेकर दस लारिया आई है और अव खाली जा रही है।" मैने कहा, "मै सोच कर उत्तर दूगी।" उसने कहा, "अच्छा मैं हस्पताल के क्वार्टर मे ठहरा हुआ हू। वही पता भेजना।" वह चला गया। हम लोगो ने इस वारे मे सलाह की और न जाने का निश्चय किया। यह अच्छा ही हुआ, नही तो जैसे कि वाद मे पता लगा उन्होने हमे खत्म करने का विचार कर लिया था।

मौलवी के घर रहते हुए अव मुझे दो महीने वीत चुके थे। वे लोग तग आ गये थे पर खान और अफसरो के डर के मारे कुछ कह नही सकते थे। चमनलाल से जो हमारे यहा आया करता था, मौलवी को वडी चिढ थी। कहता था, "यह कार्ग्रेसी है और वडा चालाक है।" चमन हमे फौज के आगे वढने का समाचार सुनाया करता था।

एक दिन डाक्टर अपने साथ एक पठान को ले आया। वह लगभग पैंतालीस साल का था। उसका कद लम्बा और वस्त्र साधारण थे। डाक्टर ने कहा, 'यह जौहरी है। वम्बई मे इनकी दूकान है। यह पंडित नेहरू के भी मित्र है। आपकी वडी सहायता कर सकते है।" मेरे पास

उस समय श्रीमती मोदी, तीन साथी और बडा लडका सुरेश था। वह सुरेश की ओर सकेत करके कहने लगा, "यह आपका लडका है? क्या आप इसे मुझे देगी? मैने शादी नही की है। मेरा कोई बच्चा नही है।" मै बोली, "मेरी दुनिया अब इतनी ही है। क्या अब इसे भी तुम माग रहे हो? डाक्टर ने रोककर कहा, "नही योही कह रहे है।" उसने फिर मुझसे मेरा नाम पूछा और मेरे बताने पर कहा, "मै तुम्हारी किस्मत देखना चाहता हू।" मै बोली, "क्या देखेगे आप? मुझे तो सब कुछ नज़र आ रहा है।" डाक्टर कहने लगा,"बडे ज्योतिषी है।" ज्योतिषी साहब ने कुछ सोचने का नाट्य करते हुए कहा, "तुम्हारे सुख के दिन खत्म हो चुके है।" मैने कहा, "यह तो सबको नजर आ रहा है।" वह बोला, "पर तुम चाहो तो अब भी अपनी जिन्दगी को सुखी बना सकती हो। तुममे एक बुरी आदत है, उसे छोड दो। तुम किसी का यकीन नही करती। अगर तुम्हे कोई अच्छा दोस्त मिले तो उसकी बात मान लो। तभी तुम्हारे दिन फिरेगे नही तो तुम पर बहुत मुसीबते आयेगी। तुम्हारे बच्चे धूल मे मिल जायेगे। तुम अन्धी हो जाओगी।" मैने उत्तर दिया, "अगर सत्य पर दृढ रहते हुए उस भगवान् की याद मे मेरी आखे जाती रहती है तो खुशी से मै उसे सहन करूगी।" इस पर उसने कहा, "एक बात मै आपसे कहना चाहता हू पर सबके सामने नही।" मै-बोली, "आप अकेले मे कह सकते है।" उसी आगन मे थोडी दूर पर एक तख्त था। मैने वहीं चलने को कहा। भगवान् का नाम लेकर और अपने स्वर्गस्थ पति का स्मरण कर मै उठ खडी हुई। श्रीमती मोदी ने मुझे रोका, "कृष्णा, क्या कर रही हो? मत जाओ।" मेरे तीनो साथियो का भी रग उड गया। मैने उन्हे दिलासा देकर कहा, "भय की कोई बात नही है। मुझे इसकी बात सुननी होगी।"

वहा उसने मुझसे कहा, मेरा भाजा हिन्दुस्तान मे फंसा हुआ है। मै चाहता हू कि तुम मेरे साथ चलो ताकि मै तुम्हारे बदले मे उसे प्राप्त कर सकू।" और भी एक आध निस्सार बात उसने कही। मै उसकी नब्ज़ तो

पहले ही पहचान गई थी फिर भी विनय से बोली, "सुनो तुम मुझे अपना पता दे जाओ। मै वायदा करती हू कि जब मै हिन्दुस्तान जाऊगी तो तुम्हारे बच्चे को खोजकर अवश्य भिजवा दूगी।" वह अपनी ही हाकता गया, "देखिए मै आपको पडित जी के पास ले जाऊगा।" मैने कहा, "हिन्दुस्तान जाऊगी तो खुद पडित जी से मिलूगी। आपके लडके के लिये जरूर यत्न करूगी। पर अब तुम्हारे साथ नही जाऊगी। मै यहा इसी हाल मे खुश हू।" यह सुनकर उसके होश ठिकाने आये, और जल्दी से अपना पता देकर चलने को उठा। जाते-जाते पहले तो उसने नरमी से कहा, "कोई तकलीफ हो, तो मुझे खत लिखना।" फिर एकदम भाव बदलकर धमकी भरे स्वर मे कहने लगा, "तुमने मेरे मन को दुखाया है। आज पठान का राज है। कल देखी जायगी।" मैने कहा, "जिसका मुझे भरोसा है, हर हालत मे वही मुझे बचायेगा। वह तुमसे कही बडा है।" यह सुन उसकी आखे लाल हो गई। वह चाहता तो बाह पकड कर बलात् मुझे ले जा सकता था। बाते बनाने की उसे क्या जरूरत थी। परन्तु क्या मेरे सर्वशक्तिमान ने कष्ट के समय द्रोपदी के चीर नही बढाये थे?

बात खतम हुई। साथ का डाक्टर जिसे मै आज तक शरीफ समझती रही थी, बोला, "हमे अब इजाजत दीजिए।" नकली ज्योतिषी भी बोला, "हमशीरा, मै जाता हू।" जाते हुए उसने मेरा हाथ अपने हाथ मे ले कर अपने माथे से लगाया। मेरी समझ मे यह पहेली न आ सकी दूसरे दिन खान आया। कहने लगा, "बहन, मै तुम्हे हुक्म देता हू कि तुम अब किसी गैर के सामने न आना। वायदा करो कि नही आओगी।" मैने कहा, "मुझे स्वीकार है। आगे ऐसा ही होगा।" खान चला गया। घटे भर बाद ही तीन कबाइली आये। मै अन्दर थी। शिवदयाल और ओम् से जो, बाहर थे, पूछने लगे, "वह कहा है?" ओम् ने कहा, "अन्दर है।" उन्होने मुझसे मिलने की इच्छा प्रकट की। मैने ओम् से उन्हे इनकार कहला भेजा। वे कहने लगे, "तो फिर हम अन्दर आयेगे।" मैने कहला भेजा "घर मेरा नही है। जिसका है उनसे आज्ञा ले लो।" वे बोले,

"चाहे कुछ हो तुम्हे आना ही पडेगा।" एक घटे तक यही वहस चली। आखिर वे निराश होकर लौट गये।

: १६ :

नरक या स्वर्ग

अव फौज प्रतिदिन हमारी कोठी मे आती, पर्वत के दामन मे ठहरती और रात को महाज पर चली जाती। एक बार रात के दस बजे हम अपनी दु ख-बीती पर मिल-जुल कर वाते कर रहे थे कि मौलवी की दोनो लडकिया मेरी लडकियो से कहने लगी, "आओ, वाहर गाना सुने।" वे चली गईं। मेरी बुद्धी इस समय जैसे घास चरने गई हुई थी, मैनेपूछा तक नही कि गाना कहा हे? बात यह थी कि कोठी मे तीन सौ के लगभग सिपाही उतरे हुए थे। वे ऊडी महाज पर जा रहे थे। रात को खा-पी कर वे ही लोग गा रहे थे।

कुछ देर तो सब लडकिया दीवार की आड मे खडी होकर गाना सुनती रही, फिर पास के खेत मे लघु-शका को चली गई। अभी वैठी ही थी कि जिस ओर वीणा थी,उसी ओर से पठान आ निकले। वे इन्हे घेरे मे लेना ही चाहते थे कि वीणा ने कहा, "वह देखो! पठान आ गये।" वे सभी आख झपकी में घर आगईं। मौलवी की छोटी लडकिया भी आ गईं, पर वडी को एक पठान ने वाजू से पकड लिया। यह लडकी सबसे पहले भाग सकती थी क्योकि वह घर के सबसे अधिक समीप थी, पर न जाने क्यो वह सहम-सी गई थो। वह चिल्लाई। उनसे कहने लगी, "मै मुसलमान की लडकी हू, छोडो।" फिर कलमा भी पढा। पर वे न माने। कहने, लगे "तुम काफिर की लडकी हो।" इतने मे उसका भाई आया, पास ही चचा रहता था वह भी आ पहुचा। उनके कहने पर भी वे न माने। तव उसका भाई मस्जिद मे बाप को वुला लाया। मौलवी ने कहा, "यह मेरी लडकी है।" तव कही उस वेचारी को छुट्टी मिली। वह लडकी अन्दर आई

तो उसकी मा सिर पीटने और रोने लगी। रोते-रोते वह पति को गालिया सुना रही थी और कह रही थी, "तूने हिन्दुओ को अपने घर मे रखा है तभी मेरी लडकी पर मुसीबत आई है।" मै भी सोच रही थी। हमारे ही कारण इसे यह कष्ट सहन करना पडा है। अगर कही यह अपहृत हो जाती, तो क्या होता? मुझे तो वह भी अपनी लडकी के समान लगती थी। मैने उससे कहा "सच है बहन! हमारी वजह से ही तुम्हे यह सब कष्ट उठाने पड रहे, है। कोई और जगह मिलने पर हम एक-दो दिन मे यहा से चले जायेगे। भगवान् को धन्यवाद दो जिसने इस समय तुम्हारी लडकी को बचाया।"

दूसरे दिन सवेरे ही मैने खान को बुलाकर कहा, मै और कोई मकान लेना चाहती हू।" वजीर से भी कहा, परन्तु कोई भी दिल से मेरा यहा से कही जाना नही चाहता था। पर मै थी कि एक मिनट भी वहा रहना नही चाहती थी। उधर मौलवी भी अब डाक्टर के पास घटो बैठा रहता था। मुझे शक होने लगा कि कही हमारे साथ यहा कोई धोखा न किया जाय। इसी बीच मे एक दिन प्रो० मकबूल वहा आया। वह अब वहा का कोई अफसर बन गया था। मुझसे कहने लगा, "श्रीमती मेहता! तुम कितनी खुश-किस्मत हो कि तुम्हारे पास हमारा प्रेजीडेट (इब्राहीम) चलकर आया।" मैने पूछा, "इसमे खुश-किस्मती की कौनसी बात है? वह बोला, "अपना मुकाबला तुम उन मुसलमान बहनो से करो। जिनके नगे जलूस हिन्दुस्तान मे निकाले गये थे। क्या किसी ने यहा तुम्हारा जलूस निकाला?" मैने कहा, "प्रोफेसर साहब! मुझे उन बहनो के हाल पर दुख है। अगर मेरे जलूस निकालने से उन बहनो का कष्ट दूर हो सकता है, तो मै तैयार हू। मैने अपने आपको मिट्टी समझ लिया है। इन बातो का मुझे डर नही है।" वह एकदम बोला, "आपने बुरा माना। मैने योही बात की थी। क्या हम आपकी उस दिन की नेकी भूल सकते है, जब आप अपनी लडकियो के साथ हमे बचाने को तैयार हो गई थी। वह रात कितनी खौफनाक थी। मै भी यहा से चला गया था और अपनी मा को तुम्हारे हवाले कर गया था।" मैने कहा, "वह तो मेरा कर्त्तव्य था। जो कुछ मै कर

सकती, वह मुझे करना ही था। मै बदला नही मागती। आप लेना चाहे तो मै तैयार हू।" "मुझे माफ करे। मैने तो मामूली-सी बात कही थी" वह नम्रता से बोला।

एक दिन मौलवी ने आकर कहा, "मै आपके रहने का इन्तिजाम रावलपिडी मे कर रहा हू। जब तक हालात ठीक नही होगे, आप वहा आराम से रह सकेगी।" मैने कहा, "मै और कही नही जाऊगी। हा मैने इस मकान से दूसरी जगह जाने का प्रबन्ध कर लिया है। मै चमनलाल के घर जाकर रहूगी।" यह सुनकर उसका मुह फूल गया।

खान ने कह रखा था कि जब मकान बदलो, तो मुझे साथ ले लेना। बदमाश फिरते है, कही तग न करे। पर मैने उसे भी नही बुलाया। सायकाल के समय कुछ-कुछ अधेरा होने पर सबसे पहले मैने लडकियो को चमन के घर भेज दिया। उसके पश्चात् हम सब वहा गये। उसने एक अच्छा साफ-सुथरा कमरा हमे दिया। उसका मकान दगे मे जलाया नही गया था। केवल लूटा गया था। इन्होने इस मकान मे कई लडकिया छिपा रखी थी। उसमे कई तहखाने थे। दिन मे वे लडकिया वही घास मे दुबकी पडी रहती थी। उस छोटे-से मकान मे लगभग सात डेरे लगे हुए थे। हालत सबकी शोचनीय थी। टूटे बर्तन, एक आध रजाई और कुछ बोरिया, जिन्हे जोड-सी कर उन्होने बिछौना-सा बना लिया था, उस डेरे की बची-खुची सम्पत्ति थी। चमनलाल का परिवार सात व्यक्तियो का था। मा-बाप, एक विवाहित बहन, उसका पति और एक बच्चा और एक १७ वर्षीय कुमारी बहन। इसके अलावा मित्रो के स्त्री-बच्चे भी थे।

यहा आकर मैने किसी को धन के लिये और किसी को जन के लिये रोते पाया। मकान शहर के बीच मे था इसलिये कबाइलियो का डर भी बराबर बना रहता था। वे निर्दयी अनियमित रूप से आते, जो मिलता उसे लूट कर ले जाते। चमनलाल का बाप नानकचन्द अर्जीनवीस कभी धनी था, पर अब मुसीबत का मारा बेचारा दाने-दाने को तरसता था।

हा, रसूख अच्छा होने के कारण स्थानीय मुसलमान कभी-कभी थोडी वहुत सहायता कर देते थे। वास्तव मे वह जीवन नही, मरण की प्रतीक्षा भर थी। कई डेरे एक साथ होने के कारण एक दूसरे को ढाढस रहता था। टट्टी भीतर नही वनी थी, इसलिये सवको वाहर जाना पडता था। कवाइलियो के डर से वहुत सवेरे जाते थे। उस समय जले मकानो के खडहगे से भी डर लगता था।

ये दिसम्वर के दिन थे। ठिठराने वाली सर्दी पड रही थी पर हमारे पास न पहनने को कपडे थे न तापने को आग। जले हुए घरो से तख्ते ला-लाकर किसी तरह चाय आदि पकाते थे। मौलवी के घर पर अपनी कोठी के जगले के तख्ते ला-लाकर हम जलाते थे, वल्कि उसी की राख से मैं कपडे भी धो लेती थी किन्तु यहा न तो लकडी ही थी ओर न राख। परिणाम स्वरूप लोगो के कपडो मे जुए पड गयी थी। कई मनुष्यो के शरीर पर जुए इस तरह रेगती थी गोया चीटिया अपने भटो से निकल कर मार्च कर रही हो। मेरे दोनो लडको के सारे बदन पर भी फुन्सिया निकल आयी। अमीर घरानो के वच्चे छावडी-फरोश वनकर दो तीन आने रोज कमा लेते थे। मुसलमान तो कोई उनसे खरीदता नही था। हा, एक आध आता-जाता हिन्दू खरीदे तो खरीदे। वस। आसपास के वचे हुए मकानो मे सव शरणार्थी ही थे। वे बोरियो और चीथडो से अपने तन को ढके रहते थे। कुछ समय पश्चात् पाकिस्तानियो ने राशन की कुछ व्यवस्था, की। कई मुसलमानो की जवानी यह भी सुनने मे आया कि अव हिन्दू हमारे शरीक है, उन्हे सताया न जाय। पर ये सव कहने की वाते थी।

हमारे मकान के पास एक गुरुद्वारा था। वहा अनेक विधवाए रहती थी जिनमे से कवाइली ओर सिपाही चुन-चुन कर अच्छी स्त्रियो को ले जाते थे। वजीर ने इनकी हिफाजत के लिये यद्यपि कई पहरेदार नियुक्त कर रखे थे किन्तु इस अन्धेर नगरी मे उनकी कौन परवाह करता था? हैरानी यह थी कि नियमित शासन-व्यवस्था कायम होने पर भी यह गुडा-गर्दी वरावर चलती रही।

हमे यहा आये दो दिन बीते थे कि खान आया। बोला, "मैंने तुम्हे बहन समझा था, परन्तु तुम्हे मुझपर भी शक है, जो तुम यहा चोरी-चोरी चली आई। इतना भेद? फिर भी मै तुम्हे बहन कह चुका हू इसीलिये इज्ज़त करता हू। जब तक मै यहा हू जान देकर भी तुम्हे बचाऊगा।" मैंने अपराधी के रूप मे कहा, "भाई, तुम ठीक कहते हो। मै अपनी गलती मानती हू।" इतना कह कर मैंने चाकू की नोक से अपनी अगुली मे से खून निकाला और उसके माथे पर तिलक लगाया। फिर सूत लेकर उसके हाथ मे राखी बाधी और तब उसने मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "सुनो बहन, मेरे कबीले मे दो सौ आदमी हैं। कोई तुम्हे बहन कहेगा, कोई फूफी और कोई मासी। जहा तक होगा, तुम्हे बचायेगे। तुम्हारी हिफाजत हमारी हिफाजत होगी। तुम्हे अब अपना बोझ मुझपर छोड देना चाहिए। क्या तुम बता सकती हो कि तुम्हारा माल किसने लूटा है? मै वह सब ला दूगा।"

"मुझे मालूम है कि मेरा सामान किस किस ने लूटा है। पर मैंने अपनी चीजे वापिस न लेने की प्रतिज्ञा की है। मै फटे हाल गुजारा करूगी परन्तु चीजे नही लूगी। जब मैं अपने हीरे (पति) को वापिस न पा सकी, तब इन काच के टुकडो को वापिस लेकर क्या करूगी।" यह कहते-कहते मैंने उसे शुरू मे आपबीती सुनानी आरम्भ कर दी। जब मै किसी को कान के जेवर देने की बात सुना रही थी तब वह बोला, "बताओ, वह किसे दिया था?" मैंने कहा, "मै नही बता सकती।" उसने हाथ की छडी से छूरा खीचकर कहा, "देखो, मेरे पास यह है। पठान किसी को मारना गुनाह नही समझता। तुम्हे बताना होगा।" मैंने गरदन सामने झुका दी। उसने छूरा फिर गुप्ती मे डाल दिया और कहा, "मत बताओ। मैं समझ लूगा।" नीचे जाकर उसने नानकचन्द से कहा, "तुमने मेरी बहन को यहा पनाह दी है और तुम्हारे लडको ने जेल मे उसकी जान बचाई है। मै वायदा करता हू कि तुम्हे कोई नुकशान नही पहुचेगा। यहा पर अभी बहुत कुछ होगा। हा, तुम बताओ तुम्हारे पास सुना है पिस्तौल है। वह निकाल कर

मुझे दे दो और कुछ गहने भी है वे भी दे दो।" उसने उत्तर दिया, "खान, हमारे पास कुछ नही है। सब कुछ लूट लिया गया है। हम तो दर-दर भटक कर दस दिन बाद इस खाली मकान मे आये है। तुम चाहो तो तलाशी ले सकते हो।" उसने कहा, "मौलवी तुम्हारे लडके की काग्रेसी होने की शिकायत करता है। परन्तु मै अब समझ गया हू।" यह कहकर वह चला गया और जबतक वह वहा रहा बराबर हर प्रकार से हमारी सहायता करता रहा।

: १७ :

कुछ और घटनाएं

तीनो लडकियो के लिए तो कपडे तो मिल गये थे पर बाकी बच्चो के पास कुछ नही था। उनको नगा देख कर मैने जीन के उस टुकडे के कपडे सिलाने का निश्चय किया जो मेरे पति ने बुशशर्ट सिलवाने के लिये दर्जी को दिया था। और जिसे मैने उससे लेकर दान देने को रखा हुआ था। खान ने एक दरजी को बुला भेजा। वह दोनो लडको की सिलवारे काटने लगा। उन दिनो पठानो के भय से हर कोई वहा सिलवार पहनता था। मैने दरजी को रोक कर कहा, "मै नकली मुसलमान नही बनूगी और न बच्चो को बनने दूगी। तुम हिन्दू ढग के पाजामे बनाओ।" उसन ऐसा ही किया। उन कपडो की सिलाई खान ने अपने पास से दी।

एक दिन खान ने मुझे उदास देख कर पूछा, "क्या तुम्हे अपने मालिक की याद आती है, बडी सरकार?" वह कभी-कभी मुझे बडी सरकार कहकर पुकारता था और जब बाहर से आता तो कहता "बडी सरकार! आदाब अर्ज।" मैने कहा, "हा, कभी-कभी यह ध्यान आता है कि निशानी के तौर पर उनका एक कपडा तक मेरे पास नही रहा।" यह सुनकर वह चला गया और थोडी देर के बाद धोबी से मेरे पति की एक पुरानी कमीज ले आया। मैने गद्गद् होकर उसको धन्यवाद दिया और कहा, "अब मै

इसे संभाल कर रखूगी। जब ये लडके अपने बाप के बराबर होगे तब इसे इन्हे पहनाकर कहूगी कि अपने पिता के बलिदान को याद रखते हुए तुम सदा सच्चाई के रास्ते पर चलने की कोशिश करते रहना।"

एक दिन खान मेरे कान का जेवर ले आया। न जाने उसने कैसे उसका पता लगा लिया था। आते ही उसने चमन की मा को मेरे कमरे मे बुलाकर कहा, "तुम मेरी बहन को समझाओ कि वह इसे वापिस ले ले। मैंने उसे बहन कहा है। मैं उसकी चीज दूसरे के पास नही देख सकता।" मुझे उसकी भावना अच्छी तो लगी पर मैं उसकी बात कैसे मान सकती थी। मैंने दृढ स्वर मे जवाब दिया, "हम इस समय दाने-दाने को मोहताज है पर मैं धन के लालच मे अपने को झूठा नही कर सकती। अगर तुम मुझे बहन समझते हो तो यह उसी को वापिस दे दो जिससे लाये हो और वायदा करो कि उसे कुछ कष्ट नही पहुचाओगे।" मैंने देखा कि खान को क्रोध आ रहा था पर उसने नम्र होकर यही कहा, "वायदा करता हू, बहन कि इसे मैं अभी उसे वापिस कर दूगा।"

इन्ही दिनो किसी ने एक दिन श्रीमती मोदी से कहा कि तुम्हारे पति की लाश एक नाले मे पडी है। हमारे तीनो साथी और चमन उसकी तलाश मे निकले। बहुत ढूढने पर वह सचमुच एक नाले मे पाई गई। तब मैंने श्रीमती मोदी से कहा, "हमे उसके दाह-सस्कार का प्रबध करना चाहिये। मैं वजीर को लकडी के लिये लिखती हू। देखू तो वह कितने पानी मे है और उसकी क्या नियत है।" सब लोगो ने मुझसे कहा, "ऐसा मत करो। कही कोई विपत्ति न आ जाय? भला पाकिस्तान मे दाह-सस्कार कौन करने देगा?" मैंने जवाब दिया, "चाहे हम दाह-सस्कार करे या न करे परतु मैं वजीर की नियत जानना चाहती हू।" मैंने वजीर को लिखा और उसने पाच मन लकडी के लिए मन्जूरी दे दी। परन्तु मन्जूरी लेने के बाद भी किसी मे दाह-सस्कार करने की हिम्मत न थी। मैं, श्रीमती मोदी, चमन की माता, तीनो साथी तथा चमनलाल उस जगह गये जहा पर लाश पडी थी। पास ही गगा बह रही थी। चारो पुरुष लाश को उठाकर हमारे पास

ले आये। उसे एक टीन के तख्ते पर रखते देखकर श्रीमती मोदी बिलख-बिलख कर विलाप करने लगी। यद्यपि हत्या को हुए दो माह बीत चुके थे पर लाश बिलकुल ताजा मालम पड रही थी। उसमे से न तो किसी प्रकार की दुर्गन्ध आ रही थी न तन पर का गोश्त कही से सडा-गला था। पैंट उसी तरह लगी हुई थी, कमीज़ और कोट उसी तरह पहना हुआ था। कही कोई अन्तर नही था। केवल एक ओर एक घाव था। चेहरे पर अपूर्व शाति थी।

अब सवाल था कफन का। श्रीमती मोदी ने एक धोती निकाली जो उन्होने धोबी के यहा से मगाकर अपने पति की निशानी के तौर पर रखी थी। उन्होने उसके दो टुकडे किये। एक टुकडे को लाश के ऊपर डाल दिया, दूसरा अपने पास रखा। फिर हमने लाश को जल मे प्रवाहित कर दिया। बाद मे श्री मोदी की मृत्यु का वृत्तान्त इस तरह सुना गया कि जब हमला करने वाले उनकी कोठी के पास पहुचे तो वह, उनकी स्त्री, दो नौकर और कमला घर से शहर की ओर चल दिये किन्तु उनका लडका घर मे ही रह गया। उसकी आयु इक्कीस वर्ष की थी। वह कही छत पर चढ कर दुश्मनो पर बन्दूक से वार कर रहा था। इनकी कोठी शहर से नीची थी। उसमे कुछ दूर जीना चढ कर शहर मे जाना पडता था। जीना चढते समय केवल एक नौकर को छोड बाकी सब को गोली लगी। जैसे-तैसे वह लोग शहर के एक नामी आदमी के घर पहुचे। वह हिन्दू था। उसका मकान काफी बडा था और वहा पर सैकडो परिवार खतरे से बचने के लिए आये हुए थे। वहा पहुचकर श्री मोदी ने सब को बिठाया और स्वय हाथ मे बदूक लेकर चल पडे। मुज-फ्फराबाद मे माकडी नामक एक जगह है जहा पर उनका एक मुसलमान दुश्मन रहता था। उसका सडक बनाने का कोई बिल उन्होने पास नही किया था। मौत उन्हे धकेल कर वही ले गई। जब उन लोगो ने इन्हे देखा तो कत्ल कर दिया और लाश को दफना दिया। फिर कुछ दिनो बाद लाश को निकाल कर नाले मे फेक दिया।

श्रीमती मोदी तथा उनके साथी उस मकान मे दो-तीन दिन रहे।

सुना गया कि उस मकान मे से कुछ लोगो ने हमला करनेवालो का मुकाबला भी किया था परन्तु अन्त मे सब पकड़े गये । कहते हैं कि वहा पर किसी को पानी तक न मिला, विवश होकर स्त्रियो ने बच्चो को मूत्र पिलाया।

इन दिनो पाकिस्तानी एक और चाल चल रहे थे। उन्होने सब सरकारी दफ्तरो और जमीनो तथा हिन्दुओ की सब जमीनो ओर बागो को नीलाम करना शुरू कर दिया। जो कुछ हिन्दू किसी तरह बचे हुए थे, वे अपने सामने ही अपनी जमीनो और बागो को नीलाम होते देख रहे थे। पर बोल नही सकते थे। मैंने कई मुसलमान भाइयो से कहा, "तुम अभी इन्हे मत खरीदो।" परन्तु उन्होने मेरी बात न मानी। इस चाल से पाकिस्तान को काफी रुपया मिला।

इन सब विपदाओ के बीच मुझे विमल की एक बात कभी नही भूल सकती। वह हर समय फौजी बाते पूछता रहता था। उसने अपनी उम्रवाले लडको की एक बाल-सेना भी बना ली थी। एक तीर-कमान अपने गले में डाल कर वह दिन भर उन्हे कुछ सिखाता रहता था। जब कभी वह सुनता कि कबाइलियो का झुंड गली से निकल रहा है तो झट खिडकी से झाकने लगता। उसने कभी छिपने का नाम नही लिया। अपने साथियो से अक्सर कहता, "छिपना मत, नही तो तुम्हार नाम कायरो मे लिख दूगा।" एक दिन हमारे तीनो साथियो ने उससे यह शर्त लगाई कि अगर तुम इतने गिलास पानी पियो और इतनी रोटिया खाओ तो तुम पठानो को जीत सकते हो। उस लडके ने कई गिलास पानी पिया और कई मोटी-मोटी रोटिया खाई जो एक सात साल का बच्चा चार बार मे भी नही खा सकता। सारा दिन उसे इस प्रकार दौड-धूप करते देखकर मुझे उसपर बडा तरस आता था। परन्तु न जाने उसके इस फौजी खेल मे कितनी भावी आशाए छिपी हुई थी।

एक दिन रेंजर साहब बदूक उठाये और गले में कारतूसो की माला पहने फिर आ पहुचे। आते ही मुझसे कहने लगे, "मुझे तुम्हारी यह हालत देखकर तरस आता है। तुम कितनी तकलीफ उठा रही हो ? मैं तुम्हारे साथ

कुछ नेकी करना चाहता हू क्योंकि मेरा एक दोस्त तुम्हारे पति का दोस्त था। क्या तुम मेरे साथ चलने को तैयार हो ? तुम चलो, अपने बच्चो को तथा कोई और जवान लडकिया हो तो उन्हे भी ले चलो ताकि वह सब इस मुसीबत से छूट जाय। तुम्हे किसी से डरने की जरूरत नही है। देखो मेरे पास २०० कारतूस हैं और १५० रु० भी है।" वह नही जानता था कि उसकी बातो से मैंने क्या कुछ समझ लिया है। मैंने उसके चेहरे पर एक गहरी नजर डाली। उसने सिर नीचा कर लिया। मैंने कहा, "मै मजबूर हू। मै आज आपके साथ नही जा सकती। क्योंकि आज रात ही मैंने एक स्वप्न देखा है। कही से आकर किसी फकीर मर्द ने मुझसे कहा कि तीन दिन तक यहा से बाहर मत जाना। मै तो इन बातो पर विश्वास करती हू। इसलिए मैं तीन दिन तक तो कही नही जा सकती। हा, शायद उसके बाद आपके साथ चल सकू।" यह कहकर मैंने उसके शैतानी चेहरे पर फिर एक नज़र डाली। इस बार भी वह मेरी नजर से नज़र नही मिला सका। गर्दन नीची किए हुए ही उसने कहा, "शायद आप मुझपर भरोसा नही करती। मैं जो कहता हू वह आपके भले के लिए कह रहा हू। चाहे कुछ भी हो मैं रात को लारी लाऊगा और आपको चलना होगा।" मैंने कहा "मै आपकी हमदर्दी के लिए आपको धन्यवाद देती हू परन्तु मैं जा नही सकती।" वह कहने लगा, "आप वहम की इन बातो पर क्यो भरोसा करती है ? मैं रात को लारी लाऊगा।" मैंने कुछ उत्तर नही दिया। देती भी क्या ? वहा तो इनका राज्य था। वह चाहता तो बलात् मुझे पकड कर ले जा सकता था। जाते-जाते वह यह भी कह गया, "मेरी लारिया दोमेल मे है और मै डाक बगले मे ठहरा हुआ हू।" उसके जाने के बाद हमारे जहाजो ने कुछ बम दोमेल पर फेके। न जाने उसका और उसकी लारियो का क्या हुआ। वह फिर नही आया।"

एक दिन बातो-बातो मे खान मुझसे कहने लगा, "बहन ! तुम्हे और तुम्हारे बच्चो को बिलखते देख कर मेरा मन चाहता है कि उस आदमी की तलाश करू जिसने मेहता साहब को मारा है। उसे मैं मारू ताकि उसकी

औरत और बच्चे ऐसे ही तडपे जैसे तुम और तुम्हारे बच्चे तडप रहे है।" मैंने उससे कहा, "क्या मैं उसका घर तबाह करके सुखी हो सकूगी और क्या मेरा दु:ख कम हो जावेगा। नही, मैं तुम्हे ऐसा करने को कभी नही कहूगी। मै भगवान् पर भरोसा करती हू वही अच्छे-बुरे काम देखता है। और वही सजा देता है। या तो हम भगवान् को छोड दे और स्वतत्र बन जाये और या फिर उसे माने और उसके सिद्धान्तो पर चले।"

वह चुप हो गया। उसके पास इसका कोई उत्तर न था।

: १८ :

वह हत्याकांड

एक दिन कबाइली अच्छे-अच्छे नवयुवको को राशन के बहाने बुला कर ले गये और हस्पताल मे बद कर दिया। जब लोग देर तक वापिस नही लौटे तो उनके रिश्तेदार उनकी तलाश मे निकले। उन लोगो ने इनको भी बन्द कर दिया। नानकचद को भी बुलाया गया लेकिन जब वह जा रहा था तो उसे रास्ते मे खान मिला। उसने नानकचद को घर वापिस लौटा दिया।

दूसरे दिन शहर मे बडी हलचल मची। सब भय से काप रहे थे। सबके मुह सूखे हुए थे। पूछने पर पता चला कि जो साठ हिन्दू कल हस्पताल मे बद किए गए थे, रात को उन सबको बडी बेदर्दी से कत्ल कर दिया। सुना गया कि उन्हे रात को दस बजे हस्पताल से बाहर निकाला गया और हमारी कोठी मे लाकर एक लाइन मे खडा किया गया। उसके बाद उन्होने एक-एक आदमी को बुलाया, उसके कपडे उतारे और कलमा पढने पर मजबूर किया। जब वह कलमा पढ चुका तो एक पठान औरत ने, जो उन दिनो यहा आई हुई थी, छुरा हाथ मे लिया और उस जिन्दा आदमी का कलेजा बाहर निकाल कर उसे पहाडी से धकेल दिया। इसी तरह उन्होने उन सबको तडपा-तडपा कर मार डाला। बाद मे यह दर्दनाक और वीभत्स समाचार हमे कई शरीफ

मुसलमानो ने सुनाया। सबको खतरा था। क्या मालूम किसको कब कुत्ते की मौत मरना पडे। उन अभागे व्यक्तियो मे एक चमन के घर रहता था। उसकी स्त्री पति की लाश भी देख आई थी।

दोपहर को जब खान मेरे पास आया तब मैने उससे इस घटना का जिक्र किया। वह कहने लगा, "यह तो बिलकुल झूठ है। भला कभी ऐसा हो सकता है कि हम पनाह मे आये हुए लोगो को मारे।" इसपर मैने उसे वह स्त्री दिखाई जो अपने पति की लाश देख आई थी। वह फिर भी बोला, "गलत है, तुम अपने नौकर को मेरे साथ भेजो। मै देखू तो लाश कहा है। यह लोग झूठी अफवाहे उडाते है।" मैने कहा, "तुम्हारे साथ मेरा नौकर जा सकता है। मै तो तुम्हारा यकीन करती हू परन्तु और लोग कैसे करे? वह तो लाश देख कर आये है।" वह उठा और कहने लगा कि मै शाम को आऊगा, तब तुम्हारे नोकर को ले जाऊगा। शाम को वह आया और मेरे दोनो साथियो ओम् और जोधा को ले गया। बाजार मे उन्हे एक दुकान पर बैठाया और यह कह गया कि तुम बैठो, मै नमाज पढ कर आता हू। नमाज के बाद वह आया और उन दोनो को हमारी कोठी के नीचे वाली पहाडी पर ले गया। उनसे कहने लगा, "बताओ कहा है वह लाश?" एक जगह खून के धब्बे देखे तो कहने लगा, "हा, यह खून है जरूर परन्तु क्या मालूम कि आदमी का है या जानवर का। तुम लोग ऐसे ही माताजी को कहते रहते हो कि आज यह हुआ, कल वह होगा। अब जाकर उनसे यही कहना कि हमने वहा कुछ नही देखा है।' वे दोनो चुप रहे। भय के कारण उन्हे कुछ और पूछने की हिम्मत नही हुई।

उन दोनो को खान मेरे पास लाया और कहने लगा, "पूछिये, क्या इन्होने वहा पर कही कोई लाश देखी है?" दोनो ने बताया, "हमे वहा कोई लाश नजर नही आई।" वह फिर बोला, "वहा तो खून के धब्बो के सिवाय और कुछ नही है। वह खून किसका है, किसी जानवर का या आदमी का, यह किसी को पता नही। मै सवेरे जाकर देखूगा। तब आपको बतलाऊगा। मै अन्धेरे में खून की पहचान नही कर सका।"

उसके चले जाने के बाद मैंने दोनो साथियो से पूछा "क्या तुमने वहा कुछ भी नही देखा।" वह कहने लगे कि लाश तो वहा पर कोई नही थी, परन्तु जमीन ताजी खोदी हुई नजर आ रही थी और ऐसा मालूम होता था कि लाश मिट्टी मे दवा दी गई है। यह भी मालूम देता था कि कोई चीज वहा से नीचे फेंकी गई है। इधर-उधर बहुत से कपडे बिखरे पडे थे। एक जगह पर गोश्त के कुछ टुकडे पडे हुए थे। मैंने कहा, "तो तुमने उसके सामने क्यो नही कहा कि हमने यह सब देखा था। मैंने तुम्हे किस लिये भेजा था ?"

वे कहने लगे, "हम क्या कहते, हमे उससे कुछ भी पूछते भय लग रहा था और फिर उसने हमे सब कुछ इस तरीके से दिखाया कि हमे सवाल पूछने का अवसर ही नही मिला। कहने लगा, माताजी के सामने कुछ मत कहना। हम नही चाहते कि उनका दिल दुखे या उन्हे कोई कष्ट पहुचे।" बाद मे मुझे यह पता लगा कि सचमुच वहा लाश दबाई गई थी। मेरी समझ मे यह बात नही आई कि खान ने यह भेद गुप्त क्यो रखा। लाशें दफनाई क्यों और फिर मेरे साथियो को वह दिखाने क्यो ले गया।

दूसरे दिन सवेरे खान फिर आया और बोला, "मैं खून देखने गया था, अभी वही से आ रहा हू। वह एक आदमी का खून है, जिसको यहा के वजीर ने मरवाया हे। सुना है कि काश्मीर के प्रधान मत्री शेख मुहम्मद अब्दुल्ला ने उसके सारे परिवार को कैद कर रखा है और उन्हे बडी तकलीफ दे रहा है। इसी कारण यह वजीर यहा पर हिन्दुओ से उसका बदला ले रहा है और उन्हे मरवा रहा है।" मैंने कहा, "मैं यह नही मानती कि उसका परिवार श्रीनगर मे कैद हो, तो यहा के हिन्दुओ से उसका बदला लिया जाय। यह तो बेसिर-पैर की बात है।" वह फिर भी यही बोला, "चूकि महाराजा काश्मीर के कहने पर शेख मुहम्मद अब्दुल्ला यह सब कर रहा है, तभी यहा पर हिन्दू सताये जा रहे है।"

इस दुर्घटना का यहा बडा असर पडा और कई दिन तक लोगो मे इस बात की चर्चा रही। अन्त मे इसका रहस्य खुला कि यह सब डाक्टर और

उसकी पार्टी की कार्रवाही थी और कुछ स्थानीय मुसलमान भी इस हरकत मे शामिल थे।

इसके कुछ दिन बाद एक दिन फिर हिन्दुओ मे सख्त बेचैनी फैली। वे लोग हिन्दुओ को मस्जिदो मे ले जाने लगे और उन्हे मुसलमान बनने पर मजबूर करने लगे। वे स्त्री-बच्चो सबको कलमा पढाने और सिखाने लगे। आसपास के गावो से भी मुसलमानो के पच आए हुए थे। वे हिन्दुओ को, जो उनके गावो से भागे हुए थे, ले जा रहे थे। वे शहर के लोगो को भी हमदर्दी दिखाकर गाव मे ले जाते थे और वहा पर उन्हे मुसलमान बना कर रखते थे। नानकचन्द को भी उसका एक मित्र गाव चलने के लिए मजबूर करने लगा। वे सब तैयार भी हो गए, पर इतने मे खान आया और उसने उन सब को रोका। कहने लगा, "तुम मत जाना, तुम यही रहो, यहा पर तुम्हे कोई तकलीफ नही होगी।" वे रुक गए परन्तु उनकी बेचैनी कम नही हुई। सारे शहर मे यह चर्चा थी कि जो कोई खुशी से इस्लाम कबूल करेगा, वही पाकिस्तान मे रह सकेगा। उसे उसकी छीनी हुई जमीन भी वापस मिल जायगी। हमारे डेरे पर भी कुछ लोग आये और सब को डरा-धमका कर ले जाने लगे। मेरी बडी लडकी वीणा और बडा लडका सुरेश मेरे पास आए और कहने लगे, "माताजी! पापा ने झूठ कहना पसन्द नही किया था कि वे मुसलमान है, किन्तु क्या अब हमे मुसलमान बनना पडेगा?" मैने बच्चो को अपने पास बैठाया और पूछा, "क्या तुम मौत से डरते हो?" वे कहने लगे, "नही।"

"तो फिर तुम्हे डर किस बात का है। जो मौत से नही डरते, उन्हे घबराने की क्या जरूरत। हम नही जायेगे," मै बोली।

उस घर के सब लोग जाने को राजी हुए। मैने ओम् से कहा, "भाई, अगर तुम मौत से डरते हो तो जाओ, मै तुम्हे जान-बूझकर मौत के मुह मे नही धकेलना चाहती, परन्तु मै और मेरे बच्चे नही जायेगे। मै नकली मुसलमान नही बनूगी।" ओम् ने भी जाने से इकार कर दिया। कितना निडर था वह, एक तरफ मौत थी—दूसरी तरफ मै। परन्तु उसे मेरा साथ

: १९ :

खान का परिचय

एक दिन खान मेरे पास बैठा हुआ था, कि एक पुलिस अफसर वहा आया। खान को देखते ही उसका रग बदल गया। वह कभी-कभी मेरे पास आया करता था और पूछा करता था कि कोई तकलीफ तो नही है खान को देखकर वह चला गया। और जब खान मेरे पास से चला गया, तो वह अफसर मेरे पास आकर बोला, "क्या आप जानती है कि यह कौन है और कितना खतरनाक है। आपको हर एक के सामने नही आना चाहिए और हर किसी पर भरोसा नही करना चाहिए। कुछ दिन पहले जो आपकी कोठी मे हिन्दुओ को मारा गया था, वह सब इसी की कार्रवाई थी।"

मै उसकी बातो का मतलब समझ गई। मैने उससे कहा, "तुम कहते हो कि मुझे हर एक के सामने नही आना चाहिए। पर तुमने हमारी हिफाजत का कौन-सा प्रबन्ध किया है? दिन मे कितनी मरतबा हमे और लडकियो को तहखाने मे छिपना पडता है। वहा हमने घास इसलिए रखी है कि समय पडने पर लडकियो को आग की शरण मिल सके। देखिये, हमारे घर के सामने की धर्मशाला वाले कैम्प मे औरते है। कबाइली जिसको चाहते है जबरदस्ती घसीट कर ले जाते है। मै खान का एहसान कभी नही भूलूगी। इसने सच्चे दिल से मेरी सहायता की है। आपका भी धन्यवाद करती हू। आपने भी मुझे नसीहत दी है।"

असल मे वह खान को देखकर डर गया था। उन दिनो उनमे कुछ फूट पड गई थी। जिन लोगो को मस्जिद मे मुसलमान बनाया गया था, जब उनसे रिश्ते मागे जाने लगे तब उन्हे अपनी गलतियो का पता चला। कुछ थोडी-सी शादिया हुई भी। जहा तक मैने सुना और देखा, अन्य स्थानो की तरह मुजफ्फराबाद के मुसलमानो ने भी हिन्दू लडकियो और स्त्रियो की ओर आख उठाकर भी नही देखा। हा, पाकिस्तान से आये हुए कबाइलियो और फौजियो ने बडे अत्याचार किये।

खान मुझे कागज दिखा कर कहने लगा, "देखो लाल स्याही से लिखा है। इसका मतलब है कि पठान के खून से लिखा गया है। जो इसका हुक्म तोडेगा उसे पूरी सजा मिलेगी। मेरे पीछे यह कागज़ तुम्हारी हिफाजत करेगा। यह कहकर वह बाहर चला गया और कागज को दरवाजे के ऊपर—ऊची जगह पर चिपका गया। इस कागज पर उसका पता देख कर हमे मालूम हुआ कि यह खान कोई मामूली आदमी नही है।

वह चला गया और उसके जाने के बाद हमे पता चला कि डाक्टर और उसकी पार्टी को उन साठ आदमियो के कत्ल के सम्बन्ध मे जवाब देने के लिए वापस बुलाया गया है। खान के जाने के एक महीने पश्चात् उसका एक पत्र मुझे मिला, जो पुलिस ने खोल कर मेरे पास भेजा। उसमे लिखा था—

हमशीरा कृष्णा,

आदाब अर्ज। मै घर पहुच गया हू, लेकिन मेरा ध्यान तुम और तुम्हारे बच्चो की तरफ लगा है। मै तुम्हारे लिये खुदा से दुआ मागता हू कि वह हर तरह तुम्हारी मदद करे।

तुम्हारा भाई,
आगा जान खान
बन्नू, कोहाट।

मैने उसके पत्र का उत्तर दिया, परन्तु उसका कोई जवाब मेरे पास नही आया। शायद हुकूमत की तरफ से उसके पास पत्र लिखना मना था। जो इश्तहार उसने हमारे दरवाजे पर चिपकाया था, उससे हमे काफी सहायता मिली। आम आदमी को अन्दर आने की हिम्मत नही होती थी।

मेरे मुजफ्फराबाद छोडने के बाद भी वह इश्तहार वही चिपका रहा। कई लडकियो को इन जालिमो के हाथ मे बचा कर वहा छिपाया गया। ये सब श्री नानकचन्द के साथ बचकर हिन्दुस्तान पहुची।

: २०

पाकिस्तान के आंसू

कभी-कभी वहा पाकिस्तान की ओर से हिंदुओ के लिए बडी हमदर्दी का दिखावा होता था। इन दिनो रावलपिंडी से शरणार्थियो की सहायता करने के लिए कालिजो के काफी लडके आये हुए थे। पुराने कम्बल और कपडे बाट रहे थे। एक दिन पाकिस्तान के लोगो ने गुड की रोटियो की कई पेटिया भेजी और लडको ने इन्हे हर गली मे तकसीम किया। किसी को आधी और किसी को पूरी मिली। बच्चे, बूढे, स्त्रिया तथा बडे-बडे इज्जतदार आदमी किस बेताबी से भूखे भिखारियो की तरह उनपर टूट रहे थे, यह देखते ही बनता था। भूख की ज्वाला ने उन सब को बेहाल कर दिया था। रोटिया बटती देख कर मेरा नौकर ओम् भी वहा चला गया। उसे लालच ने आ घेरा और कुछ लडको ने उसे पहचान कर पाच रोटिया दे दी। वह प्रसन्नातापूर्वक लेकर मेरे पास आया, हसकर कहने लगा, "माताजी, मै बच्चो के लिए मीठी रोटिया लाया हू।" रोटिया देखकर मेरा खून खोलने लगा। मैने कहा, "ओम्! यह तुमने क्या किया? बिना मेरे पूछे रोटिया ले आये। क्या तुम्हे बहुत भूख लग रही थी। क्या तुम मेरी बात भूल गये? जाओ, यह रोटिया वापस लौटा आओ। मै जानती हू कि खुराक की कमी है। पर खुराक की कमी से क्या कोई मरता है। देखो मै केवल एक समय खाती हू और वह भी भरपेट नही, पर इससे क्या मेरा जीवन समाप्त हो चला है? जितने लोग यहा है, मुझे उन सबसे अपने बच्चो और तुम लोगो की सेहत अच्छी जान पडती है। इसलिए जो भी काम करो मेरी और अपनी इज्जत का ध्यान रख कर करो।" वह कहने लगा, "अब हमारी क्या इज्जत है, माताजी? हम दूसरो के टुकडो पर पल रहे है।" मैने कहा, "नही ऐसा नही, है। हमारी इज्जत आज भी उतनी ही है, जितनी कि पहले थी और अन्त तक उतनी ही रहेगी। हम उनके कैदी है और कैदी की हैसियत से उनका अन्न खाते है। उससे ज्यादा हम कुछ नही लेते और न ही हम कोई ऐसा काम

करते है, जिससे हमे नीचा देखना पडे।" मेरी बात सुनकर उन लोगो ने अपनी गलती मान ली। मुझे इससे बडी प्रसन्नता हुई। मुझे अक्सर यह ध्यान रहता था कि यह लोग क्या कार्रवाई करते है। एक दिन मैंने जोधा और ओम् से कहा, "हमारी कोठी से थोडी-सी सब्जी तो ले आओ। शायद अभी वहा कुछ साग वगरह मिल जाये और देख आना कि वहा आजकल कौन उतरा है और वे लोग क्या कर रहे है ?" वे दोनो वहा जाकर साग चुनने लगे। जब वह चुन रहे थे, तो एक सिपाही उनके पास आया। वह बलोची रेजीमेट का था। उसने उनसे पूछा, "तुम यहा क्यो आये हो और तुम्हे किसने भेजा है ?" उन्होने कहा, "यह कोठी यहा के वजीर वजारत की थी। उनकी पत्नी ने हमे यहा भेजा है। यह सब्जी वजीर साहब के हाथ की लगाई हुई है।" वह पूछने लगा, "उसका कितना परिवार है, कितनी लडकिया है और उनकी कितनी आयु है।" जवाब मे इन्होने कहा, "लडकिया तो छोटी है।" इसपर उसने कहा, "खबरदार अब आगे से यहा आने की कोशिश मत करना। नही तो गोली से उडा दिये जाओगे।" यह कहकर वह अदर चला गया। इसी बीच मे ओम् भी इस कोठी के चौकीदार से, जो हमारे समय मे भी वहा पर चौकीदार था, बाते करने के लिए चला गया। इतने मे वह सिपाही वापस लौट आया और जोधा से कहने लगा, "तुम्हे हमारा अफसर बुलाता है, जल्दी चलो।" जोधा घबडा कर उसके साथ चल पडा। अफसर ने भी वही बाते पूछी कि तुम्हारी मालिकन की क्या आयु है ? उसकी कितनी लडकिया है ? क्या उम्र है उनकी ? और तुम यहा पर बिना हमारे हुक्म के क्यो आये ? तुम्हारा दूसरा साथी कहा गया ? क्या तुमने यहा पर कुछ धन गाडा है ? जिसे लेने के लिए आये हो।" जोधा काप रहा था। ओम् को यहा-वहा बहुत ढूढा, पर वह न मिला। अब वे जोधा से कहने लगे, "तुम अपने साथी को पेश करो, नही तो हम तुम्हे गोली से उडा देगे।" उसने कहा, "मै उसे घर जाकर ले आता हू।" पर वह उसे अकेला आने नही देते थे। आखिर उन्होने उसके साथ एक सिपाही भेजा। वे दोनो हमारे डेरे पर आये। सिपाही नीचे आगन मे धूनी के पास, जो यहा पर हर समय जलती

रहती थी, बैठ गया। वहा चमन की मा और बहन भी बैठी हुई थी। एक अनजान सिपाही को अन्दर आते देखकर वे बहुत घबराई परन्तु धीरज रख कर उससे पूछा, "तुम यहा क्यो आये हो ?" वह जोधा की ओर देख कर कहने लगा, "इस आदमी ने हमे धोखा दिया है। अपने साथी को इसने यहा पर छिपा रखा है, हम उसे लेने आये है। जब तक वह नही मिलेगा मै यही बैठा रहूगा।" ओम् घर पर नही था। जोधा भी वही पर सिपाही के साथ बैठा रहा। जब ओम् घटे भर तक नही आया, तो चमन की मा ने कहा, "तुम यहा से चले जाओ। जब वह आयेगा, तो हम उसे वही भेज देगे।" परन्तु वह उठने का नाम नही लेता था। वह सब घबराये, न जाने यह यहा क्या देखने आया है। न जाने अब क्या गुल खिलता है। जब वह वहा से नही उठा, तब जोधा मेरे पास ऊपर आया। सारी बात मुझे बताई। वहा पर चमनलाल, उसका पिता और तीन-चार आदमी और भी बैठे थे। सब लोग यह सुनकर चिंतित हो गये। चमन जरा तेज होकर बोला, "तुमने दो आने की सब्जी के लिए यह क्या नया बखेडा मोल ले लिया है।" गलती स्पष्ट मेरी थी। पर साग का तो बहाना था। वास्तव मे मै चुप नही रह सकती थी। जब चार दिन शांति से गुजर जाते थे, तो नई बात देखने को मन करता था। मै उठी और नीचे गई। सिपाही से पूछा, "तुम कैसे आये हो ?" उसने कहा, "दो आदमी हमारे यहा सब्जी लेने आये थे। हमारे रोकने पर एक को इसने भगा दिया। जब तक वह आदमी हमे नही मिलेगा, तब तक हम यहा से नही जायेगे।" मैने कहा, "भाई, इसमे गलती मेरी है। मैने ही इन्हे सब्जी लेने बगीचे मे भेजा था। यह बगीचा कभी हमारा था। दूसरा आदमी कही भागा नही है, यही कही पर है, आ जायेगा। तुम फिजूल यहा बैठ कर क्यो वक्त बरबाद करते हो। जाओ, अपने अफसर को कह दो कि जब वह आदमी आ जायेगा, मै भेज दूगी। यह घर मेरा नही है। ये लोग यहा किसी गैर का आना पसन्द नही करते।" वह उठा और चला गया। बाहर निकलते ही ओम् उसे दरवाजे पर मिल गया। इसपर वह दोनो को अपने अफसर के पास ले गया। उसने दोनो को खूब धमकाया और कहा, "फिर कभी इस तरफ आने

की कोशिश मत करना। इस वार मैं माफ करता हू। अगर दूसरी बार यहा आये, तो गोली से उडा दिये जाओगे।" यह कह उन्हें वापस भेज दिया। प्रभु ने उन्हे मौत के मुह से बचा दिया।

हमारे साथ ही गुरुद्वारे मे हिंदुओ का एक बडा भारी कैंप था। वहा पर प्रति दिन गाव या शहर के मुसलमान आकर नवजवान स्त्रियो को विवाह करने पर मजबूर करते थे। तब सब लोगो ने मिलकर मशविरा किया और कुछ लडकियो की शादी वही कैंप के कुछ लडको के साथ कर दी। हालाकि वह लडके शादी के काबिल नही थे, पर जालिमो को यह बताने के लिए कि ये सब विवाहित हैं, ऐसा करना पडा। शिवदयाल ने भी एक विधवा से शादी कर ली। उसकी यह हरकत मुझे पसद नहीं आई। क्योकि इसकी पहली स्त्री श्रीनगर मे थी। वह कहने लगा, "अगर मैं इस लडकी को बचा सकता हू, तो मैं शादी कर लूगा। नही तो इसे कोई बदमाश ले जायेगा।" उसने शादी की और हमारी पार्टी से अलग होकर रहने लगा। उसी गुरुद्वारे मे ग्रथ साहब के पन्ने इधर-उधर बिखरे हुए थे। चमन की मा ने उन्हे इकट्ठा किया और बाद मे बडी कठिनता से कृष्णगगा के अर्पण कर आईं।

हमारे साथ ही कैम्प मे एक स्त्री, जिसके पति का कुछ पता नही था, कही दूसरे सज्जन के यहा एक विवाह मे सम्मिलित होने को आई थी। उसके साथ एक बच्चा था और वह अपने एक रिश्तेदार के साथ रह रही थी। वे उसे मजबूर कर रहे थे कि वह किसी मुसलमान से शादी कर ले। वे उसे खाना नही दे सकेगे ? वह कई दिन से भूखी थी। वह हमारे पास आई और अपनी दर्द भरी कहानी सुना कर कहने लगी, "मैं भूखी रह कर जान दे दूगी, परन्तु मुसलमान से शादी नही करूगी। मेरे रिश्तेदार मुझे एक मुसलमान से शादी करने पर मजबूर करते हैं। न जाने इसके बदले मे वे उससे रुपया या अनाज, क्या ले रहे है।" मैने उससे कहा, "तुम मजबूत बनी रहो, तुम्हारे साथ कोई जबर्दस्ती नही कर सकता। रही खाने की बात, सो सुबह का खाना थोडा-सा हमारे यहा से ले जाया करो। हम ज्यादा नही दे सकते हैं।"

जब तक हम मुजफ्फराबाद मे रहे एक समय का खाना, जो कुछ भी दे सकते, उसे देते रहे। उन दिनो हमे अनाज की कुछ खास दिक्कत नही थी। वजीर ने हमारे लिए स्पेशल राशन मजूर कर दिया था। घी और थोडा-सा साबुन भी मिल रहा था।

एक दिन चार बजे के करीब दरवाजा खटखटाने की आवाज आई और गली मे बडी हलचल मची। दरवाजा खोला तो देखते क्या है कि बीस-तीस वर्दीपोश सिपाही, कुछ फौज के अफसर-ब्रिगेडियर वगैरह, उनके साथ वहा के वजीर वजारत और पुलिस सुपरिन्टेडेट सब है। वे लोग अन्दर दाखिल हुए और घरवालो से मेरे बारे मे पूछने लगे। "वह कहा है?" चमन उन अफसरो को मेरे कमरे मे ले आया। उस समय वहा एक मिट्टी के दिये की धुधली-सी रोशनी हो रही थी। कई दिन के बाद आज हमने यह दिया जलाया था। मेरे दोनो बच्चे मेरे पास थे। मैने उनसे कहा, "अब शायद तुम्हे भी अपनी बहनो के लिए मरना पडे।" इस पर मेरा बडा लडका सुरेश कहने लगा, "माताजी, एक को तो पापा के खान्दान के नाम के लिए जिंदा रहने दो।" मैने उसे डाटा, 'तुम कायर क्यो बन रहे हो? कायर बन कर तुम खान्दान का नाम डुबो सकते हो, रोशन नही कर सकते।" वह कहने लगा, "मै अपने लिए नही कह रहा हू, माताजी। दो मे से एक रहे।"

सबने आकर मुझे सलाम किया। मैने उनसे कहा, "भाई, मै रोज की दिक्कतो से तग आ गई हू, आप एक मरतबा ही हम सबको क्यो नही खत्म कर देते?' इसपर वे सब कहने लगे, "आप घबरा क्यो रही है? हम आपकी मदद करने आये है। हम चाहते है कि आप रावलपिडी जाकर रहे। वही पर आपका सब इतिजाम हो जायेगा।" मैने कहा, "मै तो आपकी कैदी ह, एक कैदी की हैसियत से आप जहा-कही भी रखे, रह सकती हू।" उनमे से एक अफसर बोला, "क्या तुम हिदुस्तान जाना चाहती हो?" मैने कहा, "मै अभी कही नही जाऊगी। यही रहूगी।" वह कहने लगे, "हमने तुम्हारे लिये लारियो का इतिजाम किया था, परन्तु तुम लोग तो किसी पर विश्वास नही करते हो, हम क्या करे?" और वे चले गये।

२१

मुज़फ्फ़राबाद ! अलविदा

एक दिन का जिक्र है। शहर में किसी के स्वागत की तैयारियां हो रही थी। सुनते थे कि कोई नेता आनेवाला है। था भी ऐसा ही। जम्मू का रहने वाला चौधरी अब्दुल हमीद आनेवाला था। वह अब पाकिस्तान में रहने लगा था। गांव-गांव से लोगों को इकट्ठा किया जा रहा था। चौधरी साहब आये। बड़ा समारोह हुआ और उन्होंने बड़े भाषण दिये। उस दिन प्रातःकाल जब मैं नींद से जागी, तो मेरा मन बहुत ही उदास हो रहा था। मैं नानकचंद के पास गई और धूनी के पास बैठकर उससे बातें करने लगी। मैंने कहा, "ऐसा जान पड़ता है कि मुझे अब यहां से जाना पड़ेगा। न जाने अभी किन-किन कठिनाइयों का सामना करना बाकी है।" यह कहते-कहते मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। वह हैरान होकर कहने लगा, "कहां जा रही हैं आप?" मैंने कहा, "मैं नहीं जानती, परन्तु मेरे अन्दर की आवाज मुझे बता रही है कि मैं शीघ्र ही मुजफ्फराबाद छोड़ूंगी।"

परन्तु तब भी यह कोई नहीं जानता था कि हम आज ही मुजफ्फराबाद छोड़ना पड़ेगा। हम लोग खाना खाकर बैठे ही थे कि बहुत-से लोगों के साथ चौधरी अब्दुलहमीद साहब मुझसे मिलने के लिए आये। उनके साथ बहुत से अफसर थे और कुछ स्थानीय आदमी भी थे। लद्दाख घाटी के रहनेवाले एक काचरू अहम्मद शाह भी उनके साथ थे। पहले वहां पर वह रियासत की ओर से माल अफसर थे। गड़बड़ होने के बाद उन्होंने अपने जिम्मे कुछ काम नहीं लिया था। आजकल यह फिर काश्मीर में माल का काम कर रहे थे और दुर्रानी भी इनके साथ था, जिसका जिक्र मैं पहले भी कर चुकी हूं। आते ही चौधरी साहब ने मेहता साहब के लिए बड़ा अफसोस जाहिर किया। मैंने कहा, "चौधरी साहब! आप अफसोस किस बात का कर रहे हैं? वह तो अमर हैं। आप मुझे मेरे पति के इस शानदार बलिदान पर मुबारकबाद दीजिये।"

उसने कहा, "आपको मुबारिक हो।" मैंने उनको धन्यवाद दिया। वह कहने लगा, "अगर मेहता साहब ने मुझे पिछले दिनो रियासत मे दाखिल होने से न रोका होता, तो मेरे बच्चे जम्मू मे कत्ल होने से बच जाते। लेकिन मेरे दोस्त होते हुए भी उन्होने मुझे रियासत मे दाखिल नही होने दिया।" मैंने कहा, "चोधरी साहब, मुझे आपके बच्चो के कत्ल होने का बहुत ही खेद है। न जाने लोग क्यो पागल हो गये है। रहे मेहता साहब, वे तो राज्य के सेवक थे। उन्होने जो किया, राज्य की हिदायत के अनुसार किया। आपके स्थान पर उनका अपना लडका होता, तो भी वे ऐसा ही करते।' "आपकी सब बाते हमने सुनी हैं।" वह बोला, "और वही बाते हमे यहा तक खीच लाई है। बताइये, मैं आपकी क्या मदद कर सकता हू ?" काचरु अहमद शाह बोला, "यह एक अच्छे खान्दान से ताल्लुक रखती है। आप तो शायद इनके पिता को भी जानते होगे ?" उसने फिर मेरे पिता का नाम लिया। चौधरी कहने लगा, "मैं आज ही यहा से जा रहा हू, अगर आप मेरा यकीन करे, तो मै आप और आपके बच्चो को जम्मू की सीमा तक पहुचा आऊगा। वहा से हम आपके बदले मे अपने कुछ आदमी लेगे, जो वहा पर फसे हुये है।"

मै चुप रही। फिर वह कहने लगा, "आपको किसी का तो यकीन करना ही चाहिये।" इतने मे दुर्रानी कहने लगा, "बहन जी, मै भी तो साथ हूं। चलिये आप। आप मे और मेरी बहन मे क्या कोई फर्क है। जैसी मेरी बहन वैसी आप।" उसकी बहन मेरी सहेली थी, यह बात सही थी। मैंने कहा, "मै चलती हू। मुझे सबपर विश्वास है। इन्सान से बढकर भगवान् पर। जैसे वह चलायेगा, चलूगी। यहा भी वही साथ है, वहा भी वही साथ रहेगा। मेरे साथ दो नौकर और श्रीमती मोदी भी है। इन्हे भी साथ ले जाना होगा। इस पर चौधरी साहब बोले, "सब तो नही जा सकते और न ही मैं इन्हे ले जा सकता हू।" मैंने कहा, "अबतक हम एक दूसरे के साथ रही है और एक दूसरे की सहायता से हमने दिन व्यतीत किये है। अब मैं इन्हे छोडकर नहीं जा सकती। या तो सब को ले चलिये और या फिर सब को रहने दीजिये।" बहुत कहने-सुनने पर वह सबको ले जाने को राजी हो गया। कहने लगा,

"आप जल्दी सामान बाधिये। हम एक घटे तक आयेगे।" हमने जल्दी-जल्दी अपने चीथडे इकट्ठे किये और जो कुछ हमारे पास टूटे-फूटे बरतन थे, उन्हे भी बाध लिया और तैयार हो गये, दूसरी दु खभरी मजिल का सफर तय करने के लिये।

हम सब गिनती मे ग्यारह थे। दो नौकर, मै, मेरे पाच बच्चे, सुदेश, कमला तथा श्रीमती मोदी। जितने परिवार उस घर मे रहते थे, सब-के-सब हमारे पास आकर बैठ गये। सबकी आखो मे आसू थे। मुझे भी मुजफ्फराबाद छोडते हुए बहुत दु ख हो रहा था। कैसे यहा पर आई थी। अब अपना सब कुछ इसी भूमि के अर्पण कर जा रही थी। रह-रह कर गला भर आता था। भविष्य का कुछ पता नही था, क्या होगा कहा जायेगे ?

घटे भर बाद दुर्रानी आया और चलने को कहा। हम सब उठे। रुधे हुए कठो से सबसे मिले। सबकी आखो से आसू बह रहे थे। दुर्रानी आगे-आगे चल रहा था। मै उसके पीछे-पीछे जा रही थी। वह कहने लगा, "बहनजी, आपको नगे पाव चलते देखकर मुझे शर्म आ रही है।" मैने कहा, "भाई, इसमे शर्म की क्या बात है। यह तो दिनो का फेर है। मुझे आज मुजफ्फराबाद छोडते हुए बडा दु ख हो रहा है। आज मै पति का वियोग महसूस कर रही हू। मन को शात करने की बडी कोशिश कर रही हू, परन्तु व्याकुलता बढती जा रही है।"

यही बाते करते-करते हम सडक पर पहुच गये। सामान लारी पर रखा। वहा मौलवी भी मिला। कहने लगा, "अगर गलती से मैने आपको कोई तकलीफ दी हो, तो माफ करना।"

लारी मे तेल डाला जा रहा था। मै और श्रीमती मोदी सडक से जरा कुछ आगे गये, जहा श्रीमती मोदी की कोठी थी। सब कुछ जलकर राख हो गया था। बेचारी आसू भरी आखो से देख रही थी और कह रही थी, "यही पर मैने अपने बच्चे को छोडा था।" उस समय हमारे टूटे हुए दिलो पर क्या गुजर रही थी, वह कहते नही बनता। भिखारी बन कर हम यहा से जा रहे थे।

लारी आई और हम उसपर सवार हुए। मैंने देखा, वही ड्राइवर और वही लारी, जिसपर कभी मैं श्रीनगर से यहा आई थी। सब कुछ वही था, जमीन वही, आकाश वही, पर मेरे जीवन में जमीन-आसमान का अन्तर था। मैंने ड्राइवर से कहा, "तुम्हें याद है, कुछ मास पहले तुम मुझे इसी लारी पर श्रीनगर से लाये थे ?" पर मैंने देखा उस दिन के ड्राइवर में और इसमें भी जमीन-आसमान का अन्तर था। वह कहने लगा, "तुम हिंदुस्तान चली हो ना, सुनो ! तुम्हारी सारी फौज को चेचक निकली है। दो दिन में तुम्हें पता चलेगा कि तुम्हारी हिन्दुस्तानी फौज का क्या हुआ ?"

पुल पर जगह-जगह पहरे वाले लारी को रोककर पूछते थे कि कहा जा रही है। इसमें कौन है ? जवाब दिया जाता था, "आजाद काश्मीर बस।" यह सुनते ही वे इन्हें झट रास्ता दे देते थे। हमारी लारी में बहुत-से मुसलमान भी बैठे हुए थे। सबने मेरे बच्चों को बहुत प्यार से बैठाया। और इन्हें देखकर लोगों के दिल बहुत दुःख रहे थे।

जब हमारी लारी गढी हबीब-उल्ला पहुची, (यह स्थान पाकिस्तान में है) तो वहा पर भी बहुत से आदमी इकट्ठे हो रहे थे। यहा चौधरी साहब का भाषण होना था। हमें वहीं बैठा कर वह भाषण देने लगे। दुर्रानी हमारे पास रहा। अब दुर्रानी कहने लगा, "बहन जी, यहा बड़ी-बड़ी दिक्कतें हैं। अगर आपसे कोई पूछे, कौन हो ? कहा जा रही हो ? तो आप कुछ मत बताना, उनसे कहना, कि वे मुझसे पूछे। जब कोई बहुत मजबूर करे तो कहना कि, यह मेरा भाई है। उसके घर जा रही हू।" चौधरी साहब भाषण देकर आये और ड्राइवर से चलने को कहा ताकि समय पर एबटाबाद पहुचें। रास्ते में कबाइली ही कबाइली थे। लारी को घूर-घूर कर देख रहे थे। जब हम एबटाबाद के नजदीक पहुचे तो पुलिस के एक सिपाही ने आकर हमारी लारी रोक ली। पूछा, "इन औरतों को आप कहा ले जा रहे हैं।" और हमसे पूछा, "आप अपनी मर्जी से जा रही हैं।" मैंने कहा, "हा।" वह फिर चुप हो गया।

लारी एबटाबाद के डाक बगले के सामने रुकी, परन्तु वहा पर कमरा

न मिला। वहा पर पठान-ही-पठान थे। तब ये लोग हमे एक होटल मे ले गये। इस समय रात के दस बज गये थे। दुर्रानी कहने लगा, "बहनजी, आज रात यही पर रहेंगे। कल शाम को आपको रावलपिंडी ले जायेंगे। आप फिक्र न कीजिएगा। सब ठीक होगा।" एक कमरा हमे दिया गया। खाना दुर्रानी ने मगवाया। सब बच्चा तथा नौकरो ने खाया।

रात को हम सब लोग आराम से सोये। दूसरे दिन वहा पर चौधरी साहब का भाषण था। वह सारा दिन बाहर रहे और शाम को आये। उसी समय सबसे चलने को कहा। मैंने और श्रीमती मोदी ने आज भी खाना नही खाया था। कुछ फल मगाये, वे ही खाकर पानी पी लिया।

हम सब फिर उसी लारी पर बैठे और रावलपिंडी को रवाना हुए। जब हम पिडी पहुचे तो रास्ते मे दुर्रानी के एक रिश्तेदार का मकान पड़ता था। वह वहा कुछ सामान उतारना चाहता था। उस स्थान पर उसने लारी रुकवाई और कहने लगा, "चलिये, आप उन लोगो से मिल आइये। यहा पर कर्नल साहब रहते है, जो पहले काश्मीर मे भी कर्नल थे। पिछले दिनो जम्मू मे इनपर भी बहुत कठिनाइया आई। यह सब वहा से भाग कर आये है।"

मै और सब बच्चे नीचे उतरे और अन्दर गये। यह एक आलीशान साफ-सुथरी कोठी थी। एक कमरे मे धीमी आच जल रही थी। एक बूढा आदमी कोच पर बैठा हुआ हुक्का पी रहा था और पास ही दो बूढी स्त्रिया भी बैठी हुई थी। एक तरफ एक नवयुवती बैठी हुई थी और फौजी वर्दी पहने हुए एक युवक इधर-उधर टहल रहा था। हम अन्दर गये और सामने वाले गलीचे पर बैठ गये। हमे देखकर वे लोग मुस्कराये। दुर्रानी ने हमारा परिचय कराया। तब वह दोनो बूढी स्त्रिया कहने लगी, "तू कहा जा रही है। तेरे दोनो लड़को को रास्ते मे पठान मार देंगे।" वह बूढा आदमी भी यही बोला जो कर्नल कहलाता था। वह कहने लगा, "पचास हजार मुसलमान जम्मू मे दाखिल हो गये है, अब तुम्हारा जम्मू नही बचेगा। जो अत्याचार हमारे ऊपर हिन्दुओ ने किये है, अब उनका बदला उनको मिलेगा।"

"मेरा एक लडका अभी तक गुम है, उसका पता नही लग रहा है।" यह कहते-कहते उसकी आखे डबडबा आई।

सब स्त्रिया हमारी ओर देख कर कठोर हसी हस रही थी। वह सच्ची थी। उसके लिए मै उनको दोष नही दे सकती। उनपर बहुत-कुछ बीती थी। उनकी बाते सुनकर बच्चे बिल्कुल सहम गये थे। कुछ देर बाद हम उठे और लारी पर सवार हुए। उनके ये शब्द कि ये बच्चे जिन्दा नही पहुचेगे बराबर मेरे कानो मे गूज रहे थे।

यहा से ये लोग हमे शहर ले गये। एक स्थान पर लारी रुकी। वे कहने लगे, "यहा पर काश्मीर के मुसलमानो का कैम्प है। ये हिन्दुस्तान से भागकर यहा आये है। आपको एक-दो दिन यहा रहना होगा। उसके बाद हम आपको जम्मू की सीमा तक पहुचा देगे और आपके बदले मे कुछ औरतो को वहा से ले लेगे।"

हम अन्दर गये, तो देखते क्या है कि कुछ थोडे से काश्मीरी, हाथो मे बन्दूक लिये इधर-उधर घूम रहे है। यह डी० ए० वी० कालेज का भवन था। हमे उन्होने एक कमरे मे ले जा कर छोड दिया। दुर्रानी और चोधरी कल आने को कह कर चले गये।

उस समय हम कुछ घबराये हुए थे। इतने मे सब काश्मीरी इकट्ठे हो गये। लडको को बाहर बुलाया और उन्हे प्यार से कहने लगे, "तुम सब हमारे वतनी हो। हम भी काश्मीरी है।" मेरे पास एक आदमी जिसे मै उस समय पहचानती थी, अन्दर आया और कहने लगा, "यहा पर आपको घबराना नही चाहिए। मै हिन्दू हू। मेहता साहब मेरे मित्र थे। मै यहा पर आपकी हर तरह सहायता कर सकता हू। इस कैम्प की देख-रेख मै और मेरे एक मुसलमान मित्र कर रहे है। हम आपके लिए राशन वगैरह ला देगे। आप यही पर भोजन पकाइये।" मैने कहा, "इस समय मै और श्रीमती मोदी भोजन नही करेगी। बच्चो के लिए भले ही कुछ मगा दीजिये।" उसने बच्चो के लिए भोजन और हमारे लिए फल वगैरह भिजवा दिये। हम दोनो ने दो दिनो से भोजन नही किया था, अब हमने दूध पिया। बाहर से उन

लोगो ने कहला भेजा, "आप चिन्ता न करे। हम भी आज यही सोयेंगे। आप आराम मे सो जाइयें।"

हम सबने विचारा, "क्या बात है, आखिर ये लोग हम सबके साथ इतनी सहानुभूति क्यो दिखा रहे है ? क्या यह मेहता साहब का सचमुच ही मित्र है।" मुझे विश्वास नही आ रहा था। उन्होने कभी इससे मेरा परिचय नही कराया था। यह अपने को हिन्दू बता रहा है और यह कैम्प भी अपने ही आधीन बता रहा है। कुछ देर मै इसी सोच-विचार मे पड़ी रही। मेरे दोनो साथी बहुत डरे हुए थे। वे समझते थे कि अब ये लोग हमे खत्म कर देंगे। वहा हर व्यक्ति हाथ मे पिस्तौल लिये घूम रहा था। आखिर नीद ने अपना दबाव डाला और सब भय जाता रहा।

: २२ :

रावलपिंडी कैंप में

प्रात काल सब उठे। हमारे कमरे के दरवाजे के सामने एक आदमी बन्दूक लिये पहरा दे रहा था। उसने नल आदि का पता बता दिया। इतने मे उन लोगो ने दूध, घी और खाने की बहुत-सी सामग्री भेजी। बाहर कई काश्मीरी मुसलमान जो उस कैम्प मे रहते थे, इकट्ठे हो गये। बच्चो को देखकर कहने लगे, "हम पर भी बडी मुसीबते आई थी। अब हम सब यहा है। आप हमारे हमवतनी है। आपको देख कर हमे खुशी होती है। हमे भी अपने हमवतनियो की खिदमत करने का मौका मिला। बताइये ! हम आपकी क्या खिदमत करे ?" कोई एक बच्चे को उठाता, तो कोई दूसरे को। ये सब बेचारे समय के फेर पर अफसोस कर रहे थे। मै इन्हे देख कर बडी हैरान थी कि इन्हे किसने इतने प्रेम की शिक्षा दी है। इनमे हिन्दू-मुसलमान का बिल्कुल भेद-भाव नही था।

वही पर मैने अपने शहर के दो लडके देखे। इनका मकान मेरे पिता के मकान के पास था। उन्होने मुझे पहचाना और झट मेरे पास आये। ये दोनो मुसलमान थे। मैने पूछा, "तुम यहा पर कैसे आये ? तुम तो जम्मू मे

कालिज मे पढ रहे थे ?" दोनो की आखो में आसू भर आए। उन्होने बताया कि जम्मू के मजहवी झगडो ने उन्हे उनके वतन से निकाल दिया है। रह-रह कर उन्हे उनका वतन याद आता है। न जाने उनके मा-बाप का क्या हाल होगा? इन दोनो की आयु करीव २५-२६ साल की थी। मैंने उनसे कहा, "चाहे जो कुछ भी हो, हमारे शहर मे उस साम्प्रदायिकता का असर कभी नही हो सकता, मेरा ऐसा विश्वास है। जैसे आज तक कोई भी दगा हमारे यहा नही हुआ, वैसे उम्मीद है कि आगे भी नही होगा।"

वे कहने लगे, "हम भी यही कहते है कि चाहे जो कुछ भी हो, लेकिन किश्तवाड के हिन्दू-मुस्लिम एक-दूसरे की वरबादी नही देख सकते।"

मैंने उनसे पूछा, "वताओ, तुम यहा पर कहा रहते हो और तुम्हारी कौन देख-रेख करता है ?" उन्होने बताया, कि यह कैम्प 'आजाद काश्मीर' की ओर से खुला हुआ है। काश्मीर के मुस्लिम पनाहगुजीनो के लिए यहा इन्तिजाम है। यहा पर इस वक्त ३०० पनाहगुजीन है। इनमे जम्मू के केवल वे ही दो है। इनकी देख-रेख मिस्टर जी० के० रेड्डी और एक मुस्लिम भाई करते है। यहा पर रोज सबो को वन्दूक चलाने की ट्रेनिंग दी जाती है। मैंने पूछा कि इन्हे कौन ट्रेनिंग देता है ? तो वे बोले, "पाकिस्तान की फौज मे वहुत-से काश्मीरी भी है। पाकिस्तान ने उनमे से कुछ को यहा पर भेज दिया है।" मैंने उनसे फिर पूछा, "तुम्हारी पढाई का क्या प्रबध है ?" उन्होने जवाब दिया, "हमे इन्होने कालिज मे दाखिल करा दिया है।" मैंने कहा, "मै देख रही हू कि यहा पर हमारे साथ बहुत ही अच्छा सलूक किया जा रहा है। यहा पर हिन्दू-मुस्लिम का सवाल ही नही है।" वे बोले, "इस कैम्प का चलानेवाला बडा ही नेक आदमी है। वह सब को समझाता है कि तुम्हे मजहवी तअस्सुब से दूर रहना चाहिए। और उसी के कहने पर सब काश्मीरी चलते है।" मेरा कौतूहल वढा। मैंने पूछा, "यह जी० के० रेड्डी कौन है ?" इसपर उन्होने बताया कि वह काश्मीर मे एक अखबार का एडीटर था। कुछ महीने हुए हुकूमत काश्मीर ने इसका अखवार जब्त कर लिया और उसे वहा से निकाल दिया। यह सुनकर मै

समझ गई कि जो आदमी रात को मुझसे कह रहा था कि वह मेहता साहब का मित्र है, शायद यह वही हो। मुझे यह भी याद आया कि कुछ महीने पहिले जब कि यह रावलपिंडी को जा रहे थे, इन्हे मुजफ्फराबाद मे गिरफ्तार भी किया गया था। मुज़फ्फराबाद का कर्नल उन्हे वहीं खत्म करना चाहता था, परन्तु मेहता साहब ने उसे ऐसा करने से रोका था। यह सचमुच उनका मित्र था। अब सब बाते मेरी समझ मे आने लगीं। यह भी भरोसा हुआ कि समय पर यह जरूर हमारी मदद करेगा।

इतने मे एक सिपाही अन्दर आया। यह बिल्कुल जापानी-सा मालूम पडता था। वह मेरे पास आकर बैठ गया। कहने लगा, "माताजी, मै भी काश्मीरी हू। मै कई साल से जापान मे था। आजकल पाकिस्तान की फौज में हू। अभी मैंने सुना कि हमारे हमवतनी आये है, तो मै सलाम करने चला आया।" इस तरह कई लोग आने-जाने लगे। इन सबकी जबान पर वतन ही वतन का शब्द था। बीच मे कैम्प का एक और अफसर भी आया। वह बताने लगा, "मै भी मेहता साहब का दोस्त हू।" इन सब लोगो में वतन की एक अजीब-ओ-गरीब कशिश मैंने देखी। फिर इस कैम्प का इचार्ज आया और दोनो लडको को अपने संग ले गया। श्री रेड्डी भी इनके साथ थे। बाजार जाकर उन्होंने दोनो बच्चो को जूते लेकर दिये। बच्चे पहनने से इन्कार कर रहे थे। परन्तु वे नही माने। जूतो के बगैर इन दोनो के पैरो मे बिवाइया फट गई थी। बडे लडके सुरेश को स्वेटर भी ले दिया। उसने केवल एक ही कमीज पहनी थी। फिर उस इचार्ज ने इन्हे अपनी कोठी पर ले जाकर चाय पिलाई। काफी देर बाद फिर वे उन्हे मेरे पास ले आए। बडे लडके ने आते ही मुझे जूते दिखाये। परन्तु उसकी आखे लज्जा के कारण उठती नही थीं और उनमे आसू भी भर आये थे। मैंने कैम्प-इचार्ज से कहा, "आपने यह तकलीफ क्यो उठाई?" वह बोला, "बच्चे तो लेते ही नही थे। मैंने जोर दिया, तब इन्होने लिये। इन्हे देखिये, इनके पैरो की क्या हालत है? आपको हमसे सकोच नही करना चाहिये। मेहता साहब हमारे दोस्त थे।" यह कहकर वे चले गये।

समय पर वहा के सब शरणार्थी ट्रेनिंग लेने गये। मेरे दोनो लडके भी उनके साथ गये। छोटा तो बहुत खुश था। उसके तो यह मन की बात थी, कभी एक की बदूक लेता तो कभी दूसरे की। "बदूक कैसे चलाते है ?" यही वह पूछ रहा था।

दिन के १२ बजे वे लोग, कैंप का इचार्ज और श्री रेड्डी आकर मुझसे कहने लगे कि अगर हम उनकी कोठी पर चलकर रहे, तो बहुत अच्छा हो। वहा पर हमारी देख-रेख अच्छी तरह हो सकेगी। और अभी यह भी मालूम नही कि लोगो को जम्मू भेजने का इन्तिजाम कबतक होगा। उन्होने यह भी कहा कि वे हमे वहा अकेले नही रख सकते। क्योकि हालत अच्छी नही है। यह कहकर वे चले गये। मैंने श्रीमती मोदी से सलाह ली। एक अन-जान व्यक्ति के यहा रहने को वे तैयार नही थी। वैसे तो यह बात ठीक ही थी, परन्तु यह कैंप भी तो उन्ही के आधीन था। चारो ओर आदमी-ही-आदमी नजर आते थे। मैंने कहा, "आपको चलना होगा। वहा रहकर हम अपने वतन का बहुत काम कर सकेगी। मै यहा पर बहुत से काश्मीरियो से मिली। मैंने जहा तक इन सबको देखा या समझा, यही जान पडता है कि इन्हे साम्प्रदायिकता से नफरत है। मै कुछ दिन यहा पर ठहरना चाहती हू ताकि इन लोगो से मिलू और देखू कि इनकी अपने वतन के लिये क्या राय है।" इसपर वह चलने को राजी हो गई। यहा आकर मुझे काश्मीर की बहुत-सी बातो का ज्ञान हुआ। जैसे हमला करनेवाले कहा तक पहुचे थे ? हिन्दुस्तान की फौज समय पर कैसे पहुची और उसने कैसे काश्मीर की रक्षा की। जम्मू की भी बहुत-सी बाते मालूम हुई। यहा आकर हमे लगा कि हम परम सुख मे हैं, हालाकि हमारा यहा रहना भी खतरे से खाली नही था। प्रतिक्षण यही भय लगा रहता था कि न जाने आगे क्या होनेवाला है। वैसे भी जम्मू तक पहुचना टेढी खीर थी। सारा रास्ता कबाइलियो से भरा हुआ था। यहा पर अपने कई मित्र दिखाई दे रहे थे। मुजफ्फराबाद से हम अपने आपको यहा पर ज्यादा महफूज समझने लगे थे। तभी कैंप के कुछ आदमी मेरे पास आकर बैठ गये और कहने लगे, "हमारे मा, बाप

और खान्दान का न जाने क्या हाल है। क्या हम कभी उनसे मिल सकेंगे।" मैंने कहा, "यह तो तुम जानते ही हो कि हमलावर जहा पहुचते है, वहा आग लगाकर सब-कुछ बरबाद कर देते है और फिर गोलियो से बेगुनाह रिआया को मारते है। ऐसी हालत मे क्या तुम यकीन करते हो कि तुम्हारे मा-बाप जीते बचे होगे। यह तो इन लोगो का बहाना है कि काश्मीरी मुसलमानो को हम हिफाजत से रखेगे और उन्हे खास रिआयत देगे। मुजफ्फराबाद मे कई काश्मीरयो को इन्होने नेशनल होने के जुर्म मे मौत के घाट उतार दिया है और कई लोगो के मकान लूट लिये है। यह सब देखकर मै कल से हैरान हू कि तुम किसका साथ दे रहे हो ? तुम अपने वतन को बरबाद करने वालो के साथ रहकर कितना बडा पाप कर रहे हो। तुम्हे शेख साहब को देखना चाहिये कि वह अपना खून देकर अपने प्यारे वतन को बचा रहा है। उसकी हुकूमत मे साम्प्रदायिकता का नाम नही है। इधर इस लडाई को इस्लामी लडाई कह-कहकर उभारा जा रहा है। मै यह सब किसीके पक्षपात के कारण नही कह रही हू। किन्तु जो सच बात है वही कह रही हू। जो गड्ढा अत्याचारियो ने खोदा है, वे खुद ही उसमे गिरेगे।"

"हा, जम्मू मे जो कुछ गुण्डो ने किया है, उसका मुझे दुःख है। उन्होने यह अच्छा नही किया। इसी कारण वह आगे बढने से रुक गये।"

मेरी बाते सुनकर उनमे से कई कहने लगे, "हम अपने वतन को हर आफत से बचाना चाहते है, लेकिन क्या करे। यहा फस गये है।" यह शब्द उन्होने धीरे-से कहे, मै उनका मर्म समझ गई।

उधर जी० के० रेड्डी लारी लेकर आये, जिसपर 'आजाद काश्मीर' लिखा हुआ था। हम सब उसपर सवार हुये। उस बस पर एक अमरीकन फौजी भी था। उसने फौजी वरदी पहनी थी और सिर पर पगडी बाधी थी। वह हमारे साथ चला और इसके अतिरिक्त तीन चार काश्मीरी, जो बन्दूको और कारतूसो मे सज्जित थे, साथ बैठे। ये लोग हमे पुछ हाउस ले गये। यह पुछ प्रात के राजा की बहुत बडी कोठी है। यहा कई मोटर साइकिले

तथा लारियां थी। सब पर 'आजाद काश्मीर' लिखा हुआ था। बाग के अहाते में दफ्तर था जहां प्रत्येक वस्तु पर 'आजाद काश्मीर' लिखा था। आफिस में कई आदमी काम कर रहे थे। हमें अन्दर ले जाया गया और एक सजे हुए कमरे में ठहराया गया। वहां पर सब आवश्यक सामान था।

आज तीन मास के बाद हमें यह चीजें देखने का अवसर मिला था। जब मैं अन्दर दाखिल हुई, तो मैंने सामने ही एक बड़ा कदावर आईना रखा हुआ देखा। जब मैं इसके सामने आई, तो मुझे अपनी शकल दिखाई दी। तीन मास के बाद मैं अपनी सूरत देखकर कांप उठी। उस समय मुझे ऐसा मालूम हुआ, मानो मैं किसी भिखारिन को देख रही हूं। मैं वहां खड़ी नहीं रह सकी। मेरे पांव कांपने लगे। सिर में चक्कर आ गया और दोनों हाथों से उसे पकड़कर मैं वहीं बैठ गई। न जाने कितना पानी मेरी आंखों से निकला होगा। जन्म से लेकर आज तक का सारा जीवन मेरी आंखों के सामने घूम गया। बहुत देर तक मैं विमूढ़-सी सोचती रही। पर सोचने की भी एक सीमा है। आखिर मैंने अपने आपको संभाला।

हमारे खाने के बारे में उन्होंने कहा, "आपके नौकर आपका खाना बनायेंगे।" उनके खानसामा और बैरे वगैरह सब काश्मीरी मुसलमान थे। सब हमें देखकर खुश हो रहे थे।

इसी कोठी में श्री जी० के० रेड्डी, ब्रिगेडियर रसल के० हेजर (अमरीकन) और एक मुस्लिम भाई रहते थे। यह सब कैंप उन्हीं के आधीन था, सब-के-सब हमारी देख-रेख में लग गए। हमारे नहाने के लिये पानी गरम कराया गया। मैंने सब बच्चों को नहलाया। नहलाने से टब का पानी एकदम मैला पड़ जाता था। तीन महीने की मैल बदन पर लगी हुई थी। हालांकि वहां पर भी मैं इन्हें कभी-कभी नहला देती थी परन्तु इतना पानी कहां मिलता था कि अच्छी तरह साबुन का प्रयोग किया जा सकता। स्नानादि के बाद हमारे कमरे में एक बैरे ने आग जला दी। सब बड़े आराम से बैठ गए। रात का खाना आया और सबने खाया। बहुत दिन के बाद हमें यह सब आराम मिले थे, इसलिए सबको नींद ने आ घेरा। बच्चों को सुलाकर

मैं बाहर निकली। देखा, दो काश्मीरी राइफिले लेकर हमारे दरवाजे पर पहरा दे रहे हैं। उन्हे देखकर मैं भी निश्चित होकर सो गई।

प्रात काल ब्रिगेडियर वगैरह हमारे कमरे मे आये और कहने लगे, आप लोगो को फिक्र नही करनी चाहिये। जल्दी ही हम आपको जम्मू पहुचाने का इन्तिजाम करेगे।" ब्रिगेडियर ने यह भी कहा कि वह खुद हमारे साथ चलेगा, ताकि हमे रास्ते मे कोई तकलीफ न हो।

बाहर से अनेक काश्मीरी, जिनमे दूकानदार, फैक्टरी के मुलाजिम, आदि थे हमारे बारे मे सुनकर वहा इकट्ठे होने लगे। जिस काश्मीरी ने भी सुना, वह हमसे मिलने आया। कई तो बच्चो के लिये फल तक लेकर आये थे। इनमे से बहुत-से मेहता साहब के मित्र भी थे। एक ने सबके पाव नाप लिये और सबके लिये जूते खरीदने गया। मैने बहुत मना किया, परन्तु वह नही माना। बोला, "हम आप लोगो को ऐसे हालत मे नही देख सकते। आप हमारे मेहमान है।।" श्रीमती मोदी और मैने जूते नही पहने। बाकी सबको उन्होने पहना दिये। मैं इन लोगो का प्रेम देखकर कुछ नही कह सकी। कितना भी क्यो न हो, मैंने काश्मीरी मुसलमानो के अन्दर साम्प्रदायिकता का जहर बहुत कम पाया है। किसीके बहकावे मे आकर कुछ क्षण के लिए भले ही रास्ते से हट गये हो, पर उनमे यह जहर ज्यादा समय तक नही टिक सकता। जिस मिट्टी से वे बने है उसका असर उनमे कूट-कूट कर भरा हुआ था। जब मैने देखा कि वहा कर कोई गैर नही है तो मैंने उनसे कहा, "क्या तुम अपने वतन का नाश होते देख सकोगे? तुम किस भूल मे हो? जब ये लोग वहा पहुचेगे तो क्या तुम्हारे रिश्तेदारो को छोड देगे। इन्होने जो कुछ किया, इन्सानियत को छोडकर किया है। अगर जग ही करना था तो बहादुरो की तरह करते, न कि चोरो की तरह धन और औरतो की अस्मत लूटते फिरते। इन्होने इन्साफ के नाम को धब्बा लगाया है।" ये बाते सुनकर उनमे से एक आदमी कहने लगा, "हमने पाकिस्तानवालो से कहा था कि पठानो को ऐसे बेलगाम न छोडो। लेकिन उन्होने नही माना।" मैने कहा, "तुम्हे सच्चाई का साथ देना चाहिये और इन्साफ पर चलना

चाहिये। इसपर एक आदमी ने वहुत धीरे से कहा, "यहा पर ज्यादातर शेख साहव के हामी है। वस, इससे ज्यादा मै आपको कुछ नही वता सकता।" थोडी देर बातें करने के बाद वे चले गये।

दिन मे दुर्रानी आया और कहने लगा, "चौधरी साहव को किसी काम से कही वाहर जाना पडा है। अब मै आपको एक-दो दिन मे जम्मू की सरहद तक पहुचा आऊगा।

उसके जाने के वाद आजाद काश्मीर का डिफेन्स मिनिस्टर अली अहमद शाह मेरे पास आया और देर तक मेहता साहव के बारे मे बातें करता रहा। यह पुछ का रहनेवाला था। कहने लगा, "हम सब पुछ मे कितनी अच्छी तरह मिलकर रहते थे। न कही कुछ था और न ही ऐसा होने की कोई उम्मीद थी।" मैंने उन्हे मेहता साहव के फोटो दिखलाये जो कि वहा की गवर्नमेंट की प्रदर्शनी मे लिये गये थे। उसमे पुछ के सब अफसर थे। एक आह खीचकर कुछ समय तक वह चुप वैठा रहा, शायद उसे वतन की याद आ रही थी। फिर मुझसे कहने लगा, "आपको किस चीज की जरूरत है? कहिये।" वहा श्री जी० के० रेड्डी वगैरह भी बैठे हुये थे। सब कहने लगे, 'इनके पास आप क्या देख रहे है? कपडे की इन्हे बेहद जरूरत है?" इसपर मैंने उनसे प्रार्थनापूर्वक कहा, "मै कुछ नही लेना चाहती। जब तक लिये बगैर काम चल नही सकता था। तब तक बहुत लिया। पर अब तो दो दिन की बात है। अब मैं कुछ न लूगी। आप सब लोग मेरे लिये इतना कुछ कर रहे हैं। इसके लिये मैं आपको धन्यवाद देती हू।" कुछ देर बाद वह चला गया और उसने कपडे के कई थान भेजे। परन्तु मैंने वे लेने से इन्कार कर दिया। श्री जी० के० रेड्डी ने बहुत कहा, पर मैं नही मानी। मैंने श्री रेड्डी तथा उसके साथियो से मुज़फ्फराबाद के कुछ लोगो को निकलवाने के लिये प्रार्थना की। आते समय उन्होने हमसे कहा था कि हम उन्हे भूले नही, उनके छुटकारे का प्रबन्ध करे। मैंने तब उन्हे तसल्ली देते हुए कहा था कि जब समय मिलेगा तो मैं उनके निकलवाने की अवश्य कोशिश करूगी। इन सबने उनके नाम नोट कर

लिये और मुझे तसल्ली दी कि वे अवश्य ही उन लोगो की सहायता करेगे। उन्होने मुझसे कहा कि अलीवेग कैम्प, मीरपुर की दशा बहुत बुरी है। अगर भारत से या जम्मू से उसके लिये कुछ आर्थिक सहायता मिले, तो मै उनके पास जरूर भिजवाऊ। अलीवेग कैम्प की बाते सुनकर मन बहुत ही दुखी हुआ।

श्री रेड्डी ने कहा कि वे लोग पैट्रोल का प्रबन्ध कर रहे है। परसो हमे जम्मू सीमा तक पहुचा देगे। ब्रिगेडियर रसल के० हेजर एक कैमरा लाया और हमसे कहने लगा, कि अगर हमे कोई एतराज न हो तो वह हम सबका एक फोटो ले। इन दिनो की यादगार सबके पास रहेगी। मुझे कोई एतराज नही था। इसपर उसने हम सबका एक ग्रुप फोटो लिया। उसका बैरा हमारे खाने-पीने का खयाल खास तौर पर रखता था और बच्चो को बहुत अच्छी तरह खिलाता था। दो दिन ही मे हम लोगो की हालत सुधर गई।

उसी दिन रात के नौ बजे मै अपने कमरे से निकल कर इन लोगो के कमरे की ओर चली। जाते समय मैने अपने साथियो से कहा, "आज मै खतरे मे पाव रख रही हू। मै नही जानती इसका क्या परिणाम होगा ? परन्तु मै अपने वतन के लिये यह काम जरूर करूगी।" वे सब मना करने लगे और कहने लगे कि मुझे अपनी जिम्मेदारियो और स्थिति का ध्यान रखना चाहिए परन्तु मै वतन के सामने किसी भी चीज की कीमत नही समझती थी इसलिये मै उनके कमरे मे गई और इधर-उधर की बाते करने के पश्चात् बोली, "मै हैरान हू कि आप जैसे ऊचे विचार के व्यक्ति इन लोगो के साथ है जिन्होने बिना सोचे-समझे बेगुनाहो पर अत्याचार ढाये है। तीन दिन मे ही मैने यहा देख लिया है कि आपने इन लोगो को हिन्दू-मुस्लिम एकता का पाठ पढाया है। मैने और भी बहुत-सी अच्छी बाते देखी है। इसलिए मै कहती हू कि आपको इनका साथ छोडना चाहिये। अगर आप ऐसा नही करेगे तो मै ईश्वर से प्रार्थना करूगी कि आपको तीन दिन के अन्दर ही यहा से त्याग-पत्र देना पडे। मै जानती हू कि मै जो-कुछ कह रही

हू वह मुझे कहना न चाहिये परन्तु मै मजबूर हू। अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए मुझे डर नही लगता।" मेरी बाते सुनकर उनमे से एक व्यक्ति बोला, "अब तो काश्मीर थोडे दिन मे पाकिस्तान के कब्जे मे आ जायेगा। कल ५०० पठान जम्मू सतवारी तक पहुच गये है।" मैने कहा, "आप सब बाते जानते है परन्तु मै कुछ जाने बगैर आपसे कहती हू कि ये लोग कभी कामयाब नही हो सकते हैं। इन्होने जो गड्ढा खोदा है उसमे वे खुद ही गिरेगे। बेगुनाहो के खून इन्हे कभी आगे नही बढने देगे।"

जम्मू से हमारे तबादले की दो दिन तक कोई इत्तला नही आई परन्तु तीसरे दिन आ गई। हमे तीन दिन रुकना पडा। भगवान् की करनी, इन लोगो को आपसी फूट के कारण तीन दिन के अन्दर ही त्यागपत्र देना पडा। हमारे सामने ही इन्होने चार्ज दे दिया।

एक भला व्यक्ति, जिसकी मै जितनी तारीफ करू थोडी है, जात का मुसलमान और बडा ही नेक और उच्च विचार का था। उसने इस कठिन समय मे मेरी जो सहायता की उसे शायद ही मै इस जन्म मे भूलूगी। वह मुझसे कहा करता था, "बहन! तुम चिन्ता न करो। तुम्हारे बच्चो की पढाई मेरे जिम्मे। जहा तक होगा मै तुम्हारी मदद करूगा। तुम हिन्दुस्तान जाकर जबतक चाहो मेरे घर पर रह सकती हो। उसने एक तसबीह (जप माला) मुझे और एक श्रीमती मोदी को दी और कहा, "यह मेरा छोटा-सा तोहफा है। जब कभी तुमपर कोई मुसीबत आयेगी तो इससे तुम्हें तस्कीन होगी।" मैने उसको धन्यवाद दिया।

: २३ :

मुक्ति के स्थान पर जेल

एक दिन दुर्रानी सब प्रबन्ध करने के बाद हमारे पास आया और कहने लगा, "कल के लिये हमे तैयार रहना चाहिये।" अगले दिन हम यहा एक सप्ताह रह कर चले। श्री जी० के० रेड्डी और ब्रिगेडियर किसी कार्यवश हमारे साथ न चल सके पर जिस भले व्यक्ति का मै पीछे जिक्र कर आई

रू वह हमारे साथ चलने को तैयार हुआ और दुर्रानी तो था ही। इसके अतिरिक्त आठ काश्मीरी बडी हमदर्दी से हमारे साथ चले।

बहुत-सा सफर तय करने के बाद जब हम जेहलम पुल पर पहुचे तो पठानो ने सामने आकर लारी को रोक दिया। कुछ लोग लारी की छत पर चढ गये और कुछ आस-पास खडे हो गये। कहने लगे, "हमे भी साथ ले चलो। हम भी मोर्चे पर जायेगे।" हमारे साथी सब नीचे उतरे और उन्हे समझाने लगे कि इसमे जगह नही है। परन्तु वे तो कुछ भी सुनने को तैयार नही थे। उन्होने बन्दूके तानकर कहा, "अगर एक कदम भी आगे बढने की कोशिश की तो फायर कर देगे।" देखते-ही-देखते भीड बढ गई। ज्यादातर उसमे पठान ही थे। रास्ते मे भी हमने थोडा-सा बोझ और बन्दूके उठाये हुए पठान-ही-पठान देखे थे जो मोर्चे पर पैदल चले जा रहे थे। एकाएक यह एक नई विपत्ति आ गई। हम लोग बहुत घबराये। परन्तु इतना शोर मचाने के बावजूद उन्होने लारी के अन्दर झाक कर नही देखा। नही तो आफत आ जाती।

इतने मे एक पुलिस अफसर आया और दुर्रानी तथा दूसरे व्यक्तियो से पूछने लगा, "तुम कहा जा रहे हो?" दुर्रानी ने जवाब दिया, "यह आजाद काश्मीर की लारी है। हम इन लोगो को जम्मू सीमा तक पहुचाने जा रहे है।" उसने कहा, "तुम तबतक नही जा सकते, जबतक तुम्हारे पास रावलपिडी के कमिश्नर का पास नही होगा।" इसपर दूसरा साथी बोला, "हमे पास की जरूरत नही है। हम कई महीनो से आजाद काश्मीर मे काम कर रहे है। आप हमारे काम मे रुकावट क्यो डालते है?" पुलिस अफसर ने बताया कि अब ऊपर के अधिकारियो से ऐसी ही आज्ञा मिली है। आप आफिस चल कर पता ले। अब मेरा माथा ठनका। मै भगवान् से सब कुछ सहन करने की शक्ति की प्रार्थना करने लगी।

जब उन्होने देखा कि लारी आगे नही जा रही है तो सब पठान लारी पर से उतर गये। एक आफिस के आगे लारी खडी की गई। और हमारे साथवाला व्यक्ति अन्दर गया। मैने दुर्रानी से कहा, "भाई, तुम सभल

कर रहना ऐसा न हो कि मेरी खातिर तुमपर कोई आच आये। मुझे कुछ अच्छे शकुन नही दिखाई दे रहे है। न जाने अब किन विपत्तियो का सामना करना पड़े।" वह कहने लगा, "आप मेरी फिक्र न करे। कोई बात नही है। आज नही तो कल हम आपको पहुचा देगे।" इतने मे वह व्यक्ति अन्दर से आया। उसका चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था। लारी पर बैठते हुए कहने लगा, "इन लोगो की चाले समझ मे नही आती। हर बात मे शक करते है। अब हम रावलपिडी जा रहे है। वहा कमिश्नर की कोठी पर चलकर अभी पास ले लेगे और कल आप लोगो को जम्मू की सरहद पर पहुचा देंगे। घबराने की कोई बात नही है।" उसकी ये बाते सुनकर मैं समझ गई कि वह यह सब हमारे धीरज के लिये कह रहा है। मामला कुछ पेचीदा हो गया है। दुर्रानी वही उतर गया। कहने लगा, "मुझे यहा पर कुछ काम है। कल आप लोग पास लेकर आयेगे तो मैं यही पर आपसे मिलूगा।

हमारी बस रावलपिडी वापस लौटी। वहा पहुचते ही हम सीधे कमिश्नर के बगले पर पहुचे। हमारे साथवाला व्यक्ति उतर कर अन्दर गया। फिर कुछ देर बाद बाहर आकर इधर-उधर टहलने लगा। वह कभी अन्दर जाता और कभी बाहर आता। चेहरा उसका क्रोध के कारण लाल हो रहा था। वह बड़बड़ा रहा था, "ये हमपर यकीन नही करते जैसे हम चोर है। इतना काम करते हुए भी ये हमपर शक करते है।" उसने श्री जी० के० रेड्डी को फोन किया और वह शीघ्र ही मोटर साइकिल पर वहा पहुच गया। सबने अन्दर जाकर कुछ बाते की जो मुझे नही मालूम हो सकी। इसके बाद वे सब हम लोगो को लेकर 'पूछ हाउस' आये। यहा आकर उन्होने पहरे के लिये कुछ पुलिस मगाई। उस समय यह मामला मेरी समझ मे नही आ रहा था। किसी से पूछ भी नही सकती थी। वे सब घबराये हुए थे। रात को काफी पहरा था। ब्रिगेडियर भी कमरे के एक-एक कोने को हाथ मे पिस्तौल लिये देख रहा था। वह रात भर इसी तरह घूमता रहा। हमे इन लोगो ने यह नही बताया कि कुछ पठान आज रात मे यहा पर हमला करनेवाले है। उन्हे मालूम होगया था कि यहा पर कुछ

हिन्दू औरते है। खैर! रात को हमला नही हुआ। यह नही जान पाई कि यह सब कैसे रुका।

श्री जी० के० रेड्डी वगैरह ने हमे विश्वास दिलाया कि दो-तीन रोज मे पास मिल जायगा तो वे हमको जम्मू सीमा तक पहुचा देगे और अब वे लोग भी यहा पर नही रहेगे। सब के चेहरो पर उदासी टपक रही थी। इसी तरह पास की इन्तिजार मे दो तीन दिन निकल गये पर पास न मिला। एक दिन रेड्डी ने आकर कहा, "अब आपको जम्मू नही भेजा जायगा। आपका जाना बन्द हो गया है पर हम कोशिश कर रहे है कि ये लोग आपको पेशावर भेज दे। वहा से आपको हिन्दुस्तान भिजवाया जा सकता है। हम पेशावर के प्राइम मिनिस्टर से बाते कर रहे है। आज वह यहा पर आने वाले है। शाम को उनसे सब बात तय करेगे। वह हमारे दोस्त है जहा तक होगा वह आपको हिफाजत से भिजवा देगे।" शाम को जब श्री रेड्डी और वही व्यक्ति जो हम लोगो को पहुचाने गया था, कयूम साहब से मिलने जाने लगे तो मेरे छोटे लडके विमल से कहा, "तू कहता है कि मै पठानो से नही डरता, चल आज तुझे एक बहुत बडा पठान दिखाये। देखते है कि तू उससे डरता है या नही।" वह जाने के लिए तैयार हो गया और वे लोग उसे साथ लेकर मिलने गये। परन्तु वह कही बाहर गया हुआ था। दूसरे दिन ये लोग उसके पास फिर गये और वापस आकर मुझे बताया, कि अब ये लोग हमे जेल भेज रहे है। उन्होने बहुत कोशिश की पर सब बेकार हुआ। हा, जेल मे वे हमे यूरोपियन वार्ड मे रखा सकने मे सफल हो गये है। यह सुनकर मै कुछ घबरा गई।*

---

*उस समय मुझे किसी ने यह नही बताया कि जेल भेजने का क्या कारण है? हा, बहुत दिन बाद मुझे मालूम हुआ कि पाकिस्तान सरकार को फौजी पुलिस की सी० आई० डी० ने यह इत्तला दी थी कि मुझसे बहुत से काश्मीरी लोग मिले हुए है। मैने उन्हे बहुत-कुछ कहा है बल्कि वहा के बहुत से फौजी भेद भी मै ले गई हू। इसलिये मेरा जम्मू जाना खतरनाक है। मुझे जेल मे रखना चाहिए।

हम सब लारी के पास आये। बच्चे सहमे हुए थे। हम भी घबराये हुए थे, परन्तु लाचार थे। जब हम लारी पर बैठने लगे तो श्री जी० के० रेड्डी ने मुझे तीस रुपये दिये। मैंने लेने से इन्कार किया। वह कहने लगा,

---

यह सब गलत बात थी। मैंने कोई फौजी भेद नही लिया था। न मुझे किसी आदमी ने यहा के फौजी भेद बताये थे। हा, मैंने केवल इतना ही किया था कि पाकिस्तान के बारे मे काश्मीरियो की राय पूछी थी। यह कोई जुर्म नही था। कई व्यक्तियो ने मुझे यहा तक कहा था कि जब तुम भारत जाओ तो हमारे सदेश ले जाना। और हमारी अमुक-अमुक बात पडित नेहरू और शेख साहब से कहना। यह बाते भी कोई फौजी भेद की न थी।

"हो सकता है किसी समय बच्चो के लिये जरूरत पडे, रख लीजिये।" पुलिस अफसर भी कहने लगा, "रख लीजिये न, बतौर कर्ज के ही सही, रख लीजिये। जब आपके पास होगा तो वापस कर देना।" मैने ले लिये। श्री रेड्डी ने कहा, "आपको कुछ दिन वहा पर रहना पडेगा। फिर आपको यह लोग जम्मू भिजवा देगे।" मैने श्री रेड्डी और उनके साथी को बहुत धन्यवाद दिया और कहा, "हमारे लिये आपने इतने दिन तक जो कुछ किया उसे मै कभी नही भूलूगी।" सबने बच्चो को प्यार से लारी पर बिठाया। मै भी लारी पर सवार हो गई। इतने मे वह काश्मीरी बैरा आया और उसने मेरा हाथ पकड कर अपने हृदय पर रखा। मैने देखा, उसका हृदय धकधक कर रहा था। उसने रोते हुए कहा, "अम्मा! ये बेगुनाह बच्चो को जेल ले जा रहे है। मेरा तो दिल फटा जा रहा है।"

मैने उसे धीरज देकर कहा, "प्रभु हमारे साथ है। उसी ने हर जगह हमारी सहायता की है वही अब भी करेगा।" इस बैरे ने हम लोगो की बहुत खिदमत की थी। वह बच्चो को बडे ही लाड-प्यार से खिलाता था। उसके प्रेम के कारण थोडे ही दिनो मे सबके शरीरो मे ताकत आने लगी थी। अब हमारे लिये वे आराम के दिन भी स्वप्न बन गये।

हम जेल पहुचे। बाहर फाटक पर लारी रोकी गयी और हमे अन्दर ले जाया गया। एक अफसर ने कहा, "आपको बी क्लास मे रखा जायगा। लेकिन नौकर आपके साथ नही जा सकते।" मैने कहा, "तब तो फिर जहा पर नौकर रहेगे वही पर हम भी रहेगे। हमे बी क्लास की जरूरत नही है।" मै जानती थी कि अगर हमने इनका साथ छोड दिया तो वे खत्म कर दिये जायेगे। जेल के बाहर रावलपिडी मे कौन किसी हिन्दू को जिन्दा देख सकता था। आखिर मेरे बहुत कहने पर वे मान गये।

जेल का बडा फाटक खुला। काफी अन्दर चले जाने के बाद एक और दरवाजा खुला। उसके अन्दर एक छोटा-सा बाग, बीच मे बडा-सा आगन और एक तरफ बडा-सा बराडा था। उसमे तीन चार कमरे थे। वही कमरे हमको दिये गये। जगह अच्छी साफ-सुथरी थी और काफी फर्श वहा

पर लगे हुए थे। साथ मे एक रसोई भी थी। हम यहा आ गये तब उन्होने पूछा, "बताओ तुम्हारे पास क्या है? माफ करना जेल का कानून ही ऐसा है?" मैंने वह जेवर जो मुजफ्फराबाद मे मेरे पास था और वह तीस रुपये जो श्री रेड्डी ने दिये थे निकाल कर दिये। जेवर उन्होने तोल लिया और कहा, "यह आप नही रख सकती। यह यहा के दरोगा के पास रहेगा। जब आप जायेगी तब आपको वापस दे दिया जायगा।" यहा पर जितने मुलाजिम और अफसर वगैरह थे सब बडे आदर से पेश आ रहे थे जिसे देखकर हमे बडी तसल्ली हुई। दरोगा तो हिन्दू था। पहले तो यह देखकर मैं हैरान हुई परन्तु बाद मे पता चला कि जेल के अफसर ने उसे अपनी जिम्मेदारी पर कुछ दिनो के लिये रख लिया है। जेल अधिकारियो ने हमारा काम करने के लिये कैदी मुकर्रर किये थे जो बारी-बारी से आकर हमारा काम कर जाते थे। इस अहाते का दरवाजा बन्द रहता था और पठान उसकी रखवाली करते थे।

हमे खाने-पीने की काफी सामग्री मिलती थी। दूध, घी अडे वगैरह सब ही चीजे दी जाती थी। इसके अलावा सब्जी भी काफी मिलती थी। बच्चो के खेलने के लिए केरम बोर्ड, ताश तथा लूडो सब उन्होने दिये थे। कुछ पुस्तके भी दी थी। मुझे पूजने के लिये श्रीकृष्ण की एक तस्वीर और धूप आदि तथा गीता और रामायण आदि पढने के लिये भी मिली। यहा पर हम अपने आपको स्वतन्त्र महसूस करने लगे। कहा तो तीन मास तक बच्चे चैन की सास नही ले सकते थे और कहा अब उन्हे इस प्रकार खेलकूद का अवसर और सुभीता मिला।

मैं और श्रीमती मोदी दोनो प्रात काल चार बजे उठकर बाहर आगन मे नल के नीचे खूब आनन्द से स्नान करती थी। उस सुनसान जगह पर तारो की टिमटिमाहट मे स्नान करना बहुत ही सुखद लगता था। सायकाल के समय घटो तक हम प्रेम से भगवान् का भजन करते थे। यहा पर किसी प्रकार की रोक-टोक नहीं थी।

'ए' क्लास मे कुछ सिख 'नेता' थे। उन्होने जब हमारे बारे में सुना

नो कहला भेजा, "आपको फिक्र नही करनी चाहिए। अब तो थोडे ही दिनो की कठिनाई है। शायद हम सब यहा से इकट्ठे जायेगे। तब हम आपकी हर प्रकार से सहायता करेगे। जेसे आपने अब तक हर बात का मुकाबला किया है उसी प्रकार आगे भी दृढ रहिये।"

उन दिनो यह खयाल किया जाता था कि जल्दी ही पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के कैदियो का तबादला हो जायगा। हमारा खयाल था कि हम यहा पर केवल चार पाच दिन के लिये आये है। परन्तु दिन गुजरते गये और हमारे जाने की बात भी दूर होती गयी। सारी पार्टी मुझे कोसने लगी कि तुमने यहा आकर गलती की। अब सारी उम्र यही पर सडना पडेगा। पर मैने उन्हे समझा-बुझा कर शान्त किया और बताया कि भविष्य के बारे मे कभी भी निराश नही होना चाहिए।

ऊपर मैने जिस दरोगा साहब का जिक्र किया है वह घटो हमारे पास बैठा रहता था। अपने बच्चो को हमारे बच्चो के साथ खेलने के लिये भेजता था। वह हमसे कहा करता था कि न जाने ये लोग आपका इतना खयाल क्यो रखते है? शायद ऊपर से हिदायत है। एक दिन सचमुच इस बारे मे यहा के कमिश्नर का फोन भी आया था। श्रीमती मोदी के पैरो मे कुछ तकलीफ हो गई थी। एक कम्पाउडर रोज आकर पट्टी कर जाता था। मेरी और श्रीमती मोदी की कमीजे बिल्कुल फट गयी थी। जेल के दारोगा ने दो नई कमीजे और दो चप्पले बनवा दी थी। यही पर मैने अपने पिता, देवरो तथा अन्य रिश्तेदारो को पत्र लिखे। यहा से काश्मीर को पत्र नही जा सकता था। इसलिये पहले उन्हे भारत मे एक परिचित के नाम भेजा गया। वहा से उन्होने उन्हे काश्मीर भेज दिया। इस प्रकार तीन महीने के बाद मेरे रिश्तेदारो को मेरे बारे मे मालूम हुआ।

जो पठान हमारे दरवाजे पर पहरा देते थे वे कभी-कभी अन्दर आकर हमारे साथ बाते करते थे। कहते थे कि आजकल उन्हे बडी तकलीफ है। वे दिन-रात काम पर लगे रहते है, पर उनका ध्यान घर पर रहता है। आजकल कबाइलियो ने गाव-गाव मे लूट-मार मचा रखी है। इन्हे सभालना

अब बडा मुश्किल हो गया है। कुछ को तो हुकूमत ने लडाई के लिये बुलाया है पर कुछ खुद ही लूट-खसोट करने आ गये हैं। यह लोग और भी कितनी ही बाते करते थे परन्तु मै उन्हे यही समझाती कि प्रेम से काम लो और साम्प्रदायिकता को दूर फैंको। यह तुम्हारा साथ नही देगी। मै देखती थी कि सब मेरी बातो को बडे ध्यान से सुनते थे। कभी-कभी हम उन्हे खाना भी खिलाते थे।

तिथि के हिसाब से मेहता साहब को शहीद हुए तीन मास हुए और अष्टमी आयी, तो मैने जेल-कर्मचारियो से कहा, "भाई! मेरे पास खाने-पीने का काफी सामान है मै कुछ कैदियो को भोजन कराना चाहती हू।' वे लोग मान गये और कुछ साधु कैदियो को भोजन कराने ले आये। इन दिनो बापू ने भारत मे आमरणव्रत रखना आरम्भ किया था। कुछ जेल के मुसलमान कर्मचारी आकर मुझसे कहने लगे, "देखो! हिन्दुस्तान की चाल, वह सब तरफ रुख बदलता है।" मैने उनसे कहा, "आज नही तो कल तुम लोग इस बात की बडी इज्जत करोगे। अभी तुम्हारे दिलो मे द्वेष की अग्नि धधक रही है जब यह ठडी हो जायगी तब तुम्हे भले-बुरे का ज्ञान होगा।"

: २४ :

फिर नरक में

इस जेल मे दो सप्ताह व्यतीत हो गये। इन्ही दिनो दारोगा ने अपना परिवार अम्बाला भेज दिया। एक दिन रात को स्वप्न मे मैने एक वृद्ध महात्मा देखा। उसने मुझे कहा, "तीन दिन मे तुम यहा से जा रही हो।" प्रात काल मैने सबको यह स्वप्न सुनाया तो किसी को विश्वास न आया। पर तीसरे दिन जब हम खाना खा रहे थे तो दारोगा ने आकर कहा, "आपको मुबारक हो। आप लोग आज जम्मू जा रहे है। शीघ्रतापूर्वक तैयार हो जाइये। परन्तु किसी दूसरे को पता नही लगना चाहिए। कमिश्नर की

ऐसी ही हिदायत है।" हम सब तैयार हो गये। सब प्रसन्न थे कि अब हमारे दुखो का अन्त आ पहुचा है। ठीक चार वजे कमिश्नर ने दो अफसरो के साथ अपने यहा से स्टेशन वेगन भेजी। जब हम जाने लगे तो सब कैदी, कर्मचारी आदि जो इतने दिनो मे हमारा काम कर रहे थे बडी हमदर्दी मे प्रार्थनाए करने लगे कि ईश्वर इन बच्चो को कुशलता पूवक इनके वतन पहुचावे। जाते समय जेल का दारोगा जेवर और तीस रुपये मुझे वापस दे गया। मैंने सब को धन्यवाद दिया और कार पर सवार हुई। यह लोग हमे कमिश्नर की कोठी पर ले गये। यहा काफी फौजी सिपाही थे। एक मुसलमान हमसे आकर पूछने लगा, "क्या तुम शेखनिया बनी हो ?" मैंने कहा, "नही, हम हिदू है गेन नही है और न बनेगे।" वह नाक-भौ सिकोड कर चला गया। इतने मे दोनो अफसर आये। यह दोनो देखने मे पठान लगते थे। उन्होने हमे लारी पर बैठने को कहा। हम लारी पर बैठ गये। उसमे ओर भी कुछ आदमी थे जिनमे से एक मुजफ्फराबाद का भी था। यह सब मुसलमान थे। मैंने पूछा, "ये अफसर कौन है ?" जवाब मिला, "एक वजीर वजारत, मीरपुर, पेशावर के प्राइम मिनिस्टर का भाई और दूसरा सी० आई० डी० का सुपरिन्टेडेट है। यह लोग आपको ले जाने के लिए आये है।" सी० आई० डी० के अफसर ने हमारी लारी के शीशो पर परदे लगवा दिये ताकि बाहर के लोग न देख सके। मुझसे आकर कहने लगा, "क्या करे ? हालत ऐसी ही खराब है। लोग काबू से बाहर हो गये है। यहा से आपको बडी हिफाजत से ले जाना पडेगा।" आगे-आगे मोटर चली, उसके पीछे एक ट्रक जिसमे कुछ सैनिक तथा रजाइया भरी हुई थी। बाद मे हमारी लारी थी और उसके पीछे फिर एक ओर ट्रक था। हम सबका यही खयाल था कि ये लोग हमे जम्मू सीमा पर ले जा रहे है।

जब हम जेहलम पहुचे तो काफी अधेरा हो गया था। वहा पर हम रुके। और एक मकान के एक कमरे मे सोये। प्रात काल हमारे कमरे मे वही मुजफ्फराबाद वाला आदमी आया, जो लारी मे हमारे साथ था। मैंने उससे पूछा, "यह लोग हमे जम्मू सीमा पर कब ले जायेगे ?" वह कहने लगा, "यह

लोग आपको जम्मू नही, मीरपुर जिले मे ले जा रहे है।" यह सुनकर हम सब हैरान रह गये। उन्होंने हमे धोखा क्यो दिया? मैंने वजीर वजारत (डी सी) को अपने कमरे मे बुलाया और पूछा, "हमे आप लोग कहा ले जा रहे है?" वह कहने लगा, "मै आपको जिला मीरपुर ले जा रहा हू।" मैंने कहा, 'आपने हमारे साथ धोखा किया। हम समझ रहे थे कि आप लोग हमे जम्मू सीमा पर ले जा रहे है। आप हमे फिर मुसीबत मे फसाना चाहते है। क्या आपको उस प्रभु का डर नही?" यह कहते हुए मेरा गला भर आया और आखो मे आसू आ गये।

वह कहने लगा, "आप फिक्र न करे। आपके साथ कोई धोखा नहीं किया गया है। मुझे आप नही पहचानती, मै भी काश्मीर मे सवजज था। मै आपके पति को जानता हू। मै पेशावर के प्राइम मिनिस्टर का भाई हू।" उसने अपना नाम बताया और कहने लगा, "मुझे कुछ दिन पहले ही मालूम हो गया था कि यह सब होने वाला है। इसलिए मै अपने बच्चो को पेशावर पहुचा आया था। अब मै आजाद काश्मीर के साथ काम कर रहा हू। क्या मेहता साहब को पता नही था कि यह सब होने वाला है? उन्हे चाहिए था कि वे वहा से हट जाते या आप लोगो को श्रीनगर भेज देते।"

मैंने कहा, "मेहता साहब अपने परिवार और मुजफ्फराबाद के लोगो मे भेद नही समझते थे। क्या उन सबकी जानो से हमारी जानें कीमती थी? अगर वह चाहते, तो उस समय भी छिपकर बच सकते थे, परन्तु उन्होंने कर्त्तव्य के आगे चार दिन की जिन्दगी को ठुकरा दिया।" वह कहने लगा, "खैर, उन्होंने जो किया अच्छा किया। पर इन बच्चो की और आपकी जिन्दगी कैसे कटेगी। क्या आपने कभी इसके बारे मे भी सोचा है?" मैंने कहा, "उसकी मुझे कोई फिक्र नही है। मेरा दृढ विश्वास है कि अच्छी बातो का नतीजा कभी बुरा नही होता। वह सत्य पर बलिदान हुए है और सत्य पर ही हम चल रहे है और वही हमारा साथ देगा।" इस पर वह बोला, "आपको कोई फिक्र नही करनी चाहिए। आपको हम अलीबेग कैम्प में नहीं भेजेगे। आपके लिए हमने अभी दो हफ्ते पहले कुतियाल नामक जगह पर

नया कैम्प खोला है। वहा पर एक बड़ा शरीफ बूढा ठेकेदार है। उसी के मकान में यह कैम्प खोला गया है। मैंने बड़े-बड़े घरो की औरतो को, जो मुसलमानो के घरो मे थी, निकलवा कर वहा पर रखा है। वहा से सभी को एक साथ हिंदुस्तान भिजवाया जायगा। उनके बदले में हमे मुसलमान औरते वहा से मिलेगी। आप आजाद काश्मीर के कैदी है इसलिए आपको रावलपिडी मे नही रखा जा सकता। मैं आज दिन मे काम पर जा रहा हू। शाम को आकर आपको दुतियाल पहुचा दूगा।" मेरी बड़ी लड़की वीणा ने उसे पहचान लिया। पूछा, "आपकी लड़की मेरी क्लासफेलो थी, अब वह कहा पर है ?" इसपर वह कुछ समय चुप रहा और फिर ठडी आह भर कर कहने लगा, 'वह सब लोग पेशावर मे है। तुम्हे फिक्र नही करनी चाहिए, बेटी। सब अच्छा होगा। मैं आजकल वहा का डी० सी० हूँ। मैं आप लोगो का हर तरह खयाल रखूगा।" इतना कहकर वह चला गया।

मैं विचार करने लगी कि हर नई मुसीबत मे प्रभु कोई-न-कोई सहारा बना देते हैं। सब बाते हमारी परीक्षा के लिए होती है। मैंने श्रीमती मोदी से कहा, "हम बड़े खतरे मे जा रहे है। वह मुजफ्फराबाद से भी कठिन है। मैंने ही आप सब से चलने के लिए कहा था, पर मैं नही जानती थी कि अभी हमे और ठोकरे खानी हैं।" सब पार्टी घबरा गई परन्तु चुप रहने के अलावा और चारा ही क्या था।

शाम को डी० सी० आया और हमसे चलने को कहा। तब काफी अधेरा हो चुका था। ट्रको मे रजाइया भरी हुई थी। उन्ही के ऊपर हमे बिठाया गया। वह सफर कितना भद्दा था। बच्चे यह सब देखकर ठडी आहे खीचने लगे। मैंने कहा, "अब तुम्हे फिर एक और बड़ी परीक्षा की तैयारी करनी होगी जो बीते हुए दिनो से भी कठिन है। परन्तु हिम्मत रखो और खुशी से इन ट्रको पर चढो। भगवान् तुम्हारी परीक्षा ले रहे हैं।" ट्रक तेजी से चल पड़ी। साथ ही वह लोग मोटर में चले। रास्ते भर पठान ही पठान नजर आते थे। तेजी से चलने के कारण हमे बैठने मे बड़ी कठिनाई हो रही थी। गिरने का भय लगा रहता था। तेज हवा के झोके चल रहे थे। जैसे-

तैसे हम एक स्थान पर पहुचे। यहा ट्रक रुकी। डी० सी० ने कहा, "दुतियाल यहा से दो मील पर है। आपको पैदल जाना पड़ेगा क्योकि वहा ट्रक नही जा सकती। मै यहा से दूसरी जगह जा रहा हू। आपके साथ एक और आदमी जायगा। वह आपको कैम्प तक पहुचा देगा। परन्तु आपके नोकर वहा नही जा सकेगे। वहा मर्दो को रखने की इजाजत नही है।" मैने कहा, "यह नही होगा। हम जहा जायेगे ये भी साथ ही जायेगे। मै इन्हे किसी भी हालत मे अलग नही कर सकती।" वह कहने लगा, "अच्छा। मुझे आपके लिए यह कायदा तोड़ना पड़ेगा। आप इन्हे साथ ही ले जाइये। मीरपुर के मगलाभाई जागीरदार का परिवार वहा पर भेजा गया था परन्तु जागीरदार को वहा रहने की इजाजत नही मिली थी और वह अलीवेग कैम्प मे भेज दिया गया था। वही पर कुछ दिन वाद उसे किसी ने कत्ल कर दिया।"

हम सब एक आदमी के साथ अपनी नई मजिल का सफर करने चल पड़े। रास्ता खेतो मे से होकर जाता था। मुजफ्फराबाद के उस व्यक्ति ने मुझसे कहा था कि जरा सभल कर जाना। यहा के लोग बड़े जालिम है; परन्तु इसका इलाज सिवाय धीरज और ईश्वर-विश्वास के और क्या था। थोडी देर मे हम वहा पहुच गये। साथवाले व्यक्ति ने बाहर से आवाज दी। एक आदमी ने दरवाजा खोला और हमे एक कमरे मे ले जाया गया। कमरा क्या था, नरक था। इसमे पचास स्त्रिया तथा बच्चे थे। जमीन पर घास पटी हुई थी, उसी पर सब लेटे हुए थे। कमरे मे धीमी-धीमी रोशनी हो रही थी। सारा कमरा खचाखच भरा हुआ था, कही पर पाव रखने की जगह नही थी। वहा पर इतनी दुर्गन्ध थी कि हमारा दम घुटने लगा और एक मिनट खड़ा रहना मुश्किल हो गया। सब स्त्रिया घबराई हुई-सी नजर आती थी और सूख कर काटा हो गई थी। तीन-चार बूढी स्त्रियो को छोड बाकी सब नव-जवान महिलाए थी। वे हमसे कहने लगी, "आप यहा पर क्यो आई है? यहा पर बहुत मुसीबते है। रोज पठान यहा से गुजरते है। कई बार उन्होने यहा आने की कोशिश की है। बहन, इस जिन्दगी से तो मरना ही अच्छा है। हम चक्की पीसती है। हमारे मुखो मे सूखा बाजरा खा-खाकर पस पट

गई है।" दो-चार स्त्रियो ने तो अपने मुह भी खोल कर दिखाये। सचमुच जख्म ही जख्म थे। फिर कहने लगी, "देखो, कितनी जुए हमारे वालो मे पडी हैं। वे हमारे बिस्तरो के ऊपर रेग रही है।" उन्होने मुझे रोशनी मे वह बोरिया दिखाई जो वह ओढे हुए थी। सचमुच इनपर जुए रेग रही थी।

हम सब यह देखकर बहुत घबराये और हमारा धीरज जाता रहा। फिर दो-चार को छोडकर वे सब कलमा पढने लगी। मैंने पूछा कि यह क्या है तो वे कहने लगी, "हम तो पक्की मुसलमान है। तीन-तीन महीने तक हम उनके घरो मे रही हैं। अब हमे यह लोग यहा लाये है। कहते है कि तुम्हे हिंदुस्तान भेजेगे। देखा जायगा जब भेजेगे। अभी तो ये लोग हमारी और भी बेइज्जती करना चाहते है। यह कैम्प जो इन्होने बनाया है इसकी हर जगह यही शोहरत हो गई है कि जगह-जगह की नवजवान तथा सुन्दर स्त्रिया यहा पर है। हर समय पठान और आजाद काश्मीर के आदमी बुरी नीयत से यहा आते है। परन्तु हमारी किस्मत से यहा का कैम्प कमाडेट अच्छा है। वह किसी को अन्दर नही आने देता। इसी कारण वे लोग उसके भी वैरी हो गये है। अगर तुम यहा पर रहोगी तो सब कुछ मालूम हो जायगा।" मेरे साथी यह सुनकर रोने लगे और कहने लगे, "न जाने इस डी० सी० को क्या सूझी जो हमे यहा ले आया?" मै अन्दर नही ठहर सकी और बाहर आगन मे आकर खडी हो गई। इतने मे कैम्प कमाडेट जिसे वहा ठेकेदार कहते थे, अन्दर आया। इसकी आयु करीब पचास साल की थी। देखने से वह कोई भला आदमी जान पडता था। आते ही मुझे कहने लगा, "आपको यह लोग यहा क्यो ले आये, यहा तो बडी तकलीफे है। यहा पर तो हर समय कबाइलियो का डर लगा रहता है। इस कैम्प की शोहरत फैल गई है कि यहा पर जवान स्त्रिया है ओर वे लोग भी यही है जिनके घरो से यह औरते निकालकर लाई गई है, वे इन्हे फिर भगाकर ले जाना चाहते है। क्या कहू यह औरते भी बडी अजीब है। कहती है हम हिन्दुस्तान नही जायेगी। हमे उन्ही के साथ भेज दो। यहा पर मै हू और एक मेरा नौकर है। इसके अलावा मैंने अपनी एक रिश्तेदार ओरत खाना पकाने के लिए रखी है। अपना सब

खान्दान जेहलम पहुचा आया हू। अपने सब मकान इस अहाते मे कैम्प के लिए खाली कर दिये है। मेरी भी लडकिया है, मै इन्हे उन्ही के समान समझता हू। मुझे तो खुदा पर भरोसा है। वही बचाएगा। जिस काम को जिम्मेदारी मैंने ली है उसको आखिर तक निभाऊगा। आजाद काश्मीर वालो ने कोई खास इन्तिजाम नही किया है। कल की बात है कि पठानो का लीडर बादशाह गुल कुछ अपने पठान सिपाहियो के साथ यहा आया। साथ मे एक लारी तथा मशीनगन भी लाया था। वह यहा से कुछ जवान लडकियो को लेने आया था। बताइये, अगर खुदा ही मेरी मदद न करता तो मै उनका मुकाबला कैसे कर सकता था। यहा आकर उन्होने दरवाजे खटखटाने शुरू किये और गालिया दे देकर कहने लगे, "खोलो किवाड, नही तो हम तोड देगे।" मै ऐसा नीच काम कभी भी नही कर सकता था कि इन बेगुनाह, पनाह मे आई हुई लड़कियो को उनके हवाले कर देता। चाहे वे लोग मुझे मार ही क्यो न देते। यह लोग इस्लाम के नाम पर धब्बा लगा रहे है लेकिन मै दुनिया को बता दूगा कि सच्चा इस्लाम क्या है ? और वह क्या फरमाता है। जब वह लोग बहुत दिक करने लगे तो मै पिछली दीवार फाद कर गाव से चला गया और वहा पर मैंने गाववालो को इकट्ठा किया और कुछ आदमियो को गोविन्दपुर थाने पर इत्तला देने के लिए भेजा। गाववालो को देखकर वे लोग चले गये। मै उन मुसलमानो मे से नही हू जो कि मजहबी ताअस्सुब की वजह से अपना ईमान खो बैठते है। कल आपको और भी यहा की बाते सुनाऊगा। ऊपर की मजिल मे और भी औरते है। आज आपको बाहर की तरफ के कमरे देते है। कल मै अपने साथवाला कमरा आपके लिए खाली कर दूगा। आप लोग अपना सब इन्तिजाम अलग कर ले। रात को जरा सभल कर सोना। जालिमो का बडा खतरा रहता है। इन दो हफ्तो मे उन्होने कई बार यहा पर हमले करने की कोशिश की है।" मैंने कहा, "आपके विचार बडे ही अच्छे है। मुझे आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। मै आपसे बहुत कुछ सीखूगी। आपको क्या कठिनाई हो सकती है। आपकी सहायता सच्चाई करेगी जिसको आपने अपनाया है।"

हम सब लोग बाहर के कमरे मे आये। यहा भी काफी सामान था।

नौकरो ने सामान एक तरफ रखा और नीचे घास विछा कर उसपर हमारे विस्तरे विछाये, परन्तु रात भयानक दिखाई दे रही थी। सब इस नई आने वाली विपत्ति के कारण घवराये हुए थे। मैं भी हौसला हार चुकी थी। विशेषकर मुझे इन स्त्रियो की दशा पर रोना आ रहा था। साथ ही लडकियो और ओम् व जोधा की भी चिन्ता थी। न जाने किस समय इन्हे जान से हाथ धोना पडे।

इसी सोच मे मेरी आखो से आसू बहने लगे कितनी कोशिश की कि दिल को सभालू, परन्तु वेकार। तरह-तरह के विचार मन मे आये। क्या भारत की नारी मे इतनी कायरता आ गई है, जो वह अपने आत्म-गौरव को खो बैठी है। उसे तो जन्म से ही मरना सिखाया जाता था किन्तु अव तो इन लोगो मे कष्ट सहन करने की कोई शक्ति ही नही रह गई है। यह सोचकर मैंने निश्चय किया कि चाहे कुछ भी हो अपने ऊपर विपत्ति लेकर इन्हे भारत ले जाऊगी और इन्हे हिम्मत देने की कोशिश करूंगी ताकि यह दु ख का मुकावला खुशी-खुशी कर सके।

इसी तरह रात बीत गई। प्रात काल वारी-वारी से स्त्रिया मेरे कमरे मे आने लगी और अपनी दु ख-भरी गाथा सुनाने लगी। जिसे सुनकर दिल काप उठता था। मुझे अपनी बीती इनके दु खो के सामने तुच्छ जान पडी। मै इतना रोई कि मेरे सभी साथी परेशान हो गये। वे हैरान थे कि इसको आज क्या हो गया है? पूरे दो दिन तक मेरी यही दशा रही।

दुतियाल कैम्प से कोई चार मील दूर गोविन्दपुर गाव था। आज़ाद काश्मीर वालो ने जिले का दफ्तर यही पर रखा था। थाना भी यही था। इस इलाके मे पठान वहुत फैले हुए थे। वे यहा के मुसलमानो तक को भी लूटते थे। उनके पशु वगैरा मारकर खा जाते थे। इसलिए आजाद काश्मीरवालो ने जिम्मेवार अफसर सव पठान ही रखे थे। पुलिस भी पठानो की रखी थी परन्तु फायदा कुछ नही था। जब पठानो का काफिला निकलता तो किसी की हिम्मत नही पडती थी कि उन्हे रोके। इन स्त्रियो के मुख से जो सुना, उससे यही अनुमान होता था कि मीरपुर के मुसलमानो ने हिन्दू स्त्रियो, वच्चो तथा

मरदो पर जितने जल्म किये थे, शायद ही उतने किसी जगह हुए हो।

सायंकाल के समय गोविन्दपुर से तीन कालिज के लड़के आये। ये पेशावर से यहा के कैम्पो की देख-रेख करने आये थे। इनमे से एक यहा के डी० सी० का भतीजा था और बाकी दो उसके मित्र थे। ये मेरे पास आये और मेरी लाल आखे देखकर बोले, "आप इतनी घबराई हुई क्यो है?" मैने कहा, "कल से इन स्त्रियो की दशा देखकर मेरा मन काबू से बाहर हो गया है।" वे कहने लगे, "आगे सब ठीक होगा। अब तक जो होना था सो हो गया।" मैने कहा, "आप यह क्या कह रहे है। क्या आपने यह कैम्प मजाक के लिए बनाया है। दिखावे भर के लिए दो बूढे सिपाही रख छोडे है। प्रतिदिन पठानो का खतरा रहता है। इनकी यह दशा है कि न इनके पास बिस्तरे है और न कपडे। घास पर पडी रहती है और दो-दो रोटिया खाने को मिल जाती है।" वे कहने लगे, "ये सब बाते हम डी० सी० से कहेगे।" उनमे डी० सी० का भतीजा बहुत ही शरीफ दीख पडा। कहने लगा, "अगर आप अलीबेग कैम्प की हालत देखे या पूरी तौर से सुने तो आपको मालूम होगा कि यहा पर इनको कितना आराम है।"

वह कैम्प क्या था काफी बडे अहाते मे चार पाच मकान एक साथ बने हुए थे। बीच आगन के एक कुआ था। आस-पास मीलो तक खेत-ही-खेत थे। पास मे थोडी दूरी पर मुसलमानो के नौ दस घर थे। इस मकान के निचले हिस्से मे पचास औरते और बच्चे थे। इन सबका खाना एक जगह बनता था। बारी-बारी से वे स्वय खाना बनाती थी। उन्हे एक मिट्टी की हडिया मिली हुई थी। उसी मे दाल बनाती थी और तदूर मे रोटिया लगा लेती थी। दूसरी मजिल मे तीस के करीब औरते और बच्चे थे। ये अपना खाना अलग पकाती थी। यहा मुझे कुछ मीरपुर की जानी-पहचानी औरते मिली। श्रीमती मोदी की भी कई परिचित थी।

सायकाल को सी० आई० डी० का सुपरिन्टेडेट मेरे पास आया और मुझे अलग बुला कर कहने लगा, "मुझे बताइये कि आप अपना जेवर या रुपया मुजफ्फराबाद मे जमीन मे गडा हुआ तो नही छोड आई है। अगर

हो तो हम वहा से मगवा कर आपके लिए यहा खर्च करेगे।" मैंने कहा, "मेरा जेवर या रुपया जो कुछ भी था वह कोठी मे ही रह गया। मैंने कही गाडा नही था।"

मैंने फिर उससे वडी नरमी से कहा, "मैंने यहा आकर बहुत कुछ सुना ह। अगर तुम हमारा या इन बहनो का पूरा प्रबन्ध नही कर सकते तो यह कैम्प क्यो बनाया है ? आपको इनके साथ अच्छी तरह सलूक करना होगा और जो यहा पर पहरा देते है, उनसे भी यही कहना होगा।" उसने पहरे वाले बूढे सिपाहियो को मेरे सामने बुला कर कहा, "इनका खास ध्यान रखना। अगर कोई भी शिकायत आई तो तुम लोगो को गोली से उडा दूगा।"

इन सिपाहियो की बाबत मैंने वहुत कुछ सुना था कि इनका कैम्प की स्त्रियो के साथ बहुत बुरा सलूक था। डी० सी० भी आया, उसने सबको एक एक-नई रजाई दी और हमारे पास जो पुरानी रजाइया थी वह ले ली

: २५ :

भारत नहीं जाएंगी

एक दिन कैम्प कमाडेट मुझसे कहने लगा, "वहन जी ! ये औरते हिन्दु-स्तान नही जाना चाहती। इनमे से केवल थोडी-सी है जो जाना चाहती हैं। मै इनको वहुत समझा चुका हू परन्तु ये मानती ही नही। अब डी० सी० के सामने इनके बयान होगे, जो जाने पर राजी होगी उन्हे भेजा जायेगा, जो नही जाना चाहेगी, उन्हे जिनके घर से लाये थे, उन्ही के घर वापस भेज दिया जायेगा। देखिये, इतने अमीर घरो की औरतो को कसाई, मजदूर, किसान तथा मोची वगैरह भगा कर ले गये। यह उनके पास तीन-तीन महीने तक रही। इस काम मे आप मेरी मदद करे और जब मैं बाहर जाऊ तो आप इनकी देख-रेख करे। आपको इस कैम्प पर पूरा हक है।"

उसकी बाते सुनकर मै वहुत प्रभावित हुई और मैंने उसकी सहायता करने का निश्चय किया। मैंने सब स्त्रियो से कहा कि कल हम सब प्रात

काल तथा सायकाल मिलकर भगवान् का भजन करेगी। कुछ तो मान गई परन्तु कुछ कहने लगी, कि वे तो मुसलमान है। वे भजन मे शामिल नही हो सकती। मैने उन्हे समझाया कि आना होगा क्योकि भजन करने से किसी का धर्म नही जाता। दूसरे दिन ईश्वर-भजन के लिए जो स्त्रिया आई उनसे मैने कहा, "दो साल हुए, मुझे श्रीनगर मे एक महात्मा मिले थे, जिन्हे सब मगन बाबा कहते है। उन्होने मुझे सदा मगन रहने का उपदेश दिया था। उन्होने मुझे कुछ ऐसे भजन बताये थे जिनसे सचमुच मुझे बल मिलता रहा। वही भजन मै यहा बताऊगी। और देखो आज तक तुमपर जो बीती, सब जबरन थी, तुम्हारा कोई दोष नही था। अब आगे जो बुरा करोगी वह पाप होगा क्योकि वह तुम जान-बूझकर करोगी। इस मुसीबत से तुम्हे सबक सीखना चाहिये, अपना कर्तव्य नही भूलना चाहिये।"

मेरी बाते सुनकर वे कहने लगी कि उनपर क्या बीती है? क्या बताये। उनके सामने उनके पति और बच्चे कुल्हाडो से कत्ल किये गए है। कातिल कहते थे कि वे काफिरो पर छ आने की गोली खर्च नही करेगे। वे उन्हे अपने घर ले गये ओर उनसे निकाह किया। उनकी गोदी के बच्चे रास्ते मे फेक दिये गये। एक स्त्री ने कहा, "मैने पहाडी से नीचे छलाग लगाई कि जान निकल जाय। कमर टूट गई पर जान नही निकली।" दूसरी बोली, "मै कुए मे कूद गई थी। वे मुझे कुए से निकाल लाये।" एक ने अपना बदन और मुह दिखाया जिसपर बरछो के कई घाव थे। वह बोली, "मैने कहकर अपने ऊपर पाच बार बरछो से करवाये परन्तु मै मरी नही। हुआ वही जिससे मै डरती थी। अब तुम कहती हो, यह करो, वह करो, बताओ कहा है तुम्हारा ईश्वर?"

मैने किसी तरह उनको ढाढस बधाया और सब मिलकर ईश्वर-भजन करने लगी। उसके बाद यह प्रतिदिन का नियम बन गया। अन्त मे कई दिन के उस परिश्रम का यह परिणाम हुआ कि सब हिन्दुस्तान आने को राजी हो गई। उन्होने डी० सी० को बयान दिया कि चाहे हमारे टुकडे कर दो पर हम भारत ही जायेगी।

कुछ ही दिनो मे प्रभु की कृपा से कैम्प की हालत सुधर गई। पहरे के

लिये और सिपाही आ गये। अब भी प्रतिदिन लोगो के घरो से दो-दो चार-चार स्त्रिया लाई जाती थी जिन्हे समझाने के लिए मुझे कई-कई दिन लग जाते थे। यहा तक कि मुझे उनके साथ सख्ती भी करनी पडती थी, परन्तु अन्त मे वे सब अपने कर्त्तव्य को समझ जाती थी।

बाद मे छानबीन करने पर पता चला कि जो स्त्रिया भारत नही आना चाहती थी, उसमे उनका दोष नही था। उन्हे यह कहा गया था कि ये लोग तुम्हे हमारे घरो से निकाल कर पठानो के हाथ मे दे देगे। अगर तुम हिन्दुस्तान भी गई तो तुम्हारे साथ कोई बात तक नही करेगा। मैने उन्हे विश्वास दिलाया, कि वे बेफिक्र रहे। माना यहा पठानो का डर है। परन्तु हम भी तो उनके साथ है। मैने उनसे वादा किया कि अपनी लड़कियो से पहले मै उन्हे बचाने की कोशिश करुगी। और उन्हे हर तरह से दृढ रहने की बात सुझाई। जब उन्होने मेरे प्रेम को समझा तो वे सब तैयार हो गई। कहने लगी, कि भारत पहुचकर, जो मै कहूगी, वही वे सब करेगी। इसपर भी वे कभी-कभी यह सोचकर निराश हो जाती थी कि हम कभी भारत जावेगी भी या यहीं घुल-घुल कर मर जायेगी। परन्तु मै उन्हे कहती, "अपने भविष्य के बारे मे निराश मत होओ। जो होगा, अच्छा ही होगा। तुम सबको कहना चाहिए, कि तुम भारत जाओगी।"

सब सिपाही मुझे माताजी कहते थे। गाव से भी मुसलमान स्त्रिया मेरे पास आती थी। और घटा बैठ कर तरह-तरह की बाते पूछती थी। मै उन्हे समझाती थी कि जो कुछ इस इलाके मे हो रहा है या हुआ है, वह तुम लोगो पर मुसीबत लायेगा। तुम स्त्रिया हो, तुम्हे स्त्री-जाति के इस अपमान को महसूस करना चाहिये। ये जो हिन्दू स्त्रिया तुम्हारे घरो मे जा रही है, ये आग की चिनगारिया है किसी भी समय भड़क उठेगी। घरो मे कितनी फूट पड़ रही है। जब कोई व्यक्ति किसी हिन्दू स्त्री को अपने घर ले जाता है तो पहली स्त्री, उसके बच्चे और मा-बाप, सब से झगड़ा हो जाता है और तुम्हारी जिन्दगी नरक बन जाती है। अगर तुम सब बहने मिल कर सहायता करो, तो एक तो जिस स्त्री पर अत्याचार हो रहा है वह बच जायेगी और

दूसरे तुम्हारा घर नरक नही वनेगा।" मेरी यह बात उनके मन मे बैठ गई और वे इस बात की निन्दा करने लगी। उन्होने मुझे कई लडकियो का पता वताया, जो कैम्प मे रहनेवाली स्त्रियो की पुत्रिया थी। मैंने कैम्प के सिपाहियो की सहायता से उन्हे लोगो के घरो से निकलवाया। ये लोग मेरी बात मानते थे।

इस काम मे कैम्प के कमाडेट ने भी वडी सहायता की अब रोना-धोना कम हो गया। शाम-सवेरे हम सव मिलकर भजन करने लगी। कुछ मुसलमानो ने इस वात पर एतराज किया कि यहा भजन क्यो पडे जाते है? रात को जव हम भजन करते थे, तो ये लोग वाहर खाली फायर करते थे और हमसे आकर कहते थे कि पठान आये है, भजन वन्द करो। हम बन्द नही करते थे, परन्तु जव उन्होने बहुत एतराज किया तो हम आहिस्ता-आहिस्ता भजन करने लगी, परन्तु छोडा नही। वे भी समझ गये कि अव यहा दाल गलनेवाली नही है। इसलिए उन्होने एतराज करना छोड दिया इतना कुछ होते हुए भी वहा हर समय कबाइलियो का भय रहता था। अक्सर कबाइलियो की पार्टिया जब उस रास्ते से होकर नौशहरा के मोर्चे पर जाती थी तो कैम्प मे उसका भय छा जाता था। थी भी भय की बात। जिनके घरो से स्त्रिया यहा लाकर रखी गई थी वे उन्हे वताते थे कि यहा अच्छे-अच्छे घरो की नव-युवतिया है। इसलिए जब उनकी पार्टिया हमारे कैम्प के सामने से गुजरती तो सारे कैम्प मे सन्नाटा छा जाता था। कोई स्त्री ऊचा सास तक नही लेती थी। कोई घास मे तो कोई कही कोने मे छिप जाती थी। रोने मे हसने की बात यह थी कि इस भय मे वे मेरी ओर देखती रहती थी कि जो उपदेश मैं उन्हे देती हू खुद उसका पालन करती हू या नही। कभी-कभी वे मुझे घेरकर बैठ जाती थी। तब मैं उनसे कहती, "डरो मत। दृढ रहो और पूरी ताकत से विपत्ति का सामना करो। अगर अभी से डर के कारण अपनी शक्ति खो दोगी, तो समय पर अपनी रक्षा नही कर सकोगी। मै आहिस्ता-आहिस्ता राम-नाम जपती थी, वे भी जपती जाती थी और इस प्रकार भय टल जाता था। मेरा छोटा लडका विमल जब सुनता था कि कोई पार्टी आ रही है तो

झट बाहर से दौड़कर मेरे पास आता और मुझसे कहता, "सुनो माताजी ! पठानो की पार्टी इस तरफ आ रही है। तुम चिंता मत करो। तुम यही बैठो और लडकियो को घास मे छिपा दो। मैं बाहर जाता हू। मैं किसीको तबतक अन्दर नही आने दूगा जबतक मैं जिंदा हू।" वह निर्भय होकर बाहर चला जाता था। मैंने उसे एक दिन भी नही रोका। मैं उसका दिल तोडना नही चाहती थी और साथ ही उसे यह भी नही जताना चाहती थी कि वह बालक कुछ नही कर सकता। उसके जाने के बाद मैं अक्सर दोनो हाथो से अपना सिर थाम लेती थी, मा की ममता आखो से आसू बन कर बहने लगती थी। कभी-कभी सोचती थी, जाने जिंदा लौटेगा भी या नही। कैम्प की स्त्रिया अक्सर मुझसे कहती थी कि तुम इसे रोकती क्यो नही ? कही बाहर गोली चली, तो बच्चे से हाथ धो बैठोगी। मैं कहती, "मैं सब कुछ जानती हू पर मैं उसे डराना नही चाहती।"

इस रोज-रोज के हमले से हम सब बहुत तग आ गई थी। परन्तु सहते रहने के अलावा और कोई इलाज भी नही था। एक बार मैं सब बच्चो को लेकर बैठी हुई थी। रात का समय था। सब कहने लगे कि अब यह जीवन-लीला समाप्त होनी चाहिये। ऐसे कबतक चलेगा ? यहा से छूटने की कोई उम्मीद नही है। अब गर्मी आ रही है। खेतो मे साप निकलेगे। जिस दिन इस जीवन से ऊब जायेगे, जाकर खेतो मे लेट जायेगे और सबको साप काट लेगे। घुल-घुल कर मरने से मौत कही अच्छी है।

एक बार पास वाले गाव मे पठानो की एक पार्टी आई। आपस में कुछ कहा-सुनी हो गई। गाववालो ने उनका एक साथी मार दिया। अब क्या था, सब पठान वही धरना देकर बैठ गये। उनके पशु-मार-मार कर खा गये। वहा से उठने का नाम नही लेते थे। कहते थे कि जब तक वे गाव वालो का एक व्यक्ति नही मार लेगे, तब तक नही उठेगे। गाववालो ने बहुत कहा, कि वे सब मुसलमान है। अब जाने दो। परन्तु तीन दिन तक वे लोग वही बैठे रहे। बाद मे सरकारी आदमियो ने आकर उन्हे वहा से हटाया। इसी तरह एक दिन हमारे कैम्प के पहरेदार सिपाही के घर पच्चीस

कबाइली आकर बैठ गये। अन्दर से आटा वगैरह सब निकाल खाया। फिर भी उठने का नाम न लिया। सब घबराये। पुलिस बुलाई गई, वे भी पठान थे। उन्होने आकर कबाइलियो को समझाया कि तुम अपने भाइयो के साथ क्या कर रहे हो। उठो, और अपने घर जाओ वे कहने लगे, कि वे मोर्चे पर लडने जा रहे है। पुलिस के आदमी ने कहा, कि वे पच्चीस आदमी है और उनके पास एक बन्दूक है। वे मोर्चे पर जाकर क्या करेगे ? बहुत डराने-धमकाने पर वे वहा से गये। जोधा कभी-कभी कहता था कि चाहे उसे हत्या ही का पाप लगे, परन्तु जीते जी इन लडकियो को कही नही जाने देगा। जब समय पडेगा, तो इनका गला घोटकर खान्दान की इज्जत बचाएगा। इसपर लडकिया "पहले मेरा" "पहले मेरा" कहने लगती थी। ऐसी भयानक अवस्था थी पर इस अधेरे मे भी प्रकाश की एक किरण थी। कैम्प का इचार्ज ठेकेदार हमारी हर तरह से सहायता करता था। न जाने भगवान् ने उसे कितना नेक बनाया था। वह हरएक के साथ हमदर्दी से पेश आता था। एक मर्तबा एक गाव की हिदू स्त्री कैम्प मे आई। इसका सब परिवार मारा गया था। एक बच्चा बचा था। इस स्त्री ने इस्लाम कबूल कर लिया था। वह और इसका बच्चा दोनो बहुत बीमार थे। इस औरत का पेट बहुत खराब हो गया था। उसे बार बार टट्टी आती थी और बाहर जाने की शक्ति नही थी। ऐसी अवस्था मे कैम्प का इचार्ज ठेकेदार उसका पाखाना खुद उठाता था। मैने उससे कहा, कि यह काम मैं करूगी। मुझे सेवा करने मे शाति मिलती है। परन्तु वह नही माना। सचमुच वह महान् व्यक्ति था। वह राष्ट्र का सच्चा हमदर्द था। उसे अपने धर्म भाइयो के अत्याचारो से सख्त नफरत थी। सारी-सारी रात कुरान-शरीफ पढते मैने उसे देखा है। भगवान् से हमेशा प्रार्थना करता था कि वह इन बेगुनाह अबलाओ की रक्षा करे। इन्हे क्षमा करे। उसकी ऐसी अवस्था देखकर मैने उससे कहा कि जब हम चले जाये, उसके बाद भी वह और लडकियो को अत्याचारियो के पजे से छुडा कर अपने यहा रखे। उसने ऐसा ही किया। हमारे भारत आने के बाद उसने कैम्प मे

कुछ और लडकिया रखी और वे बहुत अच्छी दशा मे भारत पहुची।

क़ैम्प की स्त्रियो को सबसे बडा दु ख तब होता, जब उन्हे कैम्प की सफाई वगैरह का काम करना पडता था ? अक्सर स्त्रिया रोती थी। हाय, हमने कोई काम नही किया, आज ये लोग हमसे काम करा रहे है। जो कल हमारे टुकडो पर पलते थे आज पैरो से धकेल-धकेल कर हुक्म देते है। वे गाली निकालने मे भी सकोच नही करती थी। अक्सर ये सिपाही जब वहा कैप का इचार्ज नही होता था साम्प्रदायिकता के वशीभूत होकर बदतमीजी कर बैठते थे। तब भी मै उन स्त्रियो को समझाती थी। यह दु खी होने की बात नही है। देखो, मै भी खुद झाड़ू लेकर अपने घर के बाहर सफाई करती हू। मै उसे बुरा नही समझती। वे मेरी बात मान लेती थी। हमे पाखाने के लिए खुले खेतो मे जाना पडता था। वहा भय रहता था कि कही पीछे से कबाइली छिपकर न आ जाये। मै जब खेतो मे जाती तो कैम्प का एक कुत्ता मेरे साथ जाता। जब तक मै वहा रहती वह चारो तरफ भौक-भौक कर दौडता रहता था। जब मै लौटती तो साथ लौट आता था। हालाकि मैने कभी उसे रोटी का टुकडा नही दिया था न प्यार ही किया था। पर वह सदा मेरे साथ रहता था। सब कहते, कि देखो, कुत्ता भी माताजी की सहायता करता है। वे सच कहते थे, हैवानो ने समय-समय पर मेरी सहायता की।

इस कैम्प मे एक नवयुवती थी। यह मीरपुर के अच्छे घराने की थी। इसका पति मारा गया था पर ससुर आदि जीवित थे साल भर का बच्चा उसकी गोद मे था। ससुर ने भयसे इस्लाम कबूल कर लिया था वह अक्सर कैम्प मे इसके पास आता था और इसे तग करता था। कहता था कि तुम उसी मुसलमान के पास चली जाओ जिसके सुपुर्द मैने तुम्हे किया था। हिन्दुस्तान जाकर क्या करोगी ? वहा तुम्हारे साथ कोई सीधे मुह बात भी नही करेगा। वह मेरे पास आकर रोती थी। कहती थी, "बहन ! जिस दिन से हमने कैम्प मे भजन-कीर्तन आरम्भ किया है, किसी चीज की इच्छा नही रही है। सब दुनिया एक खेल-तमाशा दिखाई देती है। हमने अपने फर्ज को अच्छी तरह समझ लिया है। परन्तु मै क्या करू ? यह मेरा ससुर मुझे मजबूर कर

रहा है। फिर मुसलमान के घर जाने को कहता है और कहता है, अगर तुम नही गई तो मुझे भी वे लोग मार देगे। असल मे इसने मुझे एक गेहू की बोरी भर अनाज तथा कुछ थोडे रुपयो मे बेचा था।" यह लडकी बडी सुशील थी और बडे प्रेम से भजन-कीर्तन करती थी। काफी अर्से तक मथुरा-वृन्दावन रह चुकी थी। मैने उससे कहा, "ससुर को कह दो कि, चाहे वे उसे मारे या रखे, तुम्हे दु ख नही है, और कि तुम उनके घर नही जाओगी। चाहे हिन्दुस्तान मे कोई अपनाये या न अपनाये।" लडकी ने यही कहा और अन्त मे वह बच गई।

: २६ :

इसे सारी उम्र पाकिस्तान में रखो

एक दिन मीरपुर के कुछ स्थानीय आदमी रात के समय कुछ पुराने कपडे वगैरह लेकर कैम्प देखने आये और कैम्प के इचार्ज से कहने लगे कि यहा उनके मुहल्ले की कुछ हिन्दू स्त्रिया है, वे उनसे मिलेगे। वे सब मुसलमान थे। कैम्प का इचार्ज इन्हे मीरपुर की कुछ औरतो के पास ले गया। इन्होने उन्हे कुछ कपडे और शायद चार-चार, छ-छ आने दिये। वे इन औरतो ने ले लिये। जब आदमी पर विपत्ति आती है तब उसकी बुद्धि सचमुच काम नही करती। इनको यह याद ही नही रहा कि हम इन दुष्टो से पैसे-कपडे किस लिए ले रही है। इन्होने ही हम सबको बरबाद किया है। असल में वे लोग इसी बहाने इन स्त्रियो को पसन्द करने आये थे। कहते थे कि वे इन्हे मोहब्बत से ले जायेगे और अपने यहा रखेगे। जब इन्हे यह मालूम हुआ कि इस कैम्प की कोई भी औरत पाकिस्तान मे नही रहेगी, सब हिन्दुस्तान जायेगी और यह भी मालूम हुआ कि मै इन सबको ये सब बाते समझा रही हू, तो वे आग-बबूला होकर कहने लगे कि क्या अभी काफिरो की स्त्रियो मे इतना गरूर है? इन्होने डी० सी० के पास जाकर कहा कि इस स्त्री को सारी उम्र पाकिस्तान मे रखो। यह बात बडे जोर से कही गई। मुझे कैम्प

के इचार्ज ने ये सब बाते बताई। मैने उससे कहा, "तुम जाकर मेरी ओर से डी० सी० से कह दो कि अगर मेरे यहा रहने से ये सब बहने हिन्दुस्तान चली जाये तो मै सारी उम्र पाकिस्तान मे रहने के लिए तैयार हू। मुझे कोई भय नही है।" वह बोला, "डी० सी० ने उन्हे वही धमका कर कहा था कि वे तुम्हारे बारे मे गलत खयाल कर रहे है। वे तुम्हे भारत जाने से नही रोक सकते।"

फिर इन लोगो ने दूसरी चाल चली। एक दिन गाव मे यह अफवाह फैला दी कि यहा इन काफिरो की स्त्रियो को किस आराम से रखा गया है। रियासत जम्मू मे हमारी मुसलमान बहनो को शेख मुहम्मद अब्दुल्ला ने मोर्चा-खुदाई पर लगाया हुआ है। एक कमीज और निकर उनके तन पर है। अब क्या था। सब गाववाले बिना सोचे-समझे कैम्प इचार्ज के पास आये। वह भी कुछ तेज हो गया और मेरे पास आकर कहने लगा कि वह हम लोगो के लिये यहा क्या कुछ नही कर रहा है। सब इलाका उसका दुश्मन हो रहा है। लेकिन जम्मू मे उनकी बहनो पर बडे जुल्म हो रहे है। मैने उससे कहा, "भाई साहब, मै तो इन बात पर यकीन नही करती। शेख साहब के होते हुए वहा कभी ऐसा नही हो सकता। ये तो कैम्प को बरबाद करने के लिए सब गलत बाते उडा रहे है। इससे तो अच्छा है कि आप हमे एक ही बार खत्म कर दे, ताकि हम भी इन प्रति दिन के कष्टो से छुटकारा पाये।" पर वह भी क्या करता। वह तो सच्चा था, पर गाव के लोग उसे ऐसी-ऐसी बाते बता-बता कर तग करते थे। एक दिन फिर एक काश्मीरी भाई जो इस जिले मे कट्रोल अफसर था, सडा हुआ गेहू और बदबूदार चावल ले आया और कैम्प के इचार्ज को दिखाकर कहने लगा, "तुम रोज हमे तग करते हो कि इन औरतो के लिए अच्छा अनाज वगैरह दो। देखो, जम्मू मे यह कीडेवाला आटा तथा यह सडा हुआ चावल हमारी बहनो को दिया जाता है।" ऐसी ही साम्प्रदायिकता की बाते फला-फैला कर ये इस कैम्प को बरबाद करना चाहते थे। इन बातो से कैम्प मे काफी हलचल मच जाती थी।

एक दिन डी० सी० के सामने एक सिपाही के घर से एक पन्द्रह साल की

लडकी लाई गई। सिपाही ओर इस लडकी का चाचा भी साथ था। वह एक अच्छे खान्दान से ताल्लुक रखता था। पर अब मुसलमान बन गया था। लडकी रोती जाती थी और कहती जाती थी, "मै कैम्प मे नही जाऊगी। वहा हिन्दू स्त्रिया है। मै मुसलमान हू।" इत्तफाक से ओम् वहा था। उसे देखकर डी० सी० ने कहा, "तुम इसे कैम्प मे ले जाओ।" वह और दो-तीन आदमी उसे कैम्प मे ले आये। वह रो-रो कर चिल्ला रही थी। जब वह कैम्प मे आई, किसी हिन्दू स्त्री से छुए तक नही, यही कहती जाये, "चाहे कुछ हो मै हिन्दुस्तान नही जाऊगी। तुम्हारा छुआ हुआ तक नही खाऊगी।" उसे सबने समझाया, परन्तु बेकार। तब कुछ स्त्रिया मेरे पास आई। मैने उसे अपने कमरे मे बुलाया। उसे देख कर मुझे बहुत दुःख हुआ। मैने उससे कहा, "बेटी, तुमने क्या हल्ला मचाया है। अगर तुम जाना नही चाहती, तो दूसरी बात है, परन्तु यह पागलपन छोड कर रोना-धोना बन्द करो। तुम्हे जबरदस्ती कोई नही रखेगा। धीरज धरो, सब सुनो, समझो, फिर जैसा मुनासिब हो, करना। मै तुम्हे कैम्प मे नही रखूगी। तुम मेरे साथ रहो। देखो, यह सब तुम्हारी ही बहने है।" वह मेरे पास रहने को राजी हो गई। मैने उससे कहा, "अपनी बीती सुनाओ। किसकी लडकी हो? मा-बाप कहा है?" वह देखने से खान्दानी तथा सुशील मालूम पड रही थी। उसने अपने मा-बाप का नाम बताया। कहने लगी, "जब हम लोग मीरपुर से भागे तो पिताजी हम से छूट गए। मै और मेरी मा तथा दो छोटे भाई अलीबेग कैम्प मे लाए गए। एक छोटा भाई रास्ते मे एक दौडते हुए ऊट के पावो के नीचे आ गया और तडप-तडप कर मर गया। आपने अलीबेग कैम्प के अत्याचार तो सुने होगे। वहा आजाद काश्मीर वाले स्त्रियो के साथ कैसा सलूक करते थे।" यहा वह कुछ रुकी। उसका शरीर काप रहा था। कुछ सभल कर उसने फिर कहा, "जब हम वहा पहुचे, तो देखा, बचे हुए हिन्दुओ को नहर के किनारे ले जाकर कुल्हाडो से बारी-बारी मारते है। और लडकियो तथा स्त्रियो के साथ बहुत-से अत्याचार करते है। जिसका जी चाहता है वही वहा से किसी भी लडकी या स्त्री को घर ले जाता है या कबाइलियो को सौंप देता

है। बारह-बारह और तेरह-तेरह आने मे लडकिया मुसलमानों ने बेची है। कबाइलियो का तो मोर्चे पर आने-जाने का रास्ता ही अलीबेग कैम्प के बीच से बनाया गया है। आते-जाते वे वही ठहरते है और मनमाने अत्याचार करते है। किसी को कुछ कहने की हिम्मत नही। मुह से कोई कुछ बोला नही कि गोली का शिकार हुआ नही। कभी-कभी थोडा-सा सडा-गला अनाज दे देते है। बहुत से लोग पेचिश से बीमार है। बच्चे भूख से तडप रहे है। वे लोग इतने निर्दयी है कि बीमार आदमी को भी बाहर पाखाने जाने की सहूलियत नही देते। एक दिन एक बूढे आदमी को बहुत पेचिश हो रही थी। वह बाहर जाने के लिये उठा। थोडी दूर गया था कि गिर पडा, बेचारे का पाखाना वहीं निकल गया। तब एक सिपाही ने आकर उससे कहा कि, "अभी भी उसमे मस्ती है।" उसने गिडगिडा कर कहा कि उसके बस की बात नही है। वह अभी साफ किए देता है। परन्तु जालिम ने उसे गोली से मार दिया। स्त्रियों की जो दशा है वह मै कह नही सकती। यह सब जब मेरी मा ने देखा, तो यहा मे एक आदमी को बुला कर कहा। कि मै यह लडकी तुम्हारे सुपुर्द करती हू। तुम इसे अपने घर ले जाओ, ताकि यह इन जुलमो से बच जाय। वही यह सिपाही था। यह मुझे अपने घर ले गया। परन्तु इसकी औरत तथा मा-बाप बिगड गए। यह उनसे अलग हो गया। अब मुझे इसीके पास से लाया गया है।" मैने पूछा, "तुम्हारी मा कहा है?" वह कहने लगी, "उसे वहीं से मीरपुर का एक किसान अपने घर ले गया और अपने साथ निकाह पढने पर मजबूर करने लगा। परन्तु मा ने नही माना। वह जब बहुत तग करने लगा तो एक दिन जब वह कहीं बाहर गया था, मा ने समय पाकर कुछ मिट्टी का तेल, जो वही पडा हुआ था, अपने ऊपर छिडका और आग लगा ली। इतने मे वह आ गया। उसने मा को मरने से बचाया। परन्तु मा की छाती तथा मुह काफी जल गया था। किसान पर इसबात का बहुत असर हुआ और वह उसे कैम्प मे पहुचा आया। मा काफी जख्मी थी। इत्तफाक से एक दिन कुछ ट्रक शरणार्थियो को लिए जम्मू गए। उनमे चुन-चुन कर बूढी जख्मी स्त्रिया भेजी गई। उन्ही मे मा भी चली गई। आजकल वह हिन्दुस्तान मे

है।" यह कहते हुए उसकी आखे डबडबा आई मैंने उसे धीरज देते हुए कहा, "घबराओ नही, जैसा तुम कहोगी, हम वैसा ही करेगी। अगर तुम चाहो तो यही रहो, अगर चाहो तो हमारे साथ भारत जा सकती हो।" वह कहने लगी, "आप लोगो को भारत कौन भेजेगा? यह तो कहने की बात है। हम इसी तरह तडप-तडप कर मर जायेगी या ये लोग हमे पठानो के हाथ सौंप देंगे। इससे तो अच्छा है कि आदमी एक ठिकाने रहे।" मैंने उसे समझाया, "जब कोई काम हम करने लगते है तब उसकीभलाई या बुराईदोनो के लिए हमे तैयार रहना चाहिए। हम सत्य पर रहकर दोनो बातो के लिए तैयार है। अगर हिन्दुस्तान भेजा तो भी, अगर तडपाने को यहा रखा तो भी। हमें देखो, हम निर्भय होकर दिन काट रही है। हम इन धमकियो से नही डरती। जब तक हिम्मत है, किसी की ताकत नही कि हमे अपने कौल से गिराये। तुमने अपने देश की वीर नारियो का इतिहास तो पढा ही होगा। हम भी उन्ही की संतान है। जब वे हसते-हसते सब सहन करती थी, तो क्या हम नही कर सकती? हम कर सकती है। हम अपने आत्म-गौरव पर आच नही आने देगी।" यह सब कुछ सुनकर वह चुपचाप कुछ सोचने लगी। बीस मिनट के पश्चात् उसने मुझे कहा, "मैं तुम्हे अपनी मा के समान समझती हूं। अगर तुम मुझे अपने पास रखो तो मैं भारत जाऊगी।" मैंने उसके सिर पर हाथ फेरा और कहा, "मै तुमसे वादा करती हू, कि अपनी लडकियो से पहले तुम्हारा खयाल रखूगी।" वह मेरे पास रहने लगी। उसके लिये मुझे बहुत-सी कठिनाइया सहनी पडी, परन्तु मैंने उसे हाथ से नही जाने दिया। वह सिपाही जिसके पास वह रहती थी, प्रतिदिन कैम्प मे आकर बैठता था और खत लिख कर भेजता था, "तुम आ जाओ। मेरा साथ मत छोडो। मैंने तुम्हारे लिए सबको छोड दिया है।" वहा के सिपाहियों से कहा करता था, "इसे किसी तरह यहा से भगा दो।" मैं इसे बाहर तक नहीं निकलने देती थी। बहुत-सी बाते हुई। मुझे उसने कहला भेजा, "अगर तुम इसे नहीं छोडोगी तो तुम पर मुसीबत आयेगी। तुम्हारी लडकिया है, उनका ध्यान रखना।" मैंने इन बातो की परवाह नही की।

ईश्वर मेरे साथ था। उसकी सारी चाले व्यर्थ गईं।

एक दिन रात को बीस साल की उम्र की एक और लडकी कैम्प मे लाई गई। बातचीत से मालूम हुआ कि यह जब बारह साल की थी तब इसके पिता राजोरी, रियासत काश्मीर मे पुलिस अफसर थे। उन दिनो मेहता साहब भी वही थे। मै उसे पहचान गई। वह कहने लगी, "मेरे पति को तो उसी दिन खत्म कर दिया था। मै अपने पिता के एक मुसलमान दोस्त के पास थी। उसने मुझे बडी अच्छी तरह रखा। परन्तु एक पुलिस अफसर मुझसे शादी करना चाहता है। मैने प्रण किया है कि चाहे मेरे टुकडे-टुकडे कर दे, पर मै शादी नही करूगी।" यह कहकर वह रोने लगी और कहने लगी, "क्या तुम मुझे बचाने का वचन दोगी? यह वचन दो, जब यहा से जाओगी मुझे साथ ले कर जाओगी, मुझे जालिमो के हाथो से बचाओगी।" मैने उससे कहा, "तुम धीरज रखो? जब तुम अपनी रक्षा के लिए सच्चे दिल से मौत का स्वागत कर रही हो, तब किसकी शक्ति है कि तुम्हे वह धर्म से गिराये। तुम बेफिकर हो।" यह देखने मे बहुत सुन्दर थी। परन्तु विपत्ति ने उसे मसल दिया था। इसकी दोनो आखो के किनारो पर निरन्तर रोते रहने के कारण जख्म हो गए थे। कैम्प मे रहने से इसको कुछ शाति मिली।

कैम्प मे जम्मू का एक मुसलमान भाई प्रतिदिन आता था। इसका सब परिवार जम्मू मे मारा गया था। सिर्फ दो छोटे लडके बचे हुए थे। वे भी जम्मू मे फसे हुए थे। यह अक्सर कैम्प मे आकर घटो व्यतीत करता था। कभी किसी बच्चे को उठाता, कभी किसी बच्चे को कुछ देता। मेरे पास आकर भी बैठता था। मै उसे धीरज देती रहती थी। एक दिन बातो-बातो मे उसने कहा, "बहनजी! तुम भी कभी सुन लोगी कि जम्मू के मुसलमानो ने अपना बदला चुका लिया है।" मैने उसे जवाब दिया था, "बताओ, तुम्हे इससे क्या मिलेगा? देखो, मुझे बदले से कितनी नफरत है। आखिर मै भी तो आदमी हू।" तब वह कहता था, "हम ऐसा नही कर सकते।" कभी-कभी वह बच्चो की याद मे आसू बहाता था। न जाने वे कैम्प मे किस तरह होगे। मैने उससे कहा, "जब मै जम्मू जाऊगी,

तुम्हारे बच्चो से मिलूगी और जहा तक होगा उनकी सहायता करूगी।"*

अलीबेग कैम्प के आसपास रहनेवाले देहातियो ने डी० सी० के पास जाकर बहुत हल्ला-गुल्ला किया कि अलीबेग के कैम्प मे गदगी से बहुत ही दुर्गंध फैली है। बीमारी फैलने का खतरा होगया है। कुछ गाववालो के कहने से और कुछ रेडक्रास वालो के आने की सुनकर अलीबेग कैम्प की तरफ हुकूमत ने ध्यान दिया। चार महीने के बाद उन्हे नहाने का पानी दिया गया और तीन-तीन फुट के गढे खोदकर उनमे उनके सिर के बाल वगैरह दबा दिए गए। कई स्त्रियों तथा लडकियो के भी सिर के सब बाल कटवा दिये। क्योकि एक अजीब किस्म की जुए पड गई थी जो कि टिड्डी की तरह उडती थी। कई स्त्रिया तो डी० सी० की कृपा से हमारे कैम्प मे लाई गई। जिसके साथ हमदर्दी दिखानी होती थी, उसे इस कैम्प मे लाया जाता था। हम तबतक उन्हे बाहर ही रखते थे जबतक उनके कपडे वगैरह नही उबाले जाते थे। उनसे एक अजीब किस्म की दुर्गन्ध आती थी।

एक रोज डी० सी० ने दो-तीन पुरुष सपरिवार हमारे कैम्प मे भेजे। इन्होने इस्लाम कबूल कर लिया था। इनमे से एक डाक्टर थे,† मीरपुर का मशहूर गोकुलशाह नामक व्यक्ति भी इन्ही मे था। इसका एक बीस साल का लडका मार दिया गया था। इसकी स्त्री तथा दो तीन बच्चे थे। वह मुसलमान तो बन गया था, परन्तु वहा के मुसलमान उसे प्रतिदिन पकड़ कर ले जाते थे और बाध कर लाठियो से मारते थे, कहते थे, "बता तूने अपना धन कहा गाड रखा है ?" कहते है, इसने कुछ रुपये कही गाड़े थे, वे निकाल कर इन्हे दे दिये थे। परन्तु अब वे इसका पीछा नही छोड़ते थे। इसकी एक सोलह वर्ष की लड़की थी। इसने उसकी एक सईद से शादी कर दी। लड़की मेट्रिक तक पढ़ी थी और सुशील तथा सुन्दर थी। दो महीने उस लड़के ने उसे रखा। तीसरे महीने उसने कहा कि वह उसे नही रख सकेगा और किसी

*भारत आकर मैंने उनका पता लिया था, परन्तु मालूम हुआ कि कुछ दिन पहले वे पाकिस्तान भेज दिए गए है।

†ये आजकल दिल्ली मे है।

को सौंप देगा। लड़की ने कहा कि वह अब उसी की है। हिन्दू बालिका की शादी एक बार होती है, उसी को वह अपना सब कुछ समझती है। वह फौज मे था। उस लड़की ने उससे बन्दूक चलानी सीख ली थी। उसकी पहली स्त्री भी थी। एक दिन मौका पाकर इस लड़की ने दरवाजा बन्द करके बन्दूक हाथ मे ली और बैठ कर अपने माथे पर वार कर लिया। गोली लगते ही उसके सिर की खोपड़ी फट गई। जब वह घर आया, दरवाजा खटखटाया। कोई नही बोला, तो किवाड़ तोड़ कर अन्दर आया। वहा लाश देखी तो उठाकर यह कहते हुए बाहर फेंक दी, "काफिर लड़की तुम्हारा यही होना था।" इस घटना की गाव मे बड़ी चर्चा हुई। उसके यहा गाववालो ने खाना-पीना तक बन्द कर दिया।

तभी सुना गया कि हमारी फौजे आगे बढ रही है। सारे कैम्प मे घबराहट फैल गई। डर लगा, भागते हुए पाकिस्तानी और कबाइली यहा आयेगे और सब को कत्ल कर देगे। मैंने स्त्रियो को समझाया, "तुम्हे खुश होना चाहिये। हमारी फौजे आगे बढ रही है। हा, एक अफसोस जरूर है कि यहा घास-लकड़ी नही मिलेगी, नही तो उनके यहा पहुचने तक हम जौहर की रस्म अदा करती।"

एक दिन डी० सी० का भतीजा आया और मुझसे बोला, "आज हिन्दुस्तान ने अपना बापू अपने हाथो मार डाला। अब तुम्हारे हिन्द का रखवाला खुदा ही है। बुरे दिन दिखाई दे रहे है," यह मनहूस समाचार सुनकर किसी को सुधबुध नही रही। सारे कैम्प मे हाहाकार मच गया। "हाय बापू! तुम भी इस आपत्काल मे हमे छोड़ गये। तुम्हारी ही आशा पर तो हम यहा बैठी हुई थीं", यह कहकर सब विलाप करने लगी।

इन दिनो पाकिस्तान के गुप्तचर स्थान-स्थान पर फिरकर लोगो से कह रहे थे, "देखो, काफिर आगे बढ रहे है। अगर तुम्हारे गाव मे पहुचे, भागना नही, चप्पे-चप्पे पर मुकाबला करना।" इससे यही जान पड़ता था कि भारतीय फौजे जोरो से आगे बढ रही थी। इन्ही दिनो दो विदेशी बहने तथा एक विदेशी भाई रेडक्रास की सोसाइटी की ओर से कैम्प देखने

आये थे। कटपीसो की एक-दो पेटिया, साबुन और दूध वगैरह साथ लाये थे। अक्सर वे मेरे कमरे मे आकर बैठते थे। कटपीस की पेटिया उन्होने मेरे सुपुर्द की। मैने सब बहनो को बुलाकर दो दिन मे उन चार-चार गिरह के टुकडो को जोडकर कपडे सिये। उन्होने लेकर कैम्प मे बाट दिये। इनके आने से कुछ भरोसा हुआ। तभी पाकिस्तान का शरणार्थी मिनिस्टर गजनफर अली खान दो साथियो के साथ वहा आया। कैम्प कमाडेट के साथ मेरे कमरे मे भी वह आया। और आते ही एक अनजान व्यक्ति की तरह मुझे पूछने लगा, "क्या इस कैम्प मे सिर्फ औरते ही है ? तुम्हारे पति कहा है ?" मैने कहा, "माफ करे, क्या आपको अभी तक यह भी नही मालूम ?" यह सुनकर वह झेपा। मैने कहा, "वे तो शहीद हो गये। पर अभी तक यह खून की होली चल रही है। न जाने यहा की बेगुनाह स्त्रियो का कब छुटकारा होगा।" कैम्प का इचार्ज कहने लगा, "देखिये आजाद काश्मीर की फौज के कर्नल वगैरह यहा लडकिया लेने आते है, परन्तु मै अपने जीते जी यह जुल्म नही होने दूगा। मै दुनिया को बता दूगा कि सच्चा इस्लाम क्या है और क्या कहता है। " गजनफर अली बोला, "हम जल्दी ही तुम सबको हिन्दुस्तान भिजवाने की कोशिश कर रहे है।"

उसके बाद एक दिन डी० सी० ने मुझसे कहा, "तुम्हे तो भेज देते है। बाकी कैम्प अभी यही रहेगा। अभी हमारी बहुत-सी बहने हिन्दुओ के घरो मे है।" मैने उससे कहा, "मै इन्हे वचन दे चुकी हू, कि मै इन्हे साथ ले जाऊगी। मै आपसे वादा करती हू कि जम्मू-काश्मीर मे जाकर हिन्दुओ के यहा से अपनी बहिने निकलवाऊगी।"*

: २७ :

भारत माता की जय

आखिर एक दिन डी० सी० ने कहला भेजा, "तैयार रहो, शाम को जाना है।" सबके मन खिल उठे पर फिर भी यह चिन्ता थी कि न जाने

---

*जब मै भारत आई तो अपने वचन को पूरा करने के लिए काश्मीर गई, परन्तु वहा कही किसी के पास मुसलमान बहन नही पाई।

रास्ते मे क्या होगा। उसपर वे लोग डाक्टर साहब तथा और दो-तीन दूसरे व्यक्तियो को नही भेज रहे थे। कहते थे कि जब ये मुसलमान बन गये है तो क्यो जा रहे है ? कैम्प के इन्चार्ज को मैने डी० सी० के पास भेजा। आखिर वह मान गया। सबकी गुप्त रूप से तैयारी होने लगी। कैम्प के इन्चार्ज ने मुझसे आकर कहा, "तुम यहा की सब स्त्रियो को ले जा रही हो। अच्छा है। पर सुना है जो लडकी तुम्हारे पास है तथा दूसरी, जिसे पुलिस का अफसर रखना चाहता है, इन्हे रास्ते मे उडाने की साजिश हो रही है।" बडी मुश्किल आई। मैने उन दोनो के सिर के बाल खुलवा कर उनका अजीब-सा लिबास बनाया। गरम फटे हुए कबल ओढाये। कमर झुका कर चलने को कहा। सायकाल को सब लोग निकले। उन लडकियो को लेने के लिए सिपाही आया हुआ था। और भी बहुत स पाकिस्तान की फोज के सिपाही थे। उसने सबको कहा, "देख देखकर स्त्रियो को जाने देना।" वे सबको देख देखकर आगे भेजने लगे। जो आगे निकल जाती, उसे डाट कर रोकते थे। उन लडकियो को मैने बीच मे रखा था। कभी उनके आगे रहती थी, कभी पीछे। वे दोनो काप रही थी। प्रभु की कृपा से वे अधेरे मे पहचानी नही गई। हमे करीबन एक मील पैदल चलना था। आगे ट्रक थे। पाकिस्तान का कैम्प कमाण्डर भी वहा तक साथ आया था और डी० सी० ने मेरे पास कट्रोल अफसर को भेजा था कि उन्हे अच्छी तरह बैठा देना। बहुत से ट्रक लाइनवार खडे थे। रेडक्रास की वे विदेशी बहने तथा साहब भी थे। उनकी कार साथ थी, जिससे सबको बडा सहारा मिला। रास्ता आराम से कटने की आशा बधी। सब स्त्रिया मेरे आगे-पीछे थी और कहती थी, कि मै उनके साथ बैठू। मैने उन्हे समझाया कि सबके साथ कैसे बैठ सकती हू ? तुम निर्भय होकर बैठो। मैने सबकी गिनती करके ट्रक पर चढवाया। स्त्री-बच्चे-पुरुष सब मिला कर लगभग एक सौ अस्सी थे। सब के पीछेवाली ट्रक पर मै बैठी। सब बच्चे तथा वे दोनो लडकिया जिन्हे मै मुश्किल से लाई थी, मेरे साथ थे। ट्रक चलानेवाले सब पठान ड्राइवर थे। इनके साथ कुछ फौजी सिपाही भी थे। ये लोग हमे कुछ ऐसी नज़र से

घूर-घूर कर देख रहे थे कि भय मालूम होता था। न जाने कब क्या हो जाए। हमारी ट्रक दस कदम चलकर रुकी तो उस पर दो आदमी चढ गये। एक तो किसान दिखाई देता था, दूसरा वर्दीपोश सिपाही था। उस लडकी ने, जो मेरे पास बैठी थी, मुझसे कहा, "बचाइये, वह आ पहुचा।" जब वह ट्रक पर सवार हुए तो ट्रक चल पडी। अब वह किसान स्त्रियो को तग करने लगा। कभी एक को धक्का दे, कभी दूसरी को। स्त्रिया चिल्लाने लगी और मुझसे कहने लगी, कि इसीलिए हम कहती थी कि नही जायेगी। मैंने सब से कहा, "देने दो धक्का, अभी ट्रक रुकवा कर हम पूछते है कि यह कौन यहा बिना मतलब चढ गया।" यह सुनकर वह उठा ओर ड्राइवर के पास जाकर बैठ गया। मन मे बडा भय लग रहा था। कही यह इस लडकी को ले तो नही जायगा। मैं इसे कैसे बचाऊगी ? टेढी जगह है, एकदम ट्रक से उतार कर ले जायेंगे, हमसे कुछ करते नही बनेगा। वह सिपाही मुझसे कहने लगा, "आप जानती है कि इस लडकी के लिए मुझे कितनी दिक्कते उठानी पडी है। मेरे घर के सब अलग हो गये है।" मैंने कहा, "मै सब सुन चुकी हू। तुमने इसे बचाया है। तुम्हारे जैसे वीर भाई अगर सब होते तो कितनी लडकिया आज बच जाती। मै तुम्हे बहुत-बहुत धन्यवाद देती हू। भगवान् तुम्हरे सहायक होगे। वही तुम्हे इस नेक काम का फल देगे। तुम्हारी वजह से यह लडकी भारत जा रही है।" ऐसी उल्टी सुनकर वह हेरान हो गया और कहने लगा, "यह आप क्या कह रही है ?" मैंने कहा, "मै सच कह रही हू। भगवान् अच्छे-बुरे सब काम देखता है।" उसने कहा, "अच्छा, आप इसे अच्छी तरह ले जाइये और इसकी मा के सिपुर्द कर दीजिये।" मै चकित रह गई कि जरा-सी देर मे उसकी बुद्धि कैसे ठिकाने आ गई थी। एक जगह ट्रक रुकी। वह उतर गया। असल मे इसने ही उस बदमाश किसान को चढाया था कि वह जरा हल्ला-गुल्ला मचाए तो शायद वह डरकर साथ आ जाये। हमारी ट्रके सराय आलमगीर पहुची। वहा सबको उतार, एक ट्रेन पर बिठा दिया गया। उसमे अलीबेग कैम्प के शरणार्थी भी थे। सब ट्रेन पर चढ गये। पर मै आगे ही बढी जा रही थी, ट्रेन पर

चढते भय मालूम हो रहा था। एक डिब्ब मे कुछ सिपाही थे। हमे देखकर कहने लगे, "इस डिब्बे मे बैठिये।" परन्तु प्रभु हर समय सहायक होते थे। मैं आगे चली गई ओर बीचवाले डिब्बे मे चढी। मै, वे दोनो लडकिया, श्रीमती मोदी और सब बच्चे एक साथ थे। सिर्फ दोनो नौकर और मेरा लडका सुरेश छूट गया। वे कही ओर बैठ गये होगे यह सोच कर हम चुप हो गये। डिब्बे मे बहुत भीड थी। जैसे-तैसे भीतर घुसे। रात का समय था किसी ने दियासलाई जलाकर कुछ रोशनी की। देखा कि अलीबेग कैम्प के कुछ पुरुष, औरते तथा बच्चे है। सब औरतो को बडी मुश्किल से बैठाया। पर मुझे बैठने के लिये जगह न मिली, मै खडी रही। जिस लडकी को मै लाई थी उसका चाचा मिला। मैने उसे उसके सुपुर्द कर दिया। वह बहुत धन्यवाद देने लगा। हमे सारी रात इस अधेरी ट्रेन मे काटनी थी। चार बजे सवेरे उसे हिन्दुस्तान रवाना होना था। भय से किसी के मुह से आवाज तक नही निकल रही थी। दुर्गन्ध इतनी थी कि सास लेना मुश्किल था।

कोई तीन बजे का समय था। चाद की थोडी-थोडी रोशनी भीतर आ रही थी। एक वर्दीपोश पाकिस्तानी सिपाही गाडी मे चढा। जहा सामान की सीट होती है वहा हमारे कैम्प की एक स्त्री बैठी हुई थी। एक जागीरदार का परिवार हमारे कैम्प मे रहता था। वह उस परिवार की थी। यह वहा से अच्छी तरह आई थी। इसके साथ ही मेरी लडकी शीला बैठी हुई थी। वह सिपाही उसका बाजू पकड कर खीचने लगा। उसके पास बच्चा था। उसने कहा, "मै बच्चा छोड कर आती हू।" उसने नीचे छलाग लगाई और सीट के नीचे छिप गई। शीला ने मेरे ऊपर छलाग लगाई। मै उसे लेकर वहा आई जहा बाकी लडकिया बैठी थी। अभी मै खडी ही थी कि सिपाही ने मेरा बाजू जोर से पकडा। मैने सीट पर बैठते हुए मुड कर देखा, उसने सगीन निकाल कर मेरी पसली पर रखी। सब बच्चे देख रहे थे। वह कहने लगा, "बता तूने उसे कहा छिपाया? नही तो मै सगीन अभी भोकता हू।" जैसे बिजली कौधी। मैने पुकारा, "भगवान् यह क्या। जीती हुई बाजी हार रही हू।" सामने वह स्त्री सीट के नीचे

छिपी हुई थी। एक निगाह उसकी ओर थी, दूसरी बच्चो की ओर। एक विचार तडपा-नही, कोई साथ नही देगा। इसे बचाना ही होगा। मैंने कहा, "भौक दे। मै चाहती हू कि इस दुनिया से मेरा छुटकारा हो जाय।" "क्या तू चाहती है कि तेरा इस दुनिया से छुटकारा हो जाय ?" यह कहकर उसने सगीन उठा ली और जिस ओर लडकिया बैठी हुई थी उस तरफ गया और कहने लगा, "ये कौन लडकिया बैठी हुई है ? वह लडकी नही मिली तो इनमे से एक ले जाऊगा।" यहा बहुत-सी लडकिया इकट्ठी बैठी थी। वहा पर बैठे हुए पुरुष आवाज लगा कर उस स्त्री से कहने लगे, "निकल कर चली जा, बच जायगी।" जब उसने मुझसे पूछा, "ये लडकिया कौन है ?" तो मेरे मुह से अचानक निकला, "ये मेरी बच्चिया है।" वह कहने लगा, "सब" ? और वहा से मुडा। पर तभी उसकी नजर सीट के नीचे उस स्त्री पर पड गई। उसने उसे निकाला और कहने लगा, "तुमने मुझे धोका दिया है। मै तुम्हे इसकी सजा दूगा।" वह कहने लगी "वीरजी (भाई) मुझे माफ करो।" इतने मे उस स्त्री की मा ने खिड़की से बाहर देखा और चिल्ला कर आवाज दी। सवेरा हो गया था। वह भाग गया। मै तो समझती हू कि यह भगवान् ने मेरी परीक्षा ली थी। पर कुछ भी हुआ; प्रभु ने मेरा प्रण निभाया। और हम सब सकुशल अमृतसर आ पहुचे।

: २८ :

पंडित जवाहरलाल से मुलाकात

गाडी अमृतसर पहुंची। स्टेशन पर खाने पीने का बहुत अच्छा प्रबन्ध था। बहुत से भाई बहिन मदद के लिए आये हुए थे। हमारी गाडी रुकी, सब लोग उतरे। यहा पहुच कर अपने आपको हम आजाद देख रहे थे, बहुत से लोगो के सबधी वहा आये हुए थे। इन लोगो का मिलाप हृदय विदारक था। कोई धन को रो रहा था, कोई जन को। सबको खाना दिया गया। सब कई दिन से भूखे प्यासे थे। सबने लिया।

उनमे कई लखपति भी थे। लेकिन प्लेटफार्म पर भिखारियो की तरह खाना लेते हुए उन्हे कुछ भी दुख नही हुआ। होता भी क्यो, अब तो वे भारत माता की गोद मे थे, जहा प्यार ही प्यार है।

मै और मेरे सब साथी एक कोने मे खडे थे। समझ मे नही आरहा था कि क्या करे। भूख थी लेकिन हाथ आगे नही बढ रहा था। देखते देखते सबने खाना खा लिया लेकिन हम लोग खडे ही रहे। इतने मे एक बहन मेरे पास आई और कहने लगी, "बहन! तुम लोग यहा क्यो खडे हो? कृपा कर सब बातो को भूलकर खाना खाओ। तुम लोगो को यहा नहीं रहना है, कुरुक्षेत्र जाना है।" मेरा लडका सुरेश कुछ घबराया हुआ था। उसकी आखो से आसू बह रहे थे। वह भारत मे अपने आपको इस दशा मे नही देखना चाहता था। जब मैने उसे समझाया तो वह कहने लगा, "तुम तो कहती थी कि भारत पहुच कर तुम अपने आपको बदला हुआ पाओगे। पर यहा भी कोई अपना नही है।" मै उसकी वेदना को जानती थी, लेकिन मेरे पास उसका कोई समाधान न था। वह बहन कुछ खाने का सामान ले आई। हम सबने थोडा थोडा खाया और फिर कुरुक्षेत्र जाने के लिए गाडी पर सवार होने चले। कुछ लोग अमृतसर मे ही रह गये। उन्हे अपने सगे-सबधी मिल गये थे। मै भी कुरुक्षेत्र नही जाना चाहती थी। मैने एक शरणार्थी अधिकारी से कहा, "मै कुछ दिन यहा रहना चाहती हू। क्या आप हमारे लिए कुछ प्रबन्ध कर सकते है?" उसने जवाब दिया, "कश्मीर के शरणार्थियो का प्रबन्ध कुरुक्षेत्र मे किया गया है। आप यहा न रहे।" उसी समय एक प्रौढ महिला मेरे पास आई। उसने अत्यन्त स्नेह से मुझसे पूछा, "आप कहा जाना चाहती है? क्या आप मुझे अपना कुछ परिचय दे सकती है?" मैने उसे अपना परिचय दिया। उसने अपना नाम बीबी सन्तकौर बताया और मुझसे कहने लगी, "आप सब मेरे साथ चले। मै कैम्प में सारी व्यवस्था कर दूगी और सरकार पर भी जोर डालूगी कि जबतक आप यहा रहे, वह आपके रहने का प्रबन्ध करे। अगर ऐसा न हो सका तो मै स्वय अपने पास से खर्च करूगी।"

इस कैम्प मे सरकार की ओर से उन लडकियो और महिलाओ का प्रबन्ध होता था जो लोगो के घरो से प्राप्त की जारही थी। इसलिए बीबी सन्तकौर को हमे वहा ठहराने और खर्च इत्यादि के लिए जिम्मेदार अधिकारियो से पूछना जरूरी था।

मैंने सोचा ठीक है कुछ दिन यहा इनके पास रहूगी। मैंने अपने साथवाली कैम्प की वहिनो से आज्ञा ली और बीबी सन्तकौर हमे अपने कैम्प मे ले आई। अपने कमरे के साथ हमे कमरा दिया और हमारे आराम की सारी व्यवस्था की। यह हमारे नये जीवन की पहली मजिल थी। हमने रात आराम से काटी। दूसरे दिन वारह बजे ब्रिगेडियर महेन्द्रसिंह चोपडा और उनकी धर्मपत्नी पधारे। वह सब बच्चो के लिए कपडे आदि लाये थे। उन्होने मुझसे सब हाल पूछा और कहा, "बहन! जहा तक होगा मै आपकी सहायता करूगा। आप कुछ दिन यहा रहे। मै अपना एक आदमी आपके पास भेजूगा। आप उसे अपनी सब बाते लिखवा दे। वह मै काश्मीर के प्रधान मत्री के पास भिजवा दूगा ताकि आपका कुछ प्रवन्ध हो सके।" मैंने कहा, "मै अभी पडित जवाहरलाल नेहरू के पास दिल्ली जाना चाहती हू। उसके बाद कुछ तय करूगी।" उन्होने मुझे अपना लाया हुआ सामान स्वीकार करने पर विवश किया। हमे जरूरत भी थी। लेकिन फिर भी दिल दुखी हो रहा था।

इस कैम्प मे मुझे थोडा बहुत काम करने को मिल गया। घटो बैठकर कैम्प की बहनो को समझाती रहती थी। उन पर अच्छा प्रभाव पडता था। सरकार की तरफ से पाकिस्तान के मुसलमान घरो से निकाली गई हिन्दू बहने यहा लाई जाती थी। उन्हे यहा नये कपडे आदि पहना कर जालन्धर के कैम्प मे भेजा जाता था। कई बार मै भी उन्हे वहा पहुचाने गई। दिल मे काम करने की बडी लगन थी। लेकिन परेशानी के कारण शरीर काफी निर्बल हो गया था। ज्यादा परिश्रम न हो पाता था।

अमृतसर मे मैंने समाचारपत्रो को एक बयान दिया। इससे मेरे रिश्ते-दारो को मालूम हो गया कि मै अमृतसर पहुच गई हूँ। उन्होने अपने

परिचित लोगो को तार दे दिये कि मेरी कुछ सहायता करे। कुछ लोग मुझसे मिलने आये और मदद करने की इच्छा प्रकट की। लेकिन मैंने मुनासिब नही समझा। उन्होने बताया कि किश्तवाड मे (जहा की मैं रहनेवाली हू) कोई गडबड नही हुई। हिन्दू-मुसलमान बडी मुहब्बत से रह रहे हैं। लेकिन उसके पडौसी इलाके भद्रवा मे कुछ गडबड हो गई थी जिसकी वजह से मेरा बहनोई मारा गया। यह खबर मेरे लिए चिन्ताजनक थी। मेरी बहन लक्ष्मी, जो कुछ बीमार रहती थी,कैसे अपने तीन बच्चो को लेकर जीवन की यह दुखभरी मजिल पार करेगी, यह सब बाते मेरे दिमाग मे चक्कर काटने लगी।

मेरे जेठ का तार होशियारपुर के उनके एक मित्र को मिला कि हमे खर्च के लिए कुछ रुपया दिया जाय और रहने का प्रबन्ध किया जाय। उनके वह मित्र मेरे पास आये और बच्चो के लिए कुछ रुपये दिये। उन्होने बताया कि मेरे जेठ अभी किश्तवाड से नही आ सकते क्योकि रास्ते मे कुछ गडबड है। तबतक हम आपके रहने वगैरा का प्रबन्ध करेंगे। मैंने उनके साथ जाने से इन्कार कर दिया। उन्ही दिनो श्रीमती मोदी का लडका मा को लेने जम्मू से आया। उनका मिलाप बडा हृदयविदारक था। श्रीमती मोदी के दो बच्चे श्रीनगर मे पढते थे। एक छुट्टियो मे उनके पास मुज़फ्फराबाद आया हुआ था जिसके बारे मे मै पहले लिख चुकी हू। श्रीमती मोदी ने मुझसे कहा, "तुम भी जम्मू चलो। यहा क्या करोगी।" मैंने उससे कहा, "मै देश सेवा करने की प्रतीज्ञा कर चुकी हू। जबतक यह सब प्रबन्ध नही होगा मै यही रहूगी।" कमला को श्रीमती मोदी अपने साथ ले गई।

धीरे धीरे यहा रहते हुए हमे एक हफ्ते से ज्यादा हो गया। शरीर मे कुछ कुछ ताकत आगई। एक दिन मैंने बीबी सन्तकौर से कहा, 'अब मै दिल्ली जाऊगी।' वह मुझे मिस मृदुला सारा बाई के सेक्रेटरी श्री कालीप्रसाद के पास ले गई। वे उनकी तरफ से अमृतसर मे शरणार्थियो की देखभाल करते थे। उनका बर्ताव सबके साथ सहानुभूतिपूर्ण था और

यथासभव वे सबकी सहायता करते थे। मैंने उनसे दिल्ली जाने की इच्छा प्रकट की। वे बोले, "ठीक है जाओ लेकिन तुम वहा किसी को नही जानती। छोटे छोटे बच्चे लेकर वहा कैसे रहोगी।" मैंने कहा, "आप चिन्ता न करे। अवतक कौन साथ था? जिसने अवतक रक्षा की है वही आगे भी प्रबन्ध करेगा।"

दूसरे दिन प्रात काल हम जाने को तैयार हो गये। वीवी सन्तकौर और श्री कालीप्रसादजी हमारे साथ स्टेशन पर आये। भगवान की करनी, स्टेशन पर पहुचते ही सव लोग दिल्ली के वदले कुरुक्षेत्र जाने पर मजबूर करने लगे। उनकी इच्छा थी कि कुछ दिन मै कुरुक्षेत्र मे रहू और वहा से दिल्ली जाऊ। वीवी सन्तकौर ने कुरुक्षेत्र के कैम्प-कमान्डर के नाम एक पत्र भी लिख दिया। पाच वजे वन्नू और सीमाप्रान्त के शरणार्थियो की गाडी आ रही थी। उसी मे हमारा जाना तय हुआ। निश्चित समय पर उस गाडी से हम कुरुक्षेत्र के लिए रवाना हुए। वडी भीड थी। सवेरे कुरुक्षेत्र पहुचे। वहा सडको पर शरणार्थी ही शरणार्थी दिखाई दे रहे थे। मै सोच रही थी कि कहा जाऊ। इतने मे रेलवे का एक कर्मचारी वहा से गुजरा। हमे देखकर वह रुका। कहने लगा, "आप कहा जाना चाहती है?' मैंने कहा, "मै यहा के कैप कमान्डर से मिलना चाहती हूं।" उसने जवाव दिया, "आप सव मेरे साथ चलिये, मेरे घर पर ठहरिये। मै आपके नौकर को उसका दफ्तर वता दूगा।" हम उसके घर गये। उसकी पत्नी ने वच्चो के लिए चाय आदि वनाई। तवतक ओम दफ्तर देख आया। मैंने वीवी सन्तकौर का पत्र उसे दिया और वह उसे लेकर कैम्प कमान्डर के पास गया। उन्होने खत पढकर ओम से मेरी वावत पूछा और मुझसे मिलना चाहा। मै गई। कैप कमान्डर कर्नल पुरी से मिलकर मुझे खुशी हुई। उन्होने ध्यान से मेरी वात सुनी और कहा, "वहनजी! आप मेरी अतिथि है। जहा मै रहता हू वहा मैंने अपने अतिथियो के लिए तम्बू लगवाये है। वही आप ठहरे।" उसने अपने घर पर फोन किया। उसकी पत्नी आई और मुझे और बच्चोको अपनी मोटर मे ले गई। हम वडे

आराम से वहा रहने लगे। कर्नल पुरी की पत्नी और दो लडकिया दिन भर शरणार्थियो के कैप मे काम करती थी। उन्होने उनकी देखभाल के लिए एक केन्द्र भी खोला था। अपने हाथ से वे उनमे कपडे बाटती थी।

एक दिन कर्नल पुरी ने मुझे सब कैप दिखाये। उन दिनो वहा लगभग ढाई लाख शरणार्थी थे। मैने कर्नल पुरी से कहा कि जब तक मै यहा हू, कुछ काम मुझे भी दो। श्री पुरी ने मुझे थोडा काम सौपा। हर रोज मै कैप जाती थी। वहा मुझे श्री चमनलाल और श्री शिवदयाल भी मिले। अपने साथ के दुखी भाई-बहनो की सेवा करने का मुझे यहा अच्छा अवसर मिला।

जब कुरुक्षेत्र मे रहते मुझे लगभग दो हफ्ते हो गये तब एक दिन मैने कर्नल पुरी से कहा, "मै दिल्ली जाना चाहती हू। मैने पाकिस्तान मे ही यह निश्चय किया था कि मै पडित जवाहरलालनेहरू के दर्शन करने दिल्ली जाऊगी।" कर्नल पुरी ने कहा, "आपका ऐसे जाना मुझे पसद नही है। आप एक प्रार्थना पत्र लिखिये। उसमे पडितजी से मिलने का समय मागिये। मै वह प्रार्थना पत्र दिल्ली भिजवा दूगा।" मैने ऐसा ही किया।

एक दिन कर्नल पुरी ने मुझसे कहा, "श्रीमती मेहता! दिल्ली से फोन आया है कि पडितजी यहा आ रहे है। आपको उन्होने दो बजे दोपहर को मिलने का समय दिया है।"

पडितजी जब आये तब निश्चित समय पर मै उनसे मिलने गई। वह एक सोफे पर बैठे हुए थे। मै सामने गई। एकदम मेरा सिर उनके आगे झुक गया। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मै एक महापुरुष के सामने खडी हू। रह रह कर मेरे दिल मे यह आवाज़ उठती थी कि यहा न्याय है। यहा शाति है। क्षण भर मे बीते हुए छ महीने की सब बाते मेरे दिमाग से फिर गई। मैने जैसे तैसे अपने आपको सभाला। इतने मे एक मीठी लेकिन हिम्मत देनेवाली आवाज़ मेरे कान मे पडी, 'बैठो और अपना हाल सुनाओ।'

मैंने अपना संक्षिप्त-सा परिचय दिया और कहा कि मैं अपना शेष जीवन देश सेवा मे लगाना चाहती हू। रहे बच्चे, उनके लिये जैसा आप अच्छा समझे करे। मैं सब कुछ आप पर छोड़ती हू। पंडितजी ने बच्चो को देखने की इच्छा प्रकट की। मैंने कहा, "कर्नल पुरी के यहा आप चाय पर आरहे हैं, वही दिखा दूगी।" पंडितजी ने कर्नल पुरी से बच्चो के बारे मे पूछा। चार बजे पंडितजी कर्नल पुरी के यहा आये। मैं भी बच्चो को साथ लेकर गई। पंडितजी ने बारी बारी से बच्चो से पूछा, 'तुम क्या चाहते हो ?' उन्होने कहा, 'पहले शिक्षा और बाद मे देश-सेवा।' पंडितजी ने मुझसे कहा, 'तुम मेरे साथ दिल्ली चलो। वहा बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध करके फिर आकर उन्हे ले जाना।' मैं पंडितजी ही की मोटर मे बैठी। रास्ते भर उन्हे अपनी आप बीती सुनाई। पंडितजी के घर पर पहुंची। उस समय वहां श्रीमती कृष्णा हठीसिंह (पंडितजी की बहन) थी। उन्होने बड़े प्रेम से ठहरने का प्रबन्ध किया। सब लोग कही खाने पर जा रहे थे। मैं उस कमरे मे चली गई जहा मेरे रहने की व्यवस्था थी। मेरे लिए इस घर की सब बाते नई थी। रात के दस बजे पंडितजी दावत से लौटे और मेरे कमरे मे आये। मैंने उठकर उनका स्वागत किया। पंडितजी कहने लगे, "कृष्णा! तुम मेरी बहन हो। तुम अपने आपको नेहरू परिवार से अलग न समझना। तुम्हे कही जाने की जरूरत नही है। रही बच्चों की पढ़ाई सो उसका मैं खुद प्रबन्ध कर लूगा।" बहन का शब्द मेरे लिए बहुत था। मैं अपने आपको इस योग्य नही समझती थी। जिस खान्दान ने अपने देश के लिये इतनी बडी बडी कुर्बानियां की हैं, इतने ऊचे ऊचे काम किये हैं, उनमे अपने आपको शामिल करना एक जिम्मेदारी का काम था। मैंने पंडित जी को जवाब दिया, 'मैं अपने आपको इस योग्य नही समझती कि आपकी बहन कहलाऊ।'

एक हफ्ता मैं वही रही। बाद मे कुरुक्षेत्र जाकर सब बच्चो और ओम को लेकर दिल्ली लौटी। हम सब पंडितजी की कोठी पर रहे। हमारी देखभाल बहुत अच्छी तरह होती थी। श्रीमती इन्दिरा गाँधी